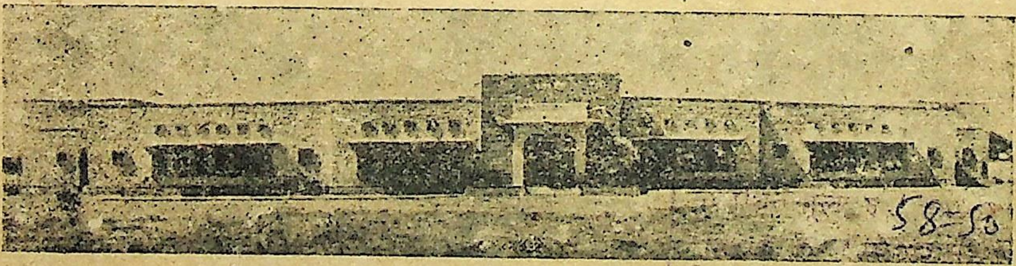
राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान-सम्पादक
डा० पद्मधर पाठक
[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क १४४

राजस्थानी हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची
भाग ८
(चितौड़गढ़-संग्रह)

सम्पादक
डॉ० डी. बी. क्षीरसागर
ब्रजेश कुमार सिंह



प्रकाशक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राज.)
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur.

1983

प्रथमावृत्ति 250 मूल्य : रु. 58.50

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान-सम्पादक
डा० पद्मधर पाठक
[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क १४४

राजस्थानी हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची
भाग ८
(चितौड़गढ़-संग्रह)

सम्पादक
डॉ० डी. बी. क्षीरसागर
ब्रजेश कुमार सिंह



प्रकाशक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राज.)
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur.

1983

प्रथमावृत्ति 250 मूल्य : रु. 58.50

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थान प्रदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषा-निबद्ध
विविध वाङ्मय प्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

प्रधान-सम्पादक
डा० पद्मधर पाठक

ग्रन्थाङ्क १४४

सम्पादक
डॉ० डी. बी. क्षीरसागर
ब्रजेश कुमार सिंह

प्रकाशक
राजस्थान राज्य संस्थापित
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राज.)

मुद्रक
पंकज प्रिन्टर्स, जोधपुर

वि सं. 2040 * ई. सन् 1983

अनुक्रम

प्रधान सम्पादकीय

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के पूर्व प्रकाशित सूचीपत्रों के क्रम में चित्तौड़गढ़ शाखा में संगृहीत हिन्दी राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथों का द्वितीय सूचीपत्र विद्वद्जगत् के सम्मुख प्रस्तुत है।

प्रस्तुत सूचीपत्र में ग्रन्थाङ्क 3507-5426 के अन्तर्गत समाविष्ट 2137 ग्रन्थों के संक्षिप्त विवरण को संकलित किया गया है जिसमें सर्वश्री मुनि कान्तिसागर, मगनश्री, छगनश्री तथा बी.आर. चौधरी द्वारा भेंट प्राप्त ग्रन्थों का समावेश हो जाता है।

समाविष्ट ग्रन्थों में से रूपचन्द कृत परमार्थदोहाशतक (64) व जगन्नाथ कृत रामायण भाषा (83) जहां भक्ति-साहित्य के अध्येताओं के लिए नवीन है वहीं इतिहास की दृष्टि से ऐतिहासिक नगरों का वृत्तान्त (31) व साहिब गज़ल (166) महत्वपूर्ण है।

कुछ ग्रन्थ यथा अयवन्ती सुकुमाल चउपई (415) आर्द्रकुमाररास (426) तथा शत्रुञ्जयरास (624) की प्रतियां रचनाकाल के निकटस्थ समय की है; अतः संपादन के लिए इन्हें सर्वोत्तम माना जा सकता है। इस प्रकार के उदाहरण में कमलहर्ष कृत दशवैकालिक गीत (1095) की पाण्डुलिपि, रचना काल के वर्ष में ही प्रतिलिपि की गई है।

मध्यकालीन संगीत की राग वर्गीकरण की पद्धति से पृथक् मत की स्थापना गिरिधर मिश्र कृत रागमाला (1961) में देखी जा सकती है तो मनरंग कृत कलावती चउपइ (446) प्रकाशित पाठ से भिन्न पाठ को प्रस्तुत करती है, इसलिये उसका अपना महत्व है। इस प्रकार के कुछ महत्वपूर्ण ग्रन्थों का आदि तथा अंतिमांश परिशिष्ट (1) में देखा जा सकता है। गुटके में उपलब्ध उप कृतियों को, सारणी के संक्षिप्तीकरण की दृष्टि से, पृथक्तः परिशिष्ट (2) में संकलित किया गया है।

सूचीपत्र को डॉ० दत्तात्रेय बालकृष्ण क्षीरसागर व श्री ब्रजेश कुमार सिंह ने सम्यक् रूप से सम्पादित किया है। फिर भी यत्र-तत्र दृष्टिगोचर होने वाली कतिपय मुद्रण त्रुटियों को सुधी आलोचक शुद्ध कर लेंगे, ऐसा विश्वास है।

प्रूफ-संशोधनादि का कार्य विभागीय तकनीकी सहायक श्री गिरिधरवल्लभ दाधीच ने परिश्रमपूर्वक सम्पन्न किया, तदर्थ वे धन्यवाद के पात्र हैं। साथ ही पंकज प्रिण्टर्स, जोधपुर के व्यवस्थापक श्री पुखराज जाँगिड भी धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने अच्छी गति से इसका मुद्रण-कार्य सम्पन्न किया है।

पद्मधर पाठक
निदेशक

विषय-तालिका

विषय		पृष्ठाङ्क
1. दर्शन [अजैन]	....	2
2. धर्मशास्त्र [कर्मकाण्ड, पद्धति, विवाह, पूजा प्रतिष्ठा आदि विधि-विधान]	....	2
3. पुराण [पौराणिक कथा, व्रत कथा, माहात्म्य तथा पुराणों के अनुवाद]	....	2-6
4. इतिहास [ख्यात, वात, तवारीख, वंशावली, हकीकत, हाल, विगत]	....	6-8
5. (1) ऐतिहासिक काव्य [काव्यग्रन्थ-छन्द, दोहा गीत, निसांणी]	....	8-10
(2) काव्य [प्रबन्ध काव्य, खण्ड काव्य, मुक्तक काव्य]	....	10-14
(3) स्फुटकाव्य [फुटकर कवित्त, सवैया, दोहा आदि]	....	16-28
6. नीतिशास्त्र	....	30
7. भक्तिसाहित्य [सगुण, निर्गुण, वांणी, पद तथा भक्तिरस सम्बन्धी कृतियां]	....	30-42
8. कथा-वार्त्ता [प्रेमाख्यान एवं कथा-साहित्य आदि]	....	42-48
9. नाटक	....	48-50
10. काव्यशास्त्र [रस, अलङ्कार, छन्द, नख-शिख एवं रीति ग्रन्थ]	....	294-296
11. व्याकरण	....	296
12. कोश	....	298
13. आयुर्वेद	....	298-304
14. ज्योतिष [फलित एवं गणित, स्वरोदय, रमल शकुन, सामुद्रिक, जन्म-पत्री आदि]	....	304-314
15. गणित [शुद्ध गणित, बीजगणित व रेखागणित]	....	314-316
16. संगीत एवं नृत्य	....	316

संकेत-तालिका

1. र०का०	रचना-काल
2. र०स्था०	रचना-स्थान
3. टी०	टीकाकार; टीका
4. सं०क०	संकलनकर्त्ता
5. सं०का०	संकलन-काल
6. लि०क०	लिपिकर्त्ता
7. लि०स्था०	लिपि-स्थान
8. गु०	गुटका (जिसमें अनेक रचनाओं का संकलन हो)
9. मू०	मूल ग्रन्थ
10. प०	परिशिष्ट
11. वि०स०	विक्रम संवत्
12. श०	शताब्दी (विक्रमी)

शुद्धि-पत्र

प्रविष्टि संख्या	कोष्ठक सं०	अशुद्ध	शुद्ध
15	2	5290	5290(7)
19	9	पत्रांक 63वाँ व अंतिमांश अप्राप्त	पत्रांक 1-42,63 तथा अंतिमांश अप्राप्त
51	3	विषय 5(1)	विषय 5 (2)
118	3	विषय 5(3)	विषय 6
143	3	विषय 5(3)	विषय 5(1)
200	4	दद्‌भ	पद्‌म
226	9	—	प्रथम पत्र अप्राप्त
249	3	विषय 7	विषय 5(2)
325	6	?	56-62
436	8	17वीं	18वीं
437	8	1724	18वीं
477	3	चित्र संभूति	चित्रसंभूतिरास
511	2	7410	4710
513	3	पदि चरित्र	द्रौपदी चरित्र
558	3	विषय 22(4)	विषय 5(2)
559	3	विषय 22(4)	विषय 5(2)
682	2	5271	5271(52)
707	3	विषय 22(5)	विषय 22(3)
1076	3	विषय 22(6)	विषय 5(3)
1170	3	विषय 22(6)	विषय 22(5)
1185	8	18वीं	19वीं
1250	3	विषय 22(6)	विषय 22(3)
1376	6, 9	पत्रांक 1-31 व अंतिमांश	पत्रांक 1, 31 व अंतिमांश
1409	3	विषय 22(6)	विषय 22(5)
1410	3	विषय 22(6)	विषय 22(5)
1449	1	1449	निरस्त

प्रविष्टि संख्या	कोष्ठक सं०	अशुद्ध	शुद्ध
1473	3	विषय 22(6)	विषय 5(3)
1501	4	भूधरदास	भूधर
1603	3	विषय 22(6)	विषय 21
1609	2	5349( )(19)	5349(A)(19)
1832	4	हरिदास	टी० हरिचरणदास
1841	6	—	4
1845	3	विषय 10	विषय 7
1995	3	विमलाजी रो सलोको	विमलजी रो सलोको
2007	8	1766	18वीं
2099	2	5336	5336(8)(F)
2127	3	विषय 22(2)	विषय 22(6)
2127	9	र. का. 1651	र. का. 1691
2128	3	विषय 22(2)	विषय 22(6)
2130	3	विषय 22(2)	विजय22(6)

राजस्थानी हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग-8

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

[चित्तौड़गढ़-संग्रह]

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1-दर्शन			
1	4143	आतम-निन्दा	मुनि ज्ञान
2	4227	पंचीकृत अपंचीकृत निर्णय	
3	4119 (6)	षट्दर्शनाष्टक	
4	5171	षट्शास्त्र-विचार (द्वादश महावाक्य भाषा)	
2-धर्मशा.			
5	3523	नवग्रह दान जप संख्या ´ववरण	
6	5417 (27)	पाणिग्रहण-पाट	
3-पुराण			
7	5358 (11)	अदीतवार की कथा	
8	5404 (72)	,,	मनोहरदास
9	5420 (1)	,,	
10	5306 (15)	उषा-चरित्र-भाषा	
11	5322 (2)	,,	
12	5:86	एकादशी-माहात्म्य-भाषा	
13	5281	कृष्ण-चरित (भागवत दशम स्कंध भाषा)	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण / अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
27×11.5 9;38	5	पूर्ण	1942	
26.6×11 13;36	6	,,	1760	क्षतिग्रस्त; लि.क. श्यामदास; लि. स्था. देवगांव
22.6×10 10;25	5–6	,,	19 वीं श.	
22×11 7;28	14	अपूर्ण	19 वीं श.	क्षतिग्रस्त; प्रथम पत्र त्रुटित
24.5×13.5 9;24	2	पूर्ण	20 वीं श.	
21.5×14.5 27;16	120–127	,,	19 वीं श.	
17×11 11;16	67–87	,,	18 वीं श.	पत्रांक 87 वां चित्रित
13×21 24;18	60–61	,,	18 वीं श.	
13.5×11.5 12;20	1(प्रथम)	अपूर्ण	19 वीं श.	
17×11.5 9;20	106–109	,,	19 वीं श.	
14×13 9.14	25–45	पूर्ण	20 वीं श.	
19×29 17;14	3–95	अपूर्ण	20 वीं श.	कई पुराणों से संकलित; पत्र 1-2 व अंतिमांश अप्राप्त
18×24.5 15;22	38	पूर्ण	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
3-पुराण 14	5415 (2)	गणेश चौथ माता की चाँद ऊगाली कथा	
15	5290	नासिकेत पुराण-भाषा	
16	3515	,,	
17	3514	,,	
18	5351 (41)	पंच पर्व की कथा	नन्दराम
19	5188	भागवत (एकादश स्कन्ध) भाषा	
20	4580	भागवत (तृतीय स्कन्ध) भाषा	नागरीदास
21	3924	भागवत (एकादश स्कन्ध) भाषा	चतुरदास शिष्य सन्तदास
22	5301 (7)	भोगल-पुराण	
23	4941	रावण-सैन्य-वर्णन	
24	5306 (13)	रास-पंचाध्यायी	नन्ददास
25	5411 (1)	व्यास री कथा	
26	5358 (10)	शनिश्चर-कथा	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
13.5×10.5 15; 20	1–6	पूर्ण	1853	लि स्था. नागौर; पत्रांकन पृथक् से
21×14 10; 22	50–81	अपूर्ण	19 वीं श.	
23×12.5 13; 26	13	,,	19 वीं श.	जीर्ण व त्रुटित; अंतिमांश अपूर्ण
23×13.5 11; 26	24	पूर्ण	1810	त्रुटित व कीटविद्ध; लि. क. उमेदा जोशी
13×10 10; 14	196–209	,,	1847	लि. क. नंदराम
25.5×13 11; 40	42–66	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्रांक 63वां व अंतिमांश अप्राप्त
26.5×17.8 13; 42	39	पूर्ण	19 वीं श.	अंतिमांश अपूर्ण; 21 अध्यायपर्यन्त पूर्ण
23.5×11 13; 42	101	,,	1831	र. का. 1792; लि. क. मुनि फतेहचन्द्र; लि. स्था. लोहावट
24×14.5 9; 24	35–47	,,	18 वीं श.	
24 5×11.5 13; 40	1	अपूर्ण	20 वीं श.	
17×11.5 9; 20	80–105	पूर्ण	19 वीं श.	
13×9 8; 12	1–5	,,	19 वीं श.	
17×11 11; 15	54–66	,,	18 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
3-पुराण			
27	5404 (2)	शनिश्चरजी री कथा	
28	5417 (33)	शनिश्चरजी री कथा (भाषा बद्ध चउपई)	केसरीचन्द
29	5363	शनिश्चर-व्रत-कथा	
30	5393	सप्तशती-भाषानुवाद	
4-इतिहास			
31	5417 (1)	ऐतिहासिक नगरों का स्थापना वृत्तान्त	
32	4934	गढ़ कोट री विगत (ऐतिहासिक घटनावली)	
33	5274 (2)	गोरा-बादल री बात	जटमल नाहर
34	5108	चकत्ता की पातस्याही की पीढ़ी दर पीढ़ी	
35	5301 (14)	चौरासी जातियों के नाम	
36	5417 (4)	छत्तीस कारखाना री विगत	
37	5417 (7)	छत्तीस पावन जाति की विगत	
38	5417 (3)	जोधपुर की विगत	
39	4547	तपागच्छ-पट्टावली	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
11.5×7.5 7; 14	1-38	पूर्ण	1885	लि. क. वीरचन्द; लि. स्था. पीपाड़ नगर; पत्रांकन पृथक् से
21.5×14.5 27; 16	169–173	,,	19 वीं श.	
11×15.5 12; 14	24	,,	1928	लि. क. मगनीराम; त्रुटित एवं जलसिक्त
15×11-5 9; 14	57	अपूर्ण	20 वीं श.	प्रारम्भांश अप्राप्त; पत्र अक्रमाङ्कित
21.5×14.5 27; 16	1 (प्रथम)	पूर्ण	19 वीं श.	
24.5×11.5 14; 30	1	,,	1822	जीर्ण-शीर्ण
16 5×22 25; 20	6–14	,,	1849	
21.5×15 20; 20	2	अपूर्ण	19 वीं श.	
24×14.5 9; 24	173–175	,,	18 वीं श.	
21.5×14.5 27; 16	3(तृतीय)	पूर्ण	19 वीं श.	
21.5×14.5 27; 16	3(तृतीय)	,,	19 वीं श.	
21.5×14.5 27; 16	2–3	,,	19 वीं श.	
25.5×11 5 14; 48	6	,,	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
4-इतिहास			
40	5301 (8)	दिल्लीपति पातसाही री वार्ता को विगत	
41	4114	बगतसिंगजी अमरसिंगजो रो सिलोको	
42	5417 (5)	भाटियों को विगत	
43	5194	महाराजा बलवन्तसिंह का पत्र	
44	5037	युग वर्णन तथा गुजरात (पाटण) के राजाओं की वंशावलियाँ	
45	5274 (8)	राठोड़ रतनसिंह महेश-दासोत री वचनिका	
46	5378 (21)	वंशावली	
47	5417 (6)	साढ़ी बारह न्यात री विगत (महाजन जाति)	
48	4961	संवत् 1819 का एक पत्र	
5(1)-ऐति· काव्य			
49	5417 (31)	चित्तौड़ की गजल	खेतल
50	5392 (6)	,,	,,
51	5317 (13)	जानकी-स्वयंवर	तुलसीदास
52	5392 (8)	घिंगोर नगर की गजल	जटमल

माप से. मी में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24×14.5 9;24	47-61	पूर्ण	18 वीं श.	
23×11 13;20	1	,,	20 वीं श.	लि. क. हेमराज; लि. स्था. नागोली
21.5×14.5 27;16	3(तृतीय)	,,	19 वीं श.	
20.5×50.5 27;12	1	,,	19 वीं श.	संगीत शास्त्रों के ग्रन्थों के सन्दर्भ में यह पत्र है।
21×3.48 372;20	1	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
6.5×22 25;20	124–127	अपूर्ण	1849	
16 5×8 14;26	47–49	पूर्ण	19 वीं श.	इसमें पाल, चौहान, मुगल तथा सिसौदियों की वंशावली है।
21.5×14.5 27;16	3(तृतीय)	,,	18 वीं श.	
16×13.5 8;22	1	,,	1879	
21.5×14.5 27;16	158–161	,,	19 वीं श.	
7.5×5.5 8;8	82–101	,,	20 वीं श.	
21×14.5 9;22	41–45	अपूर्ण	19 वीं श.	
7.5×5 5 8;8	117–121	पूर्ण	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
5(1)-एति. का. 53	5289	नेहतरंग	बुधसिंह हाडा (बूँदी के)
54	5279	पृथ्वीराज-रासो (कन्नोजखण्ड)	कवि चन्द
55	5136 (1)	बीकानेर की गजल	
56	5392 (4)	बीकानेर री गजल	पं. उदयचन्द
57	5392 (5)	मरोट री गजल	पं. दुर्गादास
58	5364 (33)	मेवाड़ देश को छन्द	
59	5392 (7)	लाहौर की गजल	जटमल
5(2)काव्य 60	5355	कवित्त-रत्नाकर	सेनापति
61	5390	दुष्ट-गंजन-पचावनी	रघुनाथ
62	5282	धमाल शतक	
63	5404 (150)	नवरतन-कवित्त	
64 म.	4635	परमार्थ दोहा शतक	रूपचन्द पाण्डे
65	4607	प्रेम-रत्नाकर	देवीदास मिश्र (रतनपाल भैया

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण / अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15.5×20 19; 18	8	अपूर्ण	20 वीं श.	इसमें दो तरंग पूर्ण तथा तीसरा अपूर्ण है। प्रारम्भिक अक्रमाङ्कित दो पत्रों में स्फुट पद हैं।
16×21.5 17; 18	161	,,	19 वीं श.	
11.5×10.5 20; 26	1–5	पूर्ण	19 वीं श.	
7.5×5.5 8; 8	28–66	,,	20 वीं श.	
7.5×5.5 8; 8	66–79	,,	20 वीं श.	पत्रांक 79-81 पर जिनहर्ष के स्फुट पद्य हैं।
18×9 9; 20	78–79	,,	1876	
7.5×5.5 8; 8	101–117	,,	20 वीं श.	
15×16.5 9; 12	2–216	अपूर्ण	20 वीं श.	प्रथम पत्र अप्राप्त
16×12 7; 18	3–33	,,	1884	पत्र 1-2, 11-12, 25-28 अप्राप्त
19.5×28.5 17; 19	78	पूर्ण	20 वीं श.	लि. क. मदनमोहन व्रजवासी
13×21 24; 18	222–224	अपूर्ण	18 वीं श.	
25.5×11.5 11; 34	5	पूर्ण	19 वीं श.	
21×14.5 18; 18	19	,,	1790	लि.क. विधिचन्द

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
5(2)-का.			
66	5391	बिहारी सतसई सटीक	बिहारी
67	5328	बिहारी सतसई	बिहारी
68	5328 (1)	भोज चरित्र चउपई	भवानीदास
69	5400	मजलिस-मण्डन	
70	4568	रामचरित-मानस (प्रथम सोपान-बाल काण्ड)	गोस्वामी तुलसीदास
71	4570 (1)	रामचरित-मानस (उत्तर काण्ड)	,,
72	4569	रामचरित-मानस (अयोध्या काण्ड)	,,
73	4567	रामचरित-मानस (आयोध्या काण्ड)	,,
74	4570 (2)	रामचरित-मानस (अरण्य काण्ड]	,,
75	3511	रामचरित-मानस (अयोध्या काण्ड)	,,
76	3512	रामचरित-मानस (लंका काण्ड)	,,
77	4577	रामचरित-मानस (स्फुट पत्र)	,,
78	5237	रामचरित-मानस	,,

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
16×20 16; 18	53	अपूर्ण	20 वीं श.	
13.5×17 14; 14	73	पूर्ण	1788	लि. क. आशानन्द यति
12×15.5 21; 14	4–42	अपूर्ण	1827	पत्रांक 1-3 अप्राप्त
14.5×19 16; 17	6	,,	19 वीं श.	
28.5×12.5 10; 28	176	,,	19 वीं श.	92वां पत्र अप्राप्त
29×12.5 11; 34	54	पूर्ण	1843	
28.5×12.5 11; 34	97	,,	1845	
28×17.5 9; 24	170	,,	19 वीं श.	
29×12.5 11; 34	29	,,	1844	
23.5×12.5 8; 30	163	,,	1863	लि. क. रामप्रसाद
25.5×11.5 8; 32	6–66	अपूर्ण	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण व अशुद्ध; पत्र 1-5 तथा अंतिम अंश अप्राप्त
30×15 13; 38	38	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण व कीटविद्ध
25×11.5 9; 33	30	,,	1877	28वां पत्र अप्राप्त

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
5(2) काव्य			
79	5277	रामचरित-मानस (बाल काण्ड)	गोस्वामी तुलसीदास
80	5326 (1)	रामचरित-मानस	,,
81	5330 (5)	रामचरित-मानस	,,
82 म.	4880	रामायण (कवित्त)	सेनापति
83 म.	5395	रामायण भाषा	जगन्नाथ
84	5361 (1)	वृन्द-सतसई	वृन्द कवि
85	5342 (1)	वृन्दावन-शतक	अभयराम
86	5330 (4)	वृन्दावन-सतसई	ध्रुव स्वामी
87	5301 (5)	वृन्द-विनोद-सतसई	वृन्द
88	3738	वृन्द-सतसई	वृन्द
89	4352	वेलिक्रृष्ण रुक्मिणी री	पृथ्वीराज राठौड़
90	5372	व्रजविलास	वीरभद्र
91 प.	5381	साहित्यरससार-चिन्तामणि	शरत्चन्द्र

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17×21.5 20; 20	127	पूर्ण	1890	लि. क. मूलचन्द; लि. स्था. अलवर
23×16 19; 18	22–108	अपूर्ण	1783	पत्र 1-21 अप्राप्त; लि. स्था. उदयपुर
16×19.5 13; 11	139-155	पूर्ण	1926	जीर्ण, खडित व अंतिमांश कीटविद्ध
26.5×12 10; 40	13	,,	1855	
11.5×8.5 6; 16	254	,,	1882	प्रारम्भिक आधा पत्र अप्राप्त
19×9.5 8; 22	1–60	,,	1863	र. का. 1761; र. स्था. ढाका; प्रारम्भ में रेखाकृति
24×11.5 9; 30	1–5	,,	20 वीं श.	
16×19.5 13; 11	126–139	,,	1926	र. का. 1686
24×14.5 9; 24	1–15	,,	18 वीं श.	पत्रांकन पृथक् से हैं।
25×12 16·36	1–14	अपूर्ण	20 वीं श.	
24×10.5 7; 50	1 (8वां)	अपूर्ण	18 वीं श.	
17×11 11; 8	17	पूर्ण	1911	लि. क. बालगोविन्द गुसाईं
17 5×8.5 402; 13	1 (खरड़ा)	अपूर्ण	20 वीं श.	

क्रमांक एव विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
5(3)- स्फु.का. 92	4674	अद्भुत-विलास	मीरां सैयदन गूहर
93	3522	कवित्त-संग्रह	
94	3521	,,	
95	5301 (2)	,,	केशवदास, मनसुख, नंददास, सुखदेव
96	5301 (13)	,,	दयाउदय, गंग, जनजीवन
97	5301 (12)	,,	
98	4928	कवित्त-छत्रबन्ध	लच्छीराम
99	5075	कलकत्ता की लावणी	
100	3574	कलयुग की निसाणी	
101	5306 (8)	कृष्ण-गोपियों की बारहखड़ी	
102	5406	ख्याल-संग्रह	दोस्त, जरीपल्ला, राठेड़ा भरतार, जौहरी पंडित, मीट्ठू (हरिजन), गोपीचंद-(योगी), बनजारा आदि
103	4520 (1)	गिरधर की कुण्डलियां	गिरधर

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
24×11.5 17;42	9	पूर्ण	18 वीं श.	र. का. 1655
12.5×24.4 24;14	1	,,	20 वीं श.	
20×18 12;30	1	,,	20 वीं श.	एक श्लोकी रामायण (संस्कृत) और राशि नाम पीछे दिए गए हैं।
24×14.5 9;24	16–25	,,	1792	
24×14.5 9;24	149–155	,,	1792	इसमें अमरसिंह से सम्बन्धित कवित्त हैं।
24×14.5 9;24	135–138	,,	18 वीं श.	यह कवित्त जयसिंह राव से सम्बन्धित है।
13×10 14;16	1	,,	19 वीं श.	
26.5×12.5 14;26	1	,,	1935	जीर्ण-शीर्ण; लि॰ क. मुन्ना
25.5×12 12;30	3	,,	20 वीं श.	
17×11.5 9;20	54–57	,,	19 वीं श.	
16×12.5 9;14	82	,,	20 वीं श.	
		,,		
24.5×10 11;32	1–3	,,	1832	लि. स्था. स्वथानगर

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
5(3)- स्फुट काव्य 104	4130	गीत-संग्रह	
105	4981	गूढार्थ रा दोहा	
106	4742	चेतन-चेतना-काग	
107	3985	चौबोली	
108	4833	छप्पय-संग्रह	
109	5398 (3)	छुटक-चान्द्रायण	
110	4705	जखड़ी	रामकृष्ण
111	5184	जहाँगीर-यश-चन्द्रिका	
112	5211	झगड़ू शाह के कवित्त	झगड़ शाह
113	3806 (2)	नवरत्न-कवित्त-संग्रह	
114	5341 (10)	नवरत्न-कवित्त	
115	5064	,,	
116	4976	नवरत्न के दोहे	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण / अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
23×12.5 23; 35	1	पूर्ण	19 वीं श.	
10.5×16 18; 16	1	अपूर्ण	20 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
25×11 12; 36	5	पूर्ण	19 वीं श.	लि. क. विद्याविजय गणि
24×11.5 14; 28	4	अपूर्ण	19 वीं श.	
12.5×13 14; 16	8	पूर्ण	19 वीं श.	
12×15.5 17; 14	82–88	अपूर्ण	1827	
22×10.5 10; 26	3	पूर्ण	20 वीं श.	
24.5×11.5 11; 38	3 (तृतीय)	अपूर्ण	19 वीं श.	जर्जरित पत्र
30×11 18; 48	1	पूर्ण	19 वीं श.	
24.5×10.5 13; 44	2–3	,,	19 वीं श.	
12×8 9; 12	234–238	,,	19 वीं श.	
23.5×13 10; 24	2	,,	20 वीं श.	
11×24.5 15; 15	1	,,	20 वीं श.	एक ओर ही लिखित

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
5(3) स्फुट काव्य 117	4119 (10)	नवसेना-विधान	
118	5121	नसीहत का दूहा	
119	5115	निसाणी उदयपुर की	जसवन्त सागर
120	5420 (10)	धनुगीत	तिलोक
121	4224	धमाल	
122	5347	दोहा-संग्रह	
123	5361 (2)	,,	
124	5377 (9)	,,	
125	5417 (9)	,,	
126	3132 (1)	,,	
127	5379 (3)	पंच सहेली रा दूहा	छीहल कवि
128	5274 (4)	,,	
129 प.	5301 (10)	पद-कवित्त तथा रेखता-संग्रह	सूरदास, शिरोमणि, पोखर, प्रवीण, अजमाल, बलभद्र, दयाराम, गंग, खानखाना, सुन्दरदास, गिरधर, कृष्णदास, मतंग आदि

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
20.5×10 10;25	8–9	पूर्ण	19 वीं श.	
22×10.5 17;48	1	,,	19 वीं श.	
27.5×12.5 16;58	2	,,	17 वीं श.	लि. क. बालाराम साधु
13.5×11.5 12;20	16-17	,,	19 वीं श.	
24.5×11 14;20	1	,,	1881	अन्त में नाड़ी-परीक्षा के सार्थ श्लोक हैं।
14.5×18 25;22	8	,,	1885	कीटविद्ध; पत्र सं. 4-5 क्षतिग्रस्त; कुल दोहे 245
19×9.5 8;22	61–66	,,	19 वीं श.	
14.5×10.5 10;16	27–32	,,	18 वीं श.	
21.5×14.5 17;22	4 (चतुर्थ)	,,	19 वीं श.	
24.5×11.5 15;38	1 (प्रथम)	,,	1879	लि. क मोतीचन्द; लि. स्था. कुटेची
14.5×11 16;20	1–13	,,	19 वीं श.	
16.5×22 25:20	19–21	,,	1849	र. का. 1575
24×14.5 9;24	63–130	,,	18 वीं श.	इसमें राणा संग्रामसिंह का 1790 में स्वर्गवास विषयक कवित्त पृष्ठ 95 पर है।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
5(3)-स्फु.काव्य 130प.	5340	पद-संग्रह	
131	5333	,,	मयाराम, जयकिशन
132	5341 (26)	,,	मुनि विजय कीर्ति, जगरामदास, बनारसी, चिदानन्द, जगत, भूदेव, हरकचंद, जिनराज
133	5342 (3)	,,	सूरदास
134	5404 (146)	पद-संग्रह तथा कड़खा	खेमराज
135	5124	पद-संग्रह	ग्रमृत, मनरूपजीत, भूधर, ग्रानन्दघन
136	5344 (6)	पद, सवैया-संग्रह	
137	4909	पद्य-संग्रह-भाषा	
138	4223	पाप-मोहादि रूपक गीत	
139	5142 (A)	प्रास्ताविक-कवित्त	
140	4602	प्रास्ताविक-दोहा-संग्रह	
141	5411 (2)	प्रास्ताविक-दोहे	

माप से. मी में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
11×16 17; 15	53	पूर्ण	19 वीं श.	
11.5×16.5 16; 20	6	अपूर्ण	20 वीं श.	
12×8 9; 12	341-364	पूर्ण	19 वीं श.	
24×11.5 9; 30	13-17	,,	20 वीं श.	
13×21 24; 18	209-210	,,	18 वीं श.	
10.5×20.5 29; 16	1	,,	19 वीं श.	
12×14 5 9; 12	23-28	,,	19 वीं श.	
25.5×10.5 24; 58	1	अपूर्ण	20 वीं श.	त्रुटित
25×11 12; 36	1	पूर्ण	19 वीं श.	
21×13 9; 22	17	,,	19 वीं श.	
19.5×11.5 9; 26	19	अपूर्ण	20 वीं श.	तृतीय पत्र अप्राप्त
13×9 8; 12	5-8	पूर्ण	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
5(3)-स्फुट का. 142	5069	प्रेम-पत्री रा दूहा	
143	5095	बम्बई बन्दर री गजल	
144	4815	बारहखड़ो	सूरत
145	5351 (37)	,, [अध्यात्म]	सूरति सिद्ध
146	5342 (2)	,,	रथराय
147	5000	बारहमासा	चेतन
148	5301 (11)	,,	गोविन्द
149	3516 (4)	बारहमासी	
150	5330 (3)	,,	सूरदास
151	5330 (6)	,,	
152	4094	भूधर-विलास सवैया	
153	5126 (1)	भोजराज-गीत	
154	5197	माताजी री निसाणी	भान कवि

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24.5×10.5 14; 12	1	पूर्ण	19 वीं श.	लि. क. हीराचन्द; लि. स्था. जयनगर
14×11.5 96; 16	1	,,	1969	लि. क. गुरां सुखश्री लि. स्था. खजूरपुर
21×9.5 9; 36	8	,,	19 वीं श.	
13×10 10;14	161–175	,,	19 वीं श.	
24×11.5 9; 30	5–12	,,	20 वीं श.	पत्रांकन 1-7
25×12.5 12; 30	2	,,	20 वीं श.	
24×14.5 9; 24	131–135	,,	18 वीं श.	
11×10 5 9; 12	40–45	,,	19 वीं श.	पत्र 46-49 निरंकित
16×19.5 13; 11	125–126	,,	1926	त्रुटित
16×19.5 ; 1 1	155–158	,,	1926	
25.5×11.5 14; 42	8	,,	19 वीं श.	
25.5×11.5 11; 38	1	,,	19 वीं श.	लि. क. मुनि उग्रचंद
12×15 16; 20	3	,,	19 वीं श.	प्रारम्भ में पत्र 38-45 तक 'इश्क चिमन' के दोहे हैं; लि. क. ऋषि हीरानंद

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
5 (3)- स्फुट काव्य 155	5353 (5)	राग-पद-संग्रह	विजयकीर्ति, अक्षयराम, भूधर
156	5299 (3)	रागमाला-स्तवन	जगराज
157	5361 (3)	रेखता तथा स्फुट-दोहे	
158	5288	वनिक-विलास	
159	5325 (10)	वाद-पचीसी	
160	5136 (4)	व्रज के पद	
161	4995	श्रृंगार-विषयक स्फुट-दोहे	
162	5132 (2)	सवैया-सग्रह	
163	5179	सवैया-कपाट-बन्ध	देवीदास, आणंद मुनि
164	5156	सवैया व पद-सग्रह	कबीर, गोविंद
165	4119 (8)	सवैया-संग्रह	
166 म.	4963	साहिब-गजल	प्रतापविजय
167	5290 (3)	सुदामा की बारहखड़ी	सुदामा

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15.5×12 15;34	82–88	पूर्ण	19 वीं श.	पत्र 82वां निरंकित
14×12.5 11;14	1–5	,,	18 वीं श.	पत्रांकन पृथक् से हैं।
19×9.5 8;22	66–69	,,	19 वीं श.	
16.5×17.5 15;18	4	,,	1866	लि. क. मोतीराम; लि. स्था. भरतपुर
25×16.5 13;40	70-73	,,	17 वीं श.	
11.5×10.5 19;24	9 वां	,,	19 वीं श.	
25×10.5 15;44	1	,,	20 वीं श.	
24.5×11.5 15;38	1(ब)प्रथम	,,	19 वीं श.	इसमें राजा जयसिंह व चंद भाट के संवाद हैं।
26×12.3 11;42	1	,,	19 वीं श.	
26×12.5 11;32	1(द्वितीय)	,,	20 वीं श.	प्रथम पत्र अप्राप्त
2.5×10 10;25	6–7	,,	19 वीं श.	
12×24.5 40;34	1	,,	1907	लि. क. प्रतापविजय; लि. स्था. औरंगाबाद; लेखक का हस्तलेख
21×14 10;22	10–15	,,	1840	लि. क. हीरानंद

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
5(3) स्फुट काव्य 168	5306 (7)	सुदामा की बारहखड़ी	सुदामा
169	4763	सूभाषित-संग्रह	
170	4924	,, (स्फुट-पद्य)	
171	5313	सोनगिरि-पचीसी	भागीरथ
172	4986	स्फुट-कवित्त	खेम, अलख, बिहारी आदि
173	5379 (4)	स्फुट-दोहे तथा श्लोक	
174	4979	स्फुट-दोहे	
175 प.	5341 (24)	स्फुट-पद-संग्रह	
176	5284	स्फुट-पद व कवित्त-संग्रह	नवीन,वेनिरास,चिंतामणि, पद्माकर,मतिराम, धूरन्धर, मुकुन्दलाभ, देवजू, श्रीपति, दिनेश, शिव, कनक
177	4382	स्फुट-सवैया	
178	5125 (2)	,,	लालचंद
179	5330 (7)	होली-पद	चरणदास

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
17×11.5 9;20	50-54	पूर्ण	19 वीं श.	
25×11.5 16;38	2	,,	19 वीं श.	
27×12.5 15;44	1	,,	1852	2रा पत्र मात्र; प्रथम पत्र अप्राप्त; लि क. मुनि राजाराम; लि. स्था. नीबड़ी नगर
11.5×16.5 13;12	6	,,	20 वीं श.	र. का. 1861
18.5×28 22;32	1	,,	20 वीं श.	खरड़ा
14.5×11 16;20	14वां	,,	19 वीं श.	
24.5×11.5 14;32	1	,,	20 वीं श.	
12×8 9;12	316-328	,,	19 वीं श.	
18×27 17;18	3-15	अपूर्ण	20 वीं श.	पत्र 1-2 तथा अंतिमांश अप्राप्त
24.5×11 17;36	1	,,	19 वीं श.	अन्तिम पत्र; लि. स्था. केसर आर्या
25.5×12 13;34	1(ब)	पूर्ण	19 वीं श.	
16×19.5 13;11	158-162	,,	1926	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
6-नीति-शास्त्र 180	5296	चाणक्य-नीति-भाषा	हनुमत कवि
181	5013 (2)	त्रेपन-सीख	
182	3518 (7)	मूरख का लक्षण	
183	5013 (1)	मूर्ख-पचासी-भेद	
184प.	5318 (2)	लुकमान हकीम की नसीहत	
185	5323	सभासार-नाटक	रघुराम
186	5301 (4)	,,	
187	5375 (52)	सवा-सौ-सीख	धर्मसिंह
188	4205	सात-कुबसन (कुव्यसन)	
7-भ.सा. 189	4633	अक्षर-बत्तीसी	मुनि महेश
190	4100 (21)	,,	
191	4793	,,	,,
192	5351 (40)	आत्म-बत्तीसी	आत्माराम

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
19.5×31.5 18; 18	20	पूर्ण	1950	जीर्ण-शीर्ण; लि. क. शंकरलाल
23.5×10 12; 38	2	,,	1794	जीर्ण-शीर्ण
16×14.5 10; 12	1–2	,,	19 वीं श.	अत्यन्त जर्जरित
23.5×10 12; 38	1–2	,,	1794	जीर्ण-शीर्ण
16.5×23 19; 14	40–44	,,	20 वीं श.	पत्र 38–39 निरंकित
14×10.5 8; 12	14–119	अपूर्ण	1903	पत्र 1-13 अप्राप्त
24×14.5 9; 24	1–21	पूर्ण	1792	पत्रांकन पृथक् से हैं; अन्त में कवित्त हैं।
17.5×11 16; 18	61–64	,,	19 वीं श.	
24×11 20; 36	1	,,	1879	ल. क. बाजू
25.5×11 13; 34	2(द्वितीय)	अपूर्ण	19 वीं श.	र.का. 1750; लि.स्था. उदयपुर; प्रथम पत्र अप्राप्त
22×10.5 11; 30	20–21	,,	19 वीं श.	पत्र 17-19 अप्राप्त
22×10 14; 36	1	पूर्ण	19 वीं श.	र. का. 1725; र.स्था. उदयपुर; जीर्ण-शीर्ण
13×10 10; 14	189–195	,,	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7-भक्ति सा. 193	5327	उत्सव-पद-संग्रह	सूरदास, कृष्णदास, परमानंद, गरीबदास, माधोदास, रसिकदास, कुंभनदास, चत्रभुज, विष्णुदास, गदाधर, श्यामदास, तुलसीदास
194	4585 (1)	उपदेश-निसाणी	गरीबदास
195	5420 (3)	उपदेश-पचीसो	रामदास
196	5404 (67)	कक्का-बत्तीसी	
197	5351 (36)	"	
198	5401 (2)	कबीर की साखी	कबीरदास
199	5306 (9)	कृष्ण-सगाई	
200	5276	कृष्ण-रुक्मिणी रो ब्याहलो	पद्म भक्त
201	5417 (35)	गुण-विवेक-वार निसाणी	केसोदास
202	5414 (2)	"	
203	5138	गुरु-चरित्र	जगन्नाथ शिष्य तुलसीदास
204	5146	गुरुदया-षट् पदी	चेतन

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
18.5×18.5 14;20	103	पूर्ण	19 वीं श.	कीटभक्षित व त्रुटित
24.5×10 14;38	1 (प्रथम)	"	19 वीं श.	
13.5×11.5 12;20	4–6	"	19 वीं श.	
13×21 24;18	49–50	"	18 वीं श.	
13×10 10;14	157–161	"	19 वीं श.	
16.5×11 9;18	20–37	"	20 वीं श.	
17×11.5 9;20	57–61	"	19 वीं श.	
16×22 22;20	39	"	1816	लि. क. अमीचन्द लि. स्था. मेवाड़ा नगर
21.5×14.5 27;16	227–239	"	19 वीं श.	
17×14.5 16;18	61–69	अपूर्ण	19 वीं श.	
23×11 7;26	4	पूर्ण	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण व त्रुटित
24.5×11.5 14;38	1	"	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7-भक्ति सा. 205	4270	गोरख ओली तथा पोहरा रो विचार	
206	4743	गोरख-बोध	
207	5341 (15)	गोरख-वचन	गोरखनाथ
208	4119 (5)	,,	
209	5306 (11)	ग्वालिनी-झगड़ो	
210	4119 (9)	चार-वर्ण	
211	5306 (14)	जानकी-मंगल	
212	5322 (1)	जोगलीला	उदयकवि
213	4119 (2)	ज्ञान-पच्चीसी	उदयकरण
214	5351 (33)	ज्ञान-पद	मनोहर
215	5379 (9)	ढाल रसिया की	प्रभुलाल
216	5401 (1)	दयालजी की साखो	जनहरिदास
217	5306 (4)	दान-लीला	माधौदास

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
52×21.5 17; 69	1	पूर्ण	20 वीं श.	प्रमुटित
22×11.5 9; 30	15	,,	1858	अंतिम पत्र त्रुटित
12×8 9; 12	277–278	,,	19 वीं श.	
22.5×11 10; 25	5वां	,,	19 वीं श.	
17×11.5 9; 20	62–65	,,	19 वीं श.	
22.5×10 10; 25	8वां	,,	19 वीं श.	
17×11.5 9; 20	105–106	,,	19 वीं श.	
14×13 9; 14	1–25	,,	20 वीं श.	24 वां पत्र अप्राप्त
22.5×11 10; 25	2–4	,,	19 वीं श.	
13×10 10; 14	136–142	,,	19 वीं श.	
14.5×11 16; 20	69–70	,,	19 वीं श.	पत्रांक 71वां रिक्त, 72 पर मोती-चंद कृत सवैया, 73-75 तक हिसाब तथा स्फुट ज्योतिष
16.5×11 9; 18	1–20	,,	20 वीं श.	पत्र 15वां अप्राप्त
17×11.5 9; 20	40–45	,,	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7-भ.सा. 218	5306 (1)	दामोदर-लीला	देवीदास
219	5351 (34)	दादूजी की साखी	दादूदयाल
220	5339	दादू-वाणी	
221	5353 (4)	धमाल	
222	5301 (6)	ध्रुव-चरित्र	जनगोपाल
223	5274 (5)	नागदमण	
224	5301 (14)	,,	
225	5417 (32)	,,	सायाँजो झूला
226	5396 (1)	नारायण-लीला	माधौदास गुसाईं
227	5404 (59)	पद	कबीरदास, सूरदास
228म.	5287	पद-संग्रह	रूपसिंह, राजसिंह, कल्याणसिंह, पृथ्वीसिंह, मदनसिंह, यज्ञनारायणसिंह, जवानसिंह
229	4119 (111)	प्रश्नोत्तर के दोहे	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17×11.5 9; 20	18-20	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्र 1-17 अप्राप्त
13×10 10; 14	142-154	पूर्ण	19 वीं श.	
16×10.5 10; 16	115	अपूर्ण	19 वीं श.	प्रारंभिक 6 पद अप्राप्त
15.5×12 15;34	79-81	पूर्ण	19 वीं श.	प्रारंभ में 'कड़खा' भी हैं।
24×14.5 9; 24	16-35	,,	18 वीं श.	
16.5×12 25; 20	22-30	,,	1849	
24×14.5 9; 24	156-172	,,	18 वीं श.	अंत में 'कृष्ण स्तुति' है।
21.5×14.5 27; 16	161-169	,,	19 वीं श.	
14×10.5 7; 16	2-49	अपूर्ण	1825	
13×21 24; 18	39-40	पूर्ण	18 वीं श.	
22×29.5 17; 20	19	,,	20 वीं श.	किशनगढ़ के साहित्य-प्रेमी राजाओं द्वारा निर्मित पदों का संग्रह
22.5×11 10; 25	4 (चतुर्थ)	,,	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7-भक्ति सा. 230	5306 (5)	प्रह्लाद-चरित्र	रैदास
231	4700	,,	गोपाल
232	5278	भक्तमाल-सटीक	मू. नाभादास; टी. प्रियादास
233	5290 (1)	भक्ति-विरुदावली	मलूकदास
234	4777	भक्तिसार	नागरीदास
235	4994	भगत-विरुदावली	
236	5317 (1)	भ्रमर-गीत	जन मुकुन्द
237	5345	,,	
238	5324 (15)	मिथ्यात्त्व-वाणी	
239	4119 (7)	,,	
240	5396 (3)	रघुनाथ-ध्यान-लीला	
241	5396	रघुनाथ-लीला	गुसाईं माधौदास

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
17×11.5 9;20	45–48	पूर्ण	19 वीं श.	
32.5×16 14;38	11	,,	1892	जर्जरित; लि. क. सुखराम वैश्य
15.5×21 19;20	146	,,	1790	लि. क. अनीराय दीक्षित टीका-र. का. 1769
21×14 10;22	6ठा	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्र 1-5 अप्राप्त
21.5×15.5 12;26	10–14	पूर्ण	20 वीं श.	र. का. 1799
29.5×10.5 13;50	1	,,	20 वीं श.	अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण
21×14.5 9;22	25वां	अपूर्ण	1870	पत्र 1-24 अप्राप्त
16×12 9;24	22	,,	20 वीं श.	
25×16.5 13;28	84–85	पूर्ण	17 वीं श.	पत्रांक 85 पर 'बारहमासा के पद' भी हैं। पत्रांक 88-89 पर धमाल' 87 पर स्फुट दोहे तथा पत्र 86वां रिक्त है।
22 5×11 10;25	6ठा	,,	19 वीं श.	
14×10.5 9;16	1–22	,,	1825	पत्रांकन पृथक् से हैं।
14×10.5 7;16	1-45	,,	1825	,,

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7-भक्ति सा.			
242	5317 (2)	राधा-कृष्ण प्रीति-परीक्षा	उदय कवि
243	5306 (2)	राधिकाजी की प्रीति-परीक्षा	लीलाधर
244	5396 (5)	रामचन्द्र-जन्म-प्रसंग	
245	5306 (12)	रुक्मिणी-मंगल	हीरामणि
246	5329	"	
247	5330 (2)	"	
248	5344 (3)	रेखता री हुंडी	
249	5301 (13)	विरह-मंजरी	नन्ददास
250	5291	व्रज-यात्रा-परिक्रमा	
251	4585 (2)	विवेकवार री निसाणी	केशवदास गाडण
252	4624	श्याम-सगाई	माधौदास
253	5334 (1)	श्रीचौरासी-पद	हितहरिवंश
254	5330 (1)	सहजोबाई के पद	सहजोबाई

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
21×14.5 9;22	25–11	पूर्ण	19 वीं श.	
17×11.5 9;20	20–31	,,	19 वीं श.	
14×10.5 8;15	7–20	,,	1885	
17×11.5 9;20	65–80	,,	19 वीं श.	
20×26.5 25;26	73	अपूर्ण	19 वीं श.	त्रुटित एवं अन्तिमांश में अपूर्ण।
26×19.5 13;11	91-124	पूर्ण	1926	
12×14.5 9;12	15–16	,,	19 वीं श.	
24×14.5 9;24	139–149	,,	18 वीं श.	
20×16.5 13;22	36	,,	20 वीं श.	
24.5×9 14;38	1–6	,,	19 वीं श.	
27.5×17.5 12;28	6	,,	20 वीं श.	कीट-भक्षित
15×10.5 7;15	2–66	,,	20 वीं श.	प्रथम पत्र अप्राप्त; पत्र 67-68 पर 'फल स्तुति'
16×19.5 13;11	3–90	अपूर्ण	1926	जर्जरित व त्रुटित; पत्र 4,5,7-10 15-24, 28-29 व 56वां अप्राप्त

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7-भ.सा. 255	5272 (10)	सुगुरु-शतक	
256	5301 (18)	सुदामा-चरित	
257	4432	सुन्दर-शृंगार	सुन्दरदास
258	5326 (2)	सूर के पद	सूरदास
259	5334 (2)	सेवग-वाणी	हरिवंश
260	5321	सनेह-लीला	
261	5306 (3)	,,	जन मोहन
262	4836	स्फुट एकलिंगजी के भजन आदि	
263	5305	होरी-पद-संग्रह	जन गोविन्द, नामदेव, नरहरि
8-क.वार्त्ता 264	5301 (17)	अनोखा कुंवर री वात	
265	5426	अर्बुदाचल-पर्वत-वार्त्ता	
266	4787	आधा-सीसी की कथा	
267	5025	,,	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण / अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
20.5×27.5 31; 28	9–11	पूर्ण	1916	लि. स्था. जयपुर
24×14.5 16; 18	214–221	अपूर्ण	18 वीं श.	
25.5×10.5 15; 38	24	पूर्ण	18 वीं श.	
23×16 19; 18	109–136	अपूर्ण	18 वीं श.	
15×10.5 7; 15	69–152	पूर्ण	20 वीं श.	
11.5×11 8; 12	21	अपूर्ण	20 वीं श.	पत्रांक 3, 4, 7, 10 व 15वां अप्राप्त
17×11.5 9; 20	31–40	पूर्ण	19 वीं श.	
23.5×11 8; 28	19	अपूर्ण	19 वीं श.	जलसिक्त
22×15 9; 22	5–30	"	20 वीं श.	पत्र 1-4 अप्राप्त
24×14.5 9; 24	213वां	पूर्ण	18 वीं श.	
20.5×12 10; 20	15	अपूर्ण	20 वीं श.	एक तरफ लिखित
19×9 15; 28	1	पूर्ण	19 वीं श.	
24.5×11 13; 32	1	"	20 वीं श.	अन्त में 'मूर्ख लक्षण'

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
४-क.वार्त्ता			
268	5035	कुतुबुदीन साहिजादा री बात	
269	4771	कान्हड़ कंवरी शृंगार कथा	
270	4120	केरड़ा वाली चौथ माताजी की वार्त्ता	
271	5359 (10)	ख्याल री बात	
272	4789	चन्द्रकुंवर री बात	रसिक कविराय ग्रथवा हंस
273	5301 (16)	,,	
274	3518 (2)	चन्द्रकुंवर री वार्त्ता	
275	5274 (1)	,,	कविराय
276	5398 (2)	जलाल गाहिणी री वार्त्ता	
277	5227	,,	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
22×15.5 13;34	2–11	अपूर्ण	20 वीं श.	अत्यन्त जर्जरित; प्रथम पत्र अप्राप्त
31×13.5 11;42	20	,,	19 वीं श.	प्रथम पत्र त्रुटित एवं 14वां अप्राप्त
24.5×11 11;26	7	,,	19 वीं श	
18×12 12;21	35-36	पूर्ण	20 वीं श.	लि. स्था. जयपुर; 'भोज के ख्याल की बात' है ।
23×10.5 11;22	11	,,	19 वीं श.	र. का. 1740; प्रतापसिंह खुमाणसी के आदेश से कारित; शोध-पत्रिका में इसे प्रतापसिंह की रचना मानी है ।
24×14.5 9;24	200-211	,,	18 वीं श.	अन्त में सवैया पद हैं । अक्रमांकित 3 पत्रों में मुरली के सवैया तथा स्फुट श्लोक हैं ।
16.5×14.5 10;12	3–18	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्रांक 3 पर हिसाब; 4-5 पर स्फुट-पद; 6-7 निरंकित; 7-18 तक चन्द्रकुंवर की वार्ता है ।
16.5×22 25;20	1–5	पूर्ण	1849	र. का. 1740
12×15.5 18;14	42–82	,,	1827	
24.5×11 14;30	23	अपूर्ण	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
8-क.वार्त्ता 278	5324	ढोला-मारूणी री वार्त्ता	
279	4768	पंचाख्यान-भाषा	
280	5265	,,	
281	5274 (7)	पंचाख्यान	
282	5170 (2)	पोपां बाई की कथा	वेणीदास
283	5414 (1)	मधुमालती-कथा	
284	5415 (3)	मधुमालती री वार्त्ता	
285	5351 (41)	मोहम्मद राजा की कथा	
286	5224	मौजदीन पातसाह री बात	
287	3516 (1)	राजा की कथा	
288	4584	राजा रिसालू री बात	
289	3516 (5)	,,	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
16×10.5 8; 20	79	अपूर्ण	20 वीं श	
14×23.5 22; 18	52–124	"	19 वीं श.	पत्रांक 1-51; 64; 68 अप्राप्त; 108वां पूर्णतः फटा हुआ; जीर्ण-शीर्ण
21×11.5 16; 40	26	"	19 वीं श.	स्याही फैली हुई है।
16.5×22 25; 20	34–124	पूर्ण	1849	लि. क. नित्यविजय गणि
24×10 14; 42	5–6	"	1760	र. का. 1708; लि. क. अमरसागर; लि. स्था. मालपुरा
17×14.5 16; 18	3–61	अपूर्ण	1832	पत्र 1-2 अप्राप्त; लि. क. करमचंद जसरूप
13.5×10.5 16; 20	1–40	"	19 वीं श.	पत्रांकन पृथक् से हैं।
13×10 10; 14	210–212	पूर्ण	1847	
25×11.5 12; 33	4	"	1848	
11×10.5 9; 12	18	अपूर्ण	19 वीं श.	प्रथम पत्र अप्राप्त; पत्र 16-18 निरंकित; अन्तिम पत्र धुले होने के कारण नाम अस्पष्ट है।
23.5×12 25; 40	6	पूर्ण	1919	
11×10.5 9; 12	50–54	अपूर्ण	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
8-क. वार्त्ता			
290	5318 (1)	वीरमदे कंवर की बात	शेरसिंह
291	5285	वैताल-पच्चीसी	गंगेश मिश्र
292	5332	,,	
293	5423	,,	
294	5417 (34)	,,	अनूपसिंह
295	5275 (5)	शुक-बहोत्तरी	देवदत्त भट्ट
296	5275 (6)	सदैवच्छ सावलिंगा री वार्त्ता	
297	5360	,,	
298	4778	,,	
299	4943	सिंह-बन्दर की कथा	
300	5280	हातम-चरित (हातिमताई)	प्रेमसुख
10-का.शा.			
301	5004	इकोत्तर कवित्त मान टिप्पणी	
302	4524	कविप्रिया	केशवदास

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
16.5×23 22;22	37	पूर्ण	20 वीं श.	द्वितीय पत्र अप्राप्त
21×27 14;18	149	,,	1904	लि. क. जीवाराम चौवे
16×23 27;25	30	अपूर्ण	19 वीं श.	स्फुट पत्र तथा चिपके हुए जीर्ण-शीर्ण हैं।
16×15 13;18	4–60	,,	19 वीं श.	पत्रांक 1-3 व अंतिम अप्राप्त; पत्र चिपके व जीर्ण-शीर्ण हैं।
21.5×14.5 27;16	174–227	पूर्ण	19 वीं श.	
25×17 19;30	1–77	,,	1847	लि. स्था. रूपनगर पत्रांकन अलग से हैं।
25×17 19;30	78–79	अपूर्ण	19 वीं श.	
16.5×12 11;15	22	,,	20 वीं श.	
16.5×11 18;26	2–18	,,	19 वीं श.	पत्रांक 1, 14-17 तथा अंतिमांश अप्राप्त।
24×9 11;32	1	पूर्ण	20 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
17.5×24.5 15;22	80	,,	1893	
28.5×11 8;36	1	,,	20 वीं श.	
29×18.5 17;38	46	,,	1921	लि. स्था. अजमेर

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
10-का.शा. 303	4566	कविप्रिया	केशवदास
22(3) जै.सा. 304	5272 (32)	अकृत्रिम चैत्यालय की पूजा	
305	5272 (26)	अढ़ाई द्वीप की पूजा	
306	3700 (1)	अतिचार	
307	3740	,,	
308	4058	,,	
309	4067	,,	
310	5272 (24)	अनन्त चतुर्दशी पूजा	
311	5358 (17)	अष्टप्रकारीपूजा-विधि	
312	5362 (2)	अष्टप्रकारीपूजा-विधि	
313	4377 (7)	अष्टोत्तरी-स्नात्र-विधि	
314 म.	4236	आचार-चौपनी	मोतीचन्द
315	5418	आचार-नियम-संग्रह	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण / अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
28×11 13; 46	54	अपूर्ण	1740	अत्यन्त जर्जरित; तीन प्रतियों के अस्त-व्यस्त पत्रों का संग्रह 15+20+19
20.5×27.5 31; 28	47–50	पूर्ण	20 वीं श.	
20.5×27.5 31; 28	33–34	,,	20 वीं श.	
26×10.5 14; 40	1 (प्रथम)	,,	19 वीं श.	
22.5×10 8; 28	14	,,	19 वीं श.	
26×11.5 8; 28	12	,,	19 वीं श.	प्राचीन
23.5×12 15; 30	1	,,	19 वीं श.	
20.5×27.5 31; 28	32 वां	,,	20 वीं श.	
17×11 11; 16	97 वां	अपूर्ण	18 वीं श.	
12×10.5 10; 15	118–120	,,	18 वीं श.	पत्रांक 21-22 अप्राप्त
24.5×11 16; 37	65–67	पूर्ण	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
22.5×11 18; 32	2	,,	1868	जीर्ण-शीर्ण; र.का.1832; लि.क. हरचन्द; लि.स्था. जावद
15×46.5 32; 18	37	अपूर्ण	20 वीं श.	त्रुटित पत्र 1,8,32,35,36,37

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(3) जै.सा. 316	5271 (37)	आराधना	
317	4377 (3)	आलोयणा	
318	4021	उपाधान-विधि	
319	4458	,,	
320	5374 (7)	उपासकाचार और श्रावकाचार	
321	4377 A (6)	ऋषिमण्डलपूजा	
322	4377 (8)	गृहसूतकविचार	
323	4373 (1)	चैत्रीपूर्णिमा-विधि	
324	5351 (19)	जयमाल	
325	5344 (11)	जिनपूजा	
326	5349 A (23)	जिनप्रतिमा-स्थापना	
327	4373 (3)	ज्ञानपंचमी-चैत्यवंदनविधि	
328	5272 (34)	तीन चौबीसी की पूजा	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
30×16.5 13;40	213–217	पूर्ण	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; मूल प्राकृत भाषा में है।
24.5×11 16;37	44–46	,,	1874	जीर्ण-शीर्ण
25×11 15;44	2	,,	19 वीं श.	
25.5×11 16;44	2	,,	17 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; कुछ स्थानों पर प्राकृत भाषा में है।
15.5×13 14;24	77-79	,,	1846	लि. क. फतेराम; लक्ष्मीचंद कृत 'श्रावकाचार' पर आधारित
24.5×11 16;37	60–62	,,	19 वीं श.	जीर्ण शीर्ण
24.5×11 16;37	67–70	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
25×11.5 17;36	1–2	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
13×10 10;14	73–78	,,	19 वीं श.	अंत में 'पार्श्वनाथ पूजा' है।
12×14.5 9;12	?	,,	19 वीं श.	
16×10 11;20	55वां	,,	18 वीं श.	
25×11.5 17;36	2	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
20.5×27.5 31;28	51–54	,,	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(3)- जै.सा. 329	5147	दशमभिक्षुअध्ययन-टीका	
330	5272 (34)	दशलक्षरापूजा	
331	4300	दीक्षा-विधि	
332	4377 (10)	,,	
333	5351 (4)	देव-जयमाल	
334	4373 (2)	देववंदन-विधि	
335	4459 (2)	,,	
336	5272 (31)	देवशास्त्रगुरु-पूजा	
337	4020	देव-सीप्रतिक्रमरा-विधि	
338	5343 (1)	,,	
339	5310 (2)	द्वादश-व्रत-अतिचार	
340	4377 (12)	द्वादश-व्रत-टिप्पणिका	
341	4377 (4)	द्वादशव्रत-लेणविधि	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
22.5×20 20; 44	2	पूर्ण	1938	लि.क. मोती साधु; अंत में कवित्त हैं।
20.5×27.5 31; 28	30–32	,,	20 वीं श.	
26×11 14; 45	1	,,	1864	लि.क. शिवजी; लि.स्था. भुजनगर
24.5×11 16;37	70 वां	,,	19 वीं श.	
13×10 10; 14	25-26	,,	19 वीं श.	
25×11.5 17; 36	2	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
25.5×11.5 11; 34	4–6	,,	1965	
20.5×27 5 31; 28	46–47	,,	20 वीं श.	
24.5×11.5 13; 34	2	,,	19 वीं श.	
17.5×13.5 11; 20	1–13	,,	20 वीं श.	
21.5×13.5 16; 30	29–36	,,	17 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
24.5×11 16; 37	73–82	,,	19 वीं श.	,,
24.5×11 16; 37	46–51	,,	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(3)जं. सा.342	5271 (15)	द्वादशव्रत-विवरण	
343	5272 (30)	नन्दोश्वर-पूजा	
344	4808	नवपद-पूजा	
345	4024	,,	जेतसी
346	3548	,, विधि सह	
347	4285	नवपद विधि	
348	5272 (5)	निर्वाणकाण्ड-भाषा	भगवतीदास
349	5369 (16)	,,	,,
350	5408 (6)	,,	,,
351	5351 (24)	,,	,,
352	5272 (33)	निर्वाणक्षेत्र-पूजा	
353	4459 (1)	नांदी-विधि	
354	5405 (8)	पंचपरमेष्ठि नवकार-जापविधि	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि, संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
30×16.5 13;40	80–91	पूर्ण	17 वीं श.	जीर्णोद्धरित प्रति
20.5×27.5 31;28	36–46	,,	20 वीं श.	जीर्ण
21×10.5 13;34	6	,,	1881	जीर्ण-शीर्ण; पत्र चिपके
25.5×11.5 11;34	9	,,	1903	
25.5×12 13;34	9	अपूर्ण	1876	लि. क. पं. गिरधारी; लि. स्था. शुभदपुर; पत्र 5-7- अप्राप्त ।
25.5×12.5 12;32	22–4	,,	19 वीं श.	पत्रांक 17 से 20 तक भावना विलास व ज्ञान पच्चीसी अपूर्ण हैं।
20.5×27.5 31;28	1 (तृतीय)	पूर्ण	1916	र. का. 1741
13.5×22 19;18	43–44	,,	18 वीं श.	र. का. 1741; लि. क. भूपविजय
16.5×10.5 10;20	9–11	,,	20 वीं श.	र. का. 1741
13×10 10;14	98–102	,,	19 वीं श.	र.का1741.
20.5×27.5 31;28	50–51	,,	20 वीं श.	
20.5×11.5 11;34	1–4	,,	1965	लि.क. देवकरण; लि.स्था. ढिल्लनपुरपत्तन (सिन्धुदेश)
18×11 10;18	37–38	,,	18 वीं श.	जीर्ण

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(3) जै.सा. 355	5272 (25)	पंचमेरु-पूजा	
356	5351 (11)	पंचमेरु-पूजा-जयमाल	
357	5271(B) (41)	पद्मावती-आराधना	समयसुन्दर
358	5344 (13)	पारसनाथ-पूजा	
359	5272 (27)	पार्श्वनाथ-पूजा	
360	5351 (32)	,,	
361	5351 (15)	,, जयमाल	
362	5351 (31)	पूजा-मंगल	
363	4080	पौषध-विधि	समयसुन्दर
364	3893	प्रतिक्रमण हेतु तथा छः आवश्यक री विधि	
365	4004	प्रतिक्रमण हेतु भाषा	क्षमाकल्याण गणि शिष्य अमृतधर्म वाचक
366	4377 (11)	प्रव्रज्या-विधि	
367	4098	प्रायश्चित्त-विधि	क्षमाकल्याण गणि

माप से. मी में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
20.5×27.5 31; 28	32–33	पूर्ण	20 वीं श.	
13×10 10; 14	47–52	"	19 वीं श.	
30×16.5 13; 40	227–228	"	18 वीं श.	प्राचीन
12×14.5 9; 12	64–70	"	19 वीं श.	
20.5×27.5 31; 28	34वां	"	20 वीं श.	
13×10 10; 14	135-136	"	19 वीं श.	
13×10 10; 14	62–63	"	19 वीं श.	
13×10 10; 14	134–135	"	19 वीं श.	
25.5×11 13; 44	2	"	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
26×13 11; 34	4	"	20 वीं श.	
24×12 18; 38	2	"	19 वीं श.	लि. स्था. बीकानेर
24.5×11 16; 37	72–73	"	19 वीं श.	प्राचीन
27×13 14; 34	7	"	1898	लि.क. पं. गंगाराम लि.स्था. बालुचरपुर

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(3) जै.सा. 368	4005	बत्तीसदोष सामयिक विचार व सूतक विचार	
369	5424	बारह व्रतां री मरजाद	
370	4211	बारहव्रत विस्तार श्रावकों के	उद्योतसागर गणि
371	4062	मण्डल-पूजा-विधि	
372	4060	विंशतिस्थानक-पूजा-विधि	
373	5351 (6)	वीस विहरमान जयमाल	
374	4331	वीसस्थानक-ओली-विधि(सचित्र)	
375	3643	वीस स्थान-तपोविधि	
376	4059	वीस स्थान-तपोविधि	
377	4720	व्रतोच्चारण-विधि	
378	4502	,,	
379	4377 (6)B	शान्ति-विधि	
380	5193	शीलांगधारी-रथ (सचित्र वर्णन)	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
23.5×12 19; 44	1	पूर्ण	19 वीं श.	
12×8 9; 16	16	,,	1915	लि.क. पं. मगनीराम
23×12 14; 29	11	अपूर्ण	19 वीं श	अंतिमांश अपूर्ण
22.5×11.5 17; 32	1	पूर्ण	19 वीं श.	
25.5×12 9; 22	35	,,	19 वीं श.	अन्त में बीस स्थानक की आरती
13×10 10; 14	30-32	,,	19 वीं श.	
26.5×12 16; 37	1	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; महावीरजी का चित्र
29.5×13 13; 3 4	43	,,	924	लि. क. पं. अमोलकचंद मुनि शिष्य ज्ञानविशाल गणि; लि.स्था. जामनगर
25×12.5 15; 44	33	,,	1865	लि.स्था. मगसुदाबाद
25.5×11 15; 40	4	अपूर्ण	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
25.5×11 17; 48	5	पूर्ण	19 वीं श.	कीटविद्ध
24.5×11 16; 37	62-65	,,	19 वीं श.	प्राचीन
25.5×11 13; 24	3	,,	19 वीं श.	सचित्र

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(3)- जै.सा. 381	5112 (1)	श्राद्ध-अतिचार	
382	4140	श्रावक ना बारह-व्रत ना अतिचार	
383	5375 (56)	श्रावक नी करनी	
384	4517	श्रावक नी प्रायश्चित्त नी विधि	
385	5343 (12)	श्रावक री करणी	जिनहर्ष
386	3565	श्रावक-विधि-प्रकाश	क्षमाकल्याण शिष्य अमृतधर्म गणि
387	4377 (1)	,,	क्षमाकल्याण
388	4380 (1)	श्रावकातिचार	
389	4138	,,	
390	4078	श्रावकाराधना	राजसोमोपाध्याय
391	4079	,,	,,

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
22×15 11; 24	58–62	अपूर्ण	18 वीं श.	पत्र 1-57 अप्राप्त
25.5×12 15; 40	6	पूर्ण	1881	
17.5×11 16; 18	74–75	,,	19 वीं श.	
26×12 15; 36	4[illegible]	,,	19 वीं श.	लि.क. ऋषि राजधर
17.5×13.5 11; 20	37–39	,,	20 वीं श.	
23×11 11; 28	25	,,	1869	लि. क. राजसागर; लि. स्था. श्रीपल्लिकामध्ये; र.का. 1838; र. स्था. जैसलमेर प्रारम्भ में प्रभाती प्रतिक्रमण विधि में गाथाएँ प्राकृत में हैं।
24.5×11 16; 37	20–22	अपूर्ण	1990	जीर्ण-शीर्ण; लि.क.ज्ञानविशाल; लि.स्था. पल्लिका; र.का.1838
24×12 15; 29	2–6	,,	19 वीं श.	प्रथम पत्र अप्राप्त
26×12.5 13; 40	6	पूर्ण	20 वीं श.	
25×11 13; 38	8	,,	1715	र. का. 1715; र. स्था. नोखा; लि.स्था नोखा; स्वयं लेखक द्वारा उसकी शिष्याएं सुश्राविका पुण्यप्रभाविका व श्राविका जसोदा के पठनार्थ लिपीकृत; जीर्ण-शीर्ण
26×11 12; 36	8	,,	1875	र.का 1715; लि.क. मुनिचंद्रदेव लि.स्था.जोधपुर; अत में मंत्र-स्तवन

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(3) जै.सा. 392	4377 (5)	षोडश महादेवी-पूजा	
393	4252	संक्षिप्त आलोयरा-विधि	क्षमाकल्याण
394	4377 (2)	,,	,,
395	5349 (3)	सर्व पच्चखाण पारण-विधि	
396	4029	साधु-अतिचार	
397	5205	साठ संवत्सरी (षष्टि संवत्सरी)	
398	4378	सामयिक ग्रहण-विधि	
399	3547	सिद्धचक्र-नवपदजी की पूजा	
400	5351 (7)	सिद्ध-पूजा	
401	5272 (22)	सोलहकारण-पूजा	
402	4660	स्नात्र-पूजा	
403	4032	स्नात्र-विधि	
405	4511 (1)	,,	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
24.5×11 16; 37	51–60	पूर्ण	19 वीं श.	
23.5×10 13; 37	7	अपूर्ण	1886	र.स्था. बालूचर; लि.स्था.जैसलमेर प्रथम पत्र अप्राप्त
4.5×11 16; 37	23–44	पूर्ण	19 वीं श.	जिनप्रभसूरि 'कृतविधि' प्रपा पर आधारित
16×10 11; 20	5–5	"	18 वीं श.	पत्रांक 4 पर पंचतत्त्व की आयु
25×11.5 10; 36	4	"	1800	लि.क. केसरविजय लि.स्था. कुवारचा
24.5×11 16; 42	1–8	अपूर्ण	17 वीं श.	पत्रांक 2-3,5 तथा अंतिमांश अप्राप्त
24.5×10.5 12; 35	1–8	"	19 वीं श.	
27.5×13 12; 40	1–9	पूर्ण	1903	लि.क. हेमराज; अंत में वीस स्थान का मन्त्र
13×10 10; 14	32–36	"	19 वीं श.	
20.5×27.5 31; 28	29–30	"	20 वीं श.	
25×11.5 16; 38	6	"	17 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
26×11.5 15; 34	5	"	1825	लि.क. माणक्योदय; लि.स्था.पाली
25×12.5 23; 46	4	"	1869	लि.क. ऋद्धिहंस

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(3) जै.सा. 405	5378 (47)	स्फुट-जैन-मंत्र	
406	4614	अंजनासती-चउपई	भुवनकीर्ति
407	4621 (1)	अंजनासती-रास	जयमल
408	5076	,,	,,
409	5353 (14)	अठारह न्यात रो चौढालियो	
410	5403(A) (7)	अध्यात्म-गीता	देवचन्द्र
411	5271 (18)	अनाथी-सन्धि	विमलविनय
412	4618	अमरदत्त-मित्रानन्द-रास	
413	5268	अमरसेन-वयरसेन-चउपई	दयासागर
414	4744	अमल भांग रो रासो	
415अ.	4488	अयवंती-सुकुमाल-चउपई	जिनहर्ष
416	5275 (2)	,,	शान्तिहर्ष
417	3979	अरहनकमुनि-रास	महिमासागर गणि

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
16.5×8 14;26	98वां	पूर्ण	19 वीं श.	पत्र 94-97 अक्षर अस्पष्ट
26×12 18;54	8	अपूर्ण	18 वीं श.	अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण
26×11.5 21;50	1–7	पूर्ण	1817	जीर्ण-शीर्ण
24.5×11 12;34	2–4	अपूर्ण	1868	प्रथम पत्र अप्राप्त; लि.क. मोतीराम
15.5×12 13;32	177–179	पूर्ण	1828	पत्रांक 80 पर स्फुट अपूर्ण पद हैं।
26×14.5 9;18	131-136	"	19 वीं श.	
30×16.5 13;40	112–115	"	17 वीं श.	जीर्णोद्धरित
25.5×11.5 19;44	14	"	17 वीं श.	
25.5×10.5 15;50	13	"	18 वीं श.	र.का. 1706
24.5×12 13;40	2	अपूर्ण	20 वीं श.	
25.5×10.5 16;44	4	पूर्ण	1751	र.का. 1741; र.स्था. राजनगर लि.स्था.खटवा (ब्यावर); कीटविद्ध
25×17 14;24	8–16	"	1834	र.का. 1741; लि.स्था.राजनगर
25×10.5 12;30	7	"	1854	लि.स्था. मेलखेड़ानगर

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(4) जै.सा. 418	5343 (4)	अवन्ती-सुकुमाल-चउपई	जिनहर्ष
419	3991 (1)	आनन्द श्रावक री संधि	श्रीसार मुनि
420	3996	,,	,,
421	4135	आणन्द-संधि	,,
422	5271 (17)	,,	,,
423	5399 (8)	आत्मरास	सहजसुन्दर
424	4273 (1)	आदीश्वर-स्तवन	
425	4544	आरामनन्दन-पद्मावती-चउपई	दयासागर
426म.	4561	आर्द्रकुमार-रास	ज्ञानसागर
427	3767	आषाढभूति-चौढ़ालियो	मानसागर
428	5268	,,	रायचन्द शिष्य जयमल
429	5375 (48)	आषाढ़भूति-धमाल	कनकसोम

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17.5×13.5 11;20	4–14	पूर्ण	20 वीं श.	
22.5×11 12;28	16	,,	1872	र.का.1689; लि.स्था. सिद्धविजय
24.5×10.5 13;38	12	अपूर्ण	19 वीं श.	जोर्ण-शीर्ण
25.4×10.5 12;32	17	,,	19 वीं श.	पत्रांक 12, 15 अप्राप्त र.का. 1684
30×16.5 13,40	101–112	पूर्ण	17 वीं श.	र.का. 1688; कीटविद्ध
14×13 20;24	46–50	,,	18 वीं श.	र.का. 1589; जीर्ण-शीर्ण
26×12 10;22	1–5	,,	19 वीं श.	
25×11.8 16;44	21	,,	19 वीं श.	पत्र चिपके हुए है । र.स्था. हाजीखान डेरा
24×10.5 18;36	10	अपूर्ण	1729	लि.क. रत्नविजय लि स्था.जांगीरपुर; र.का.1727; र. स्था. लघुवटपद्रपुर (छोटा बड़ौदा) डूंगरपुर के पास; पत्रांक 6ठा अप्राप्त
24.5×11 13;30	6	पूर्ण	1901	र.का. 1737; र.स्था. श्रीनगर (भेरूंदा); लि.स्था. पाली
26×12 13;38	4	,,	20 वीं श.	र.का. 1836; र.स्था. नागौर
17.5×11 16;18	44–50	,,	19 वीं श.	र.का. 1638

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(4) जै.सा.430	5058	आषाढ़भूति-धमाल	कनकसोम
431	5356(B) (7)	,,	
432	3983	आषाढभूति-रास (पिण्डविशुद्धि विषयक)	ज्ञानसागर
433	5271 (21)	,,	महामुनि शिष्य धर्मरुचि
434	4708	आषाढ़भूति-रास	ज्ञानसागर
435	4910	,,	
436	5271 (2)	इलाकुमार-चउपई	ज्ञानसागर शिष्य माणिक्यसागर
437	5380 (2)	,,	,,
438	4923	इलायचीकुमार-रास	ज्ञानसागर
439	5098	ऋषभदेव-धवल	
440	4933	कक्का-बावनी (वैराग्य बावनी)	
441	5380 (6)	कनकरथ राजा-चउपई	कनकनिधान
442	5271 (30)	,,	,,

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
21×47.5 89; 42	1 (खरड़ा)	पूर्ण	20 वीं श.	र.का. 1638
12×12.5 16; 15	32–37	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; कीटविद्ध; पत्र चिपके हुए हैं।
26.5×12 16; 42	7	,,	1818	लि क.नानजो; लि.स्था.भावनगर
30×16.5 13; 40	128–131	,,	17 वीं श.	जीर्णोद्धरित प्रति
26.5×12 19; 44	7	,,	1755	लि.क. आर्याजीवो; पत्र त्रुटित
26×11 13; 38	3 (तृतीय)	अपूर्ण	1710	लि.क. देवविमल; लि.स्था मंडपाचल; मात्र अंतिम तीसरा पत्र है।
30×16.5 13; 40	8–14	पूर्ण	17 वीं श.	र का 1719; र.स्था.शेखपुर; अंत में समयसुन्दर कृत स्तवन है।
15×16 14; 14	93–111	,,	1724	र.का. 1729
23×10.5 14; 34	7	,,	18 वीं श.	
27×12 11; 34	15	,,	1750	जीर्ण-शीर्ण; लि.क. शुभसागर
21.5×11.5 18; 36	1(द्वितीय)	अपूर्ण	19 वीं श.	जीर्ण व त्रुटित
15×16 14; 14	148–173	पूर्ण	1724	
30×16.5 13; 40	196–206	,,	1724	जोर्णोद्धरित प्रति

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(4) जै.सा.443	3777	कयवन्ना-चउपई	जयरंग शिष्य पुण्यकलश
444	4564	,,	खेमचंद
445	4868	,,	जेतसी शिष्य पुण्यकलश
446 म.	4463	कलावती-चउपई	मनरंग
447	4127	कान्हड़ कठियारा री-चउपई	मानसागर
448	5365	किराड़-रासो	
449	3746	कुमारपाल-रास	जिनहर्ष
450	3344	,,	,,
451	5399 (20)	केशीगोयम-संधि	
452	4852	केशोदास-बासनी	केशवदास
453	5343 (7)	खंधकऋषि-चौढालियो	केवलमुनि

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25×10.5 14;40	9–21	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्र 1-8 अप्राप्त
31×12.5 14;44	2–54	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; प्रथम पत्र व अंतिमांश अप्राप्त
25.5×11.5 15;38	21	पूर्ण	1832	लि.क. चमनसौभाग्य लि. स्था. जांझलवास
25.5×11 13;38	4	,,	17 वीं श.	र.का. 1580; र.स्था. खम्भात; इसका आदि भाग जैन-गुर्जर कवियों का इतिहास, भाग-3 पृ. 574, अंतिम भाग-2 पृ. 134 पर है। पाठभेद में नवीनता है। यह प्रति प्राचीन व शोभन प्रति है।
29×11.5 11;30	12	,,	1900	र.का.1747; लि.क.शिवविजय; लि.स्था. वावरा
17×11 11;22	1–23	अपूर्ण	1861	पत्र 11-22 अप्राप्त
17×12 14;44	105	पूर्ण	1934	र.का. 1742; र.स्था. पाटण; लि.क. प्रधानसागर गणि; लि.स्था. फलौदी; पत्र चिपके हुए हैं।
30×14 13;48	34	अपूर्ण	20 वीं श.	
14×13 20;24	75–79	पूर्ण	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; अन्त में संस्कृत में 'शकुन विचार'
27×11 14;44	1	अपूर्ण	19 वीं श.	अन्तिमांश अप्राप्त
17.5×13.5 11;20	19–24	पूर्ण	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(4) जै.सा. 454	3766	खंधककुमार-चौढालियो	जैमल
455	4200	खीच रो रासो	
456	5420 (7)	गजसुकुमाल-चरित्र	विजयकीर्ति
457	5405 (14)	गुणतीसी-भावना (पद्य)	
458	4882	गुणवर्म-रास	प. ज्ञानसागर गणि शिष्य विद्यासागरसूरि
459	4863	गौतमपृण्छा-चउपई	मुनि लावण्यसमय
460	5271 (17)	,,	,,
461	5066	गौतमरास	विनयप्रभ
462	5271 (27)	गौनमस्वामी-रास	
463	5405 (18)	,,	
464	5219	चउपई-स्फूट पत्र	
465	5271 (23)	चतु:प्रत्येक वुद्ध प्रबन्धक	समयसुन्दर
466	5420 (23)	चतुरप्रकार धर्मसंवाद-चौढालियो	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25.5×12 12;32	5	पूर्ण	19 वीं श.	र.का. 1811
24.5×10.5 28;25	1	"	1757	जीर्ण-शीर्ण; पृष्ठ भाग पर नक्षत्रों के नाम हैं।
13.5×11.5 12;20	9-11	"	19 वीं श.	
18×11 10;22	81–83	"	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण व कीटविद्ध
26×11 13;50	86	अपूर्ण	19 वीं श.	र.का. 1797; पत्र 1-2 व अन्तिमांश अप्राप्त
26.5×12 11;32	8	पूर्ण	1737	प्राचीन; लि.क. मुनि भाग्यविजय
30×16.5 13;40	115-121	"	17 वीं श.	
25×11 15;44	2–3	"	19 वीं श.	जीर्ण व त्रुटित; र. का. 1412; प्रथम पत्र अप्राप्त
30×16.5 13;40	183–186	"	17 वीं श.	र.का. 1412
18×11 12;22	100–106	"	18 वीं श.	जीर्ण; त्रुटित व पत्र चिपके हुए
26×10.5 16;62	1	अपूर्ण	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; अन्तिम पत्र मात्र
30×16.5 13;40	138–175	पूर्ण	17 वीं श.	र. का. 1664; र.स्था. आगरा; जीर्णोद्धरित प्रति
13.5×11.5 12;20	61–66	अपूर्ण	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(4) जै.सा. 467	4798	चन्द-चउपई	चन्द
468	5172	,,	विद्यारुचि शिष्य हर्षरुचि
469	5399 (23)	चंदनबाला चरित्र-चउपई	
470	4464 (2)	चन्दनमलयागिरि-चउपई	भद्रसेन
471	5404 (101)	,,	,,
472	5082	,,	
473	5335 (2)	,,	
474	5274 (3)	चन्दनमलयागिरि की वार्त्ता	भद्रसेन
475	4122	चन्द नरेश-रास	कवियण
476	5399	चरित्र-मनोरथ-माला	विनय-वाचक
477	3975	चित्र संभूति ऋषिरास	ज्ञानसागर
478	4152	चेतन की ढाल ग्रादि	चेतन
479	4295	चेलणा राणीको-चौढालियो	रायचन्द

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25.5×11.5 14; 38	22–89	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्रांक 24-25 व आद्यन्त अप्राप्त
24×10.5 13; 38	89	,,	18 वीं श.	र.का. 1748; प्रथम पत्र अप्राप्त
14×13 20; 24	87–89	,,	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
21×10 9; 22	4–23	पूर्ण	18 वीं श.	प्राचीन; पत्रांक 4 5,9,10,15 19 एक ओर लिखित
13×21 24; 18	96–105	,,	1802	लि.क. घासी ब्राह्मण; लि. स्था. चाटसू; पत्रांक 106-139 रिक्त
26×11 13; 32	20-22	अपूर्ण	1824	लि.क. नवनिधिविजय; पत्र 1-19 अप्राप्त।
16×21 16; 17	47–58	,,	19 वीं श.	पत्रांक 44-46 रिक्त
16.5×22 25; 20	13–19	पूर्ण	1849	
25×11 14; 38	29	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्रांक 2 अप्राप्त; जीर्ण-शीर्ण
14×13 20; 24	71–74	पूर्ण	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
26×12 17; 36	25	,,	1762	र.का. 1731; र. स्था. शेषपुर; लि. क. अमरविजय; लि. स्था. विद्यापुर
18.5×13 55; 14	1 (खरड़ा)	,,	20 वीं श.	
24.5×11 16; 32	3	,,	1940	र.का. 1830; लि. क. ज्ञान; लि. स्था. बीकानेर

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(4) जै.सा.480	5359 (4)	चौबीस-चौक	अमृत शिष्य विवेकविजय
481	5375 (57)	जम्बूकुमार-चौढालियो	
482	5375 (40)	जम्बूस्वामी-चौढालियो	दुर्गादास
483	3988	जम्बूस्वामी-रास	कुशलविजय
484	5242	,,	जयमल
485	5399 (22)	जिनपालित जिनरक्षित चरित्र-चउपई	खेमराज मुनि
486	5349 (24)	जिनप्रतिमा-स्थापन-रास	पासचन्द्रसूरि
487	4218 (1)	जिनप्रतिमा हुण्डी-रास	जिनहर्ष
488	4419 (4)	,,	,,
489	3769	जिनरक्ष-जिनपाल-चौढालियो	उदयरतन
490	5404 (5)	जोगीरासो	
491	5300 (2)	,,	
492	3755	ज्ञानकला-चउपई	ज्ञानसागर

नाप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
18×12 12;21	8–17	पूर्ण	20 वीं श.	र. का. 1849
17.5×11 16;18	12–17	अपूर्ण	19 वीं श.	
17.5×11 16;18	1–13	पूर्ण	19 वीं श.	पत्रांक 1-6 अप्राप्त
23.5×10.5 15;42	25	,,	19 वीं श.	र.का. 1738; लि.क. हस्तिविजय; लि. स्था. श्रीपत्तनपुर
25×10.5 19;46	10	,,	1841	लि.क. नंगाजी साध्वी; लि.स्था. कुचामण; कीटभक्षित
14×13 20;24	84–87	,,	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
16×10 11;20	60–64	,,	18 वीं श.	लि.क. ऋषि शोभाचन्द्र
25.5×11.5 14;29	4	,,	19 वीं श.	र. का. 1725
24.5×11.5 14;40	27–29	,,	19 वीं श.	र. का. 1725
25.5×12 15;40	3	,,	20 वीं श.	र.का, 1867; र.स्था. बीकानेर
13×21 24;18	10वां	अपूर्ण	18 वीं श.	
13×17.5 16;18	24–27	पूर्ण	19 वीं श.	
25.5×11.5 13;34	50	,,	1785	लि.क. साह; लि.स्था. जहानाबाद

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(4) जै.सा. 493	5090	ढाल-संग्रह-चउपई	
494	3635	ढालसागर-हरिवंश-प्रबन्ध	गुणसुन्दरसूरि
495	3990	ढोलामारू-चउपई	कुशललाभ
496	3758	ढोलामारुवणी-चउपई	कुशललाभ
497	4442	तेजसार-रास	कुशललाभ
498	3759	थावच्चा सुत-चउपई	समयसुन्दर
499	3676	थावच्चा पुत्र नो चौढालियो	
500	5375 (45)	दशार्णभद्र-चौढालियो	कुशल
501	4419 (1)	,,	धर्मसिंह पाठक
502	5086	दानशील-तप-भावना	
503	5375 (42)	दानशील-तप-भावना-चउपई	समयसुन्दर
504	5275 (1)	,,	,,
505	5416 (19)	,, -चौढालियो	,,

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण / अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25.5×10.5 16; 40	3–29	अपूर्ण	18 वीं श.	पत्रांक 1-2 अप्राप्त
25×12 15; 40	134	पूर्ण	1925	लि. क. ऋषि सुकुलचन्द्र लि.स्था. लाटोती
22.5×11 15; 38	24	"	18 वीं श.	र.का. 1677; लि.स्था. जैसलमेर
24.5×10 16; 38	21	"	1737	र.का. 1677; र.स्था. जेसलमेर; लि.क. बेमासागर; लि.स्था. श्री सथाणानगर
25.5×11 17; 50	12	"	1765	र. का. 1624; र.स्था वीरपुर; जीर्ण-शीर्ण
25.5×11.5 15; 36	16	"	19 वीं श.	
26.5×10.5 16; 46	1	"	1885	लि. क. सत्याजी; लि.स्था. पचेवर
17.5×11 16; 18	34–37	"	19 वीं श.	र.का. 1782
24.5×11.5 14; 40	1–3	"	19 वीं श.	र.का. 1757; र.स्था. मेड़तानगर
16×11 16; 36	5	अपूर्ण	19 वीं श.	जीर्ण; कीटविद्ध
17.5×11 16; 18	17–25	पूर्ण	19 वीं श.	
25×17 14; 24	1–7	"	1834	र.का. 1662; र.स्था. सांगानेर
15×12 11; 16	27–39	"	1869	र.का. 1662; र.स्था. सांगानेर; लि.क. विजयचंद

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(4) जै.सा.506	5349 (30)	दानशील-तप-भावना-चौढालियो	समयसुन्दर
507	5405 (17)	,,	,,
508	5377 (4)	,,	,,
509	5420 (21)	,,	,,
510	5271 (24)	,, -रास	,,
511	7410	देवकी-चउपई	
512	3742	देवराज-वच्छराज-चउपई	सहजकीर्ति
513	4709	द्रौपदी-चरित्र	गोविन्द मुनि
514	5366 (8)	द्वादशभावना	
515	4274	धन्ना-चउपई	
516	5411 (5)	धर्मसी-भावना	धर्मसी
517	3876	,,	,,
518	5399 (3)	नन्दराय-चउपई	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
16×10 11;20	114–125	पूर्ण	18 वीं श.	र.का. 1620; र.स्था. सांगानेर
18×11 12;22	87–100	,,	18 वीं श.	जीर्ण व कीटविद्ध
14.5×10.5 10;16	88–90	अपूर्ण	18 वीं श.	अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण
13.5×11.5 12;20	37 वां	पूर्ण	1828	लि.क.दौलतराम; लि.स्था.ढूढूनगर जीर्ण-शीर्ण
30×16.5 13;40	175–179	,,	17 वीं श.	र.का.1662; जीर्णोद्धरित प्रति
25×11.5 16;30	14	अपूर्ण	19 वीं श.	
23.5×12.5 14;34	41	पूर्ण	1847	र.का. 1645; र.स्था. खींवसर; लि.स्था. फलौदी
27×12 16;36	26	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्रांक 15वां दो बार तथा पत्रांक 2,5-6,10,13,17-19 अप्राप्त
16.5×11 19;30	11–16	पूर्ण	1850	लि.स्था. जैसलमेर
25×11 17;47	25	अपूर्ण	18 वीं श.	पत्रांक 5-6 व अंतिमांश अपूर्ण
13×9 8;12	80–122	पूर्ण	1866	
25.5×10 9;34	10	,,	1785	लि.क. कनकरत्न
14×13 20;24	23–30	,,	18 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(4) जै.सा. 519	5375 (41)	नरक रो चौढालियो	गुणसागर
520	4465	नलदमयन्ती-चौपई	समयसुन्दर गणि
521	4429	नवकार-रास	गौड़ीदास
522	4891	"	
523	4955	नेमिजी रो बारहमासो	
524	5416 (2)	"	जिनहर्ष
525	4954	"	ऋद्धिहर्ष
526	4605	नेमिचन्द-बारहमासा	
527	4423	नेमिनाथ का बारहमासा	
528	4951	"	
529	5356 (2)	नेमिनाथ-रास	मुनि पुण्यरत्न
530	5375 (39)	"	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17.5×11 16; 18	14–16	पूर्ण	19 वीं श.	
25×11 15; 54	26	,,	18 वीं श.	अति जीर्ण; र.स्था. मेड़ता
23×10 14; 40	9-32	,,	18 वीं श	र.का. 1755; लि क. खुशहाल-विजय; लि. स्था. आमोद; पत्रांक 1-8 अप्राप्त
24.5×11 12; 42	1	,,	18 वीं श.	
22.5×11 12; 34	1	,,	1929	लि. क. गणेश; लि.स्था. जयपुर
15×12 11; 16	7–8	,,	1869	
30.5×11.5 32; 22	1	,,	20 वीं श.	जीर्ण शीर्ण
24.5×10.5 14; 34	2(द्वितीय)	अपूर्ण	19 वीं श.	जीर्ण; अंत में कवि गंगकृत दोहे हैं।
25×11 11; 36	7	पूर्ण	19 वीं श.	पत्र चिपके हुए हैं।
22×10.5 12; 30	1	,,	20 वीं श.	लि.क. प्रेमचद
12×12.5 16; 15	11–16	,,	19 वीं श.	जीर्ण; कीटविद्ध; पत्र चिपके हुए
17.5×11 16; 18	32–37	अपूर्ण	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(4) जै.सा. 531	5353 (11)	नेमिनाथ को व्याहलो	
532	4014	नेमिनाथ-शीलरास	विजयदेवसूरि
533	5364 (26)	नेमिराजीमती-बारहमासा	कवियण
534	5358 (16)	,,	जिनहर्ष
535	4953 (1)	,,	खुस्यालचन्द्र
536	4953 (2)	,,	कवियण
537	5271 (20)	नेमिराजिमती-शीलरास	विजयदेवसूरि
538	4711 (4)	नेमिराजुल-बारहमासा	खुशहालचन्द
539	4600	,,	राजरतन
540	4724	,,	अमरविलास
541	4492	नेमिराजुल-वेल	
542	5377 (8)	नेमिराजीमती-रास	पुण्यरतन

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15.5×12 13;32	159–166	पूर्ण	19 वीं श.	
26×11.5 12;38	10	,,	19 वीं श.	
18×9 9;20	59–61	,,	1896	
17×11 11;16	95–96	,,	18 वीं श.	
25×10 15;40	1	,,	1852	लि.क.चन्द्रमणि; लि.स्था.बीकानेर
25×10 15;40	1	,,	1852	,, खुस्यालचंद द्वारा लिखित नेमिनाथ राजमती बारहमासा का अंतिमांश इस कृति के प्रारम्भ में है।
30×16.5 13;40	121–128	,,	17 वीं श.	जीर्णोद्धरित प्रति
24×10.5 12;34	3–4	,,	19 वीं श.	र. का. 1798
25.5×12 12;26	2	,,	19 वीं श.	
22×10.5 45;16	1	,,	1880	लि.का. 1880
22.5×11.5 15;40	9	अपूर्ण	18 वीं श.	र.का. 1772; पत्रांक 8 अप्राप्त
14.5×10.5 10;16	19–27	पूर्ण	1771	लि.क. धर्मरंग मुनि लि.स्था. बीकानेर

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(4) जं.सा. 543	5399 (21)	नेमिराजर्षि-चउपई	मुनि खेमराज
544	4953	पंचपाण्डव-चउपई	
545	5354 (4)	पचेन्द्रिय-वेलि	
546	4129	पांचपाण्डव री ढाल	
547	4952	पारसनाथजो रो बारहमासो	जिनहर्ष
548	4329	पुण्य-ऊपर-चउपई	
549	4689	प्रतिक्रमरण-चउपई	दानविजय शिष्य तेजविजय
550	5375 (46)	प्रत्येक बुद्ध रास	समयसुन्दर
551	3747	प्रदेशी-राजानी-संधि	जैमल
552	5366 (29)	प्रक्षयनिधि-प्रवचन-सारोद्धार	
553	4123	प्रियमेलक-चउपई	समयसुन्दर
554	5243	"	"
555	5212	फाग रो रास	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
14×13 20;24	80–83	पूर्ण	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
26.5×11 14;52	26	अपूर्ण	18 वीं श.	पत्रांक 1, 5 अप्राप्त
15×12.5 10;17	38–40	पूर्ण	18 वीं श.	40 वां पत्र दो बार
22.5×11 19;36	1	"	19 वीं श.	लि.क. बीजू; लि.स्था. किशनगढ
24×10 14;36	1	"	20 वीं श.	
24.5×11 13;28	13	"	20 वीं श.	
27×12 18;54	12	"	19 वीं श.	र. का. 1730
17.5×11 16;18	37–40	"	19 वीं श.	
26.5×12 14;40	19	"	19 वीं श.	र.का. 1877
16.5×11 17;30	35–36	अपूर्ण	19 वीं श.	
27.5×14 12;30	12	पूर्ण	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
25.5×11 15;38	8	"	20 वीं श.	र.का. 1762; र.स्था. मेड़ता
22×15.5 17;27	7	अपूर्ण	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(4) जै.सा. 556	5399 (4)	बलभद्र-वेलि	सालिग
557	5375 (42)	बारहभावना-संधि	
558	5404 (128)	बारहमासा	शिवचन्द
559	4956	बारहमासा के स्फुट दोहे	
560	4747	बुद्धिरासो	शालिभद्र
561	5399 (7)	ब्रह्मचर्य दश समाधिकुलक (उत्तराध्ययनसूत्रान्तर्गत)	
562	4814	ब्रह्मबावनी	निहालचन्द शिष्य वाचक हर्षचन्द्र
563	5344 (1)	भरथबाहुबली-रास	
564	5348 (4)	,,	विश्वभूषण
565	5336 (2)	भवावलि	
566	3667	भाव-दलाली (पद्यात्मक)	
567	3897	भावना-विलास	राजकवि
568	4520 (2)	,,	राजकवि लक्ष्मीवल्लभ

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
14×13 20; 24	30–32	पूर्ण	18 वीं श.	
17.5×11 16; 18	26–30	अपूर्ण	19 वीं श.	
13×21 24; 18	179–180	पूर्ण	18 वीं श.	
25.5×11.5 14; 42	1	"	19 वीं श.	त्रुटित
26×10.5 13; 38	2	"	1806	लि.क. अजबचन्द्र लि.स्था. सादड़ी ग्राम
14×13 20; 24	44-46	"	18 वीं श.	अन्त में संस्कृत में 'भारतीस्तोत्र' है।
27.5×12 14; 46	5	"	19 वीं श.	र.का. 1801; र.स्था.मकसूदाबाद अत्यन्त जर्जरित
12×14.5 9; 12	2–12	"	1853	लि.क. लालजी
14.5×10 12; 11	62–80	"	18 वीं श.	
16.5×21.5 18; 20	15–20	"	19 वीं श.	21 वां पत्र निरंकित
26.5×11.5 18; 56	3	"	19 वीं श.	
24×12 17; 18	4	"	1895	र.का. 1727; लि.क.ज्ञानधर्म मुनि लि.स्था. पाली
24.5×10 11; 32	3–10	"	1832	र.का, 1727 लि. स्था. स्वथान नगर

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(4) जै.सा. 569	5270	भावना-विलास	लक्ष्मीवल्लभ उपाध्याय
570	4433	मृगावती-चरित्र-चउपई	समयसुन्दर
571	4434	,,	,,
572	5229	मदनरेखा-चउपई	
573	3575	मधुमालती-चउपई	
574	5275 (4)	,,	चतुर्भुजदास
575	5310 (3)	मनोहर-प्रबन्ध	लावण्यसमय गणि
576	4137	मयणरेहा-चउपई	हीर सेवग
577	3749	मलयसुन्दरी-चौपई	जिनहर्ष
578	3752	मानतुंग-मानवती-चौपई	मोहनविजय
579	3753	मानतुंग-मानवती-रास	,,

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
27.5×13.5 9;34	9	पूर्ण	19 वीं श.	र.का.1727; प्रथम पत्र कीटविद्ध व तैलसिक्त
25×10.5 14;40	24	"	1804	लि.क. तिलकविजय गणि लि. स्था पीपलाज (मेरवाड़ा-अजमेर) पत्र चिपके हुए हैं।
24.5×11 13;42	40	अपूर्ण	1681	लि.क. श्यामदास; पत्रांक 7वां व 20 से 24 अप्राप्त
25.5×10.5 15,45	2–5	पूर्ण	1871	लि.क. मेवण भीखा; प्रथम पत्र अप्राप्त
25.5×11.5 14;26	50	अपूर्ण	1847	लि.क. माणकचन्द; लि स्था.जाबद पत्रांक 8-49 अप्राप्त
25×17 14;24	21–95	पूर्ण	1834	लि.क. नवनिधिविजय लि.स्था. रूपनगर
21 5×13.5 16;30	37–105	"	1675	लि.क सौभाग्यहर्ष लि.स्था. भाणपुरा; पत्रांक 47-50 अप्राप्त; पत्र 107 व 108वां चित्रित
25×12.5 16;40	7	"	1942	र.स्था. केकड़ी; लि.क. गिरधारी-लाल; लि स्था. नागौर
24.5×10.5 15;52	83	"	1760	लि.स्था. श्रीपत्तन
26×11.5 15;38	36	"	1842	लि.क. खुस्यालचन्द
26.5×11 13;34	40	"	1817	लि. क. गजेन्द्रविजय; लि. स्था. घोघोंदानगर; अंतिम पत्र चित्रित

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(4) जै.सा. 580	4790	मानतुंग-मानवती-रास	मोहनविजय शिष्य रूपविजय
581	3754	मुनिपतिरास	सिंहकुल
582	5348 (5)	मुनिवर-मकरध्वज	मुनि धर्मदास
583	5375 (47)	मेघकुमार-चौढालियो	कवि कनक शिष्य जिनमाणिक्य
584	4818 (7)	,,	ऋषि जादव
585	5399 (1)	मेतारिज ऋषि-चरित्र-चउपई	हेमराज
586	3683	मोती कपासिया संवाद-चउपई	श्रीसार
587	4757	रंग-बावनी	जिनरंगसूरि
588	3761	रतनपाल ऋषि चरित्र-चउपई	मोहनविजय शिष्य रूपविजय
589	5366 (2)	रतनहास-चउपई	लक्ष्मीवल्लभ
590	4116	रत्नचूड़-रास	
591	4554	रत्नचूड़ व्यवहारी-चउपई	कनकविधान
592	4553	रत्नपाल-चरित्र-रास	मोहनविजय

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
26×11.5 14;30	8–48	अपूर्ण	19 वीं श.	र. का. 1760; पत्रांक 1-7 व अन्तिमांश अप्राप्त
26×10.5 18;54	14	पूर्ण	1644	र.का. 1550; लि.क. जयकमल; लि.स्था. तोरणा ग्राम
14.5×9.5 12;11	81-96	,,	18 वीं श	पत्रांक 96-97 पर 'मालारोहण'
17.5×11 16;18	40–43	,,	19 वीं श.	
23×10.5 14;32	3–4	,,	19 वीं श.	
14×13 20;24	4–7	अपूर्ण	18 वीं श,	आद्यन्त अपूर्ण
24.5×11 14;30	5	पूर्ण	1863	लि.क. शिवचन्द
24.5×11 13;36	4–6	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्रांक 1-3 तथा अंतिमांश अप्राप्त
25×11.5 16;30	58	पूर्ण	1875	लि.क. दूला
16.5×11 19;30	1–8	,,	19 वीं श.	पत्रांकन स्वतंत्र
26×11 16;32	14	,,	19 वीं श.	
25×11.5 15;38	22	,,	1852	र.का. 1708; लि.क.चतुरनिधान; लि.स्था. मौजगढ; तड़कने पत्र
26×12 15;46	39	,,	1857	लि.क. शिवलाभ लि.स्था. भोपावर नगर

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(4) जै.सा. 593	4556	रत्नसारकुमार-रास	वाचक सहजसुन्दर
594	3775	रत्नशेखरनृप-रत्नवती-रास	जिनहर्ष
595	3987	रामकृष्ण-चतुष्पदी	लावण्यकीर्ति
596	5399 (9)	रोहणिया चोर-चउपई	
597	4874	लीलावती-चउपई	
598	4121	लीलावती-रास	
599	4701	बनारसी-विलास	बनारसीदास (अग्रवाल) गर्ग
600	4641	,,	,,
601	5403 (2)	,,	,,
602	4686	वयरस्वामी-ढाल	जिनहर्ष
603	5299 (1)	वर्द्धमान-जिनवेलि	
604	4117	वलकल-चीरी-चउपई	समयसुन्दर
605	5262	वसुदेवकुमार-चउपई	हर्षकुल

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
26×11 16;44	10	पूर्ण	1828	र.का. 1582; जीर्ण-शीर्ण
26×12.5 15;42	24	„	1866	र.का. 1759; लि.स्था. पाली; जीर्ण-शीर्ण; पत्र चिपके हुए हैं।
26×11 17;52	27	„	18 वीं श.	र.का. 1677; र.स्था. विक्रमपुर
14×13 20;24	50–58	„	18 वीं श.	र.का. 1589
26×11.5 18;46	2–30	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्रांक 11, 15-28 अप्राप्त
26×11 13;36	7	पूर्ण	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
24.5×11.5 14;42	68	„	1738	लि.क. दीपचंद; लि.स्था. रामपुरा; शोभन प्रति
32×15 16;38	66	अपूर्ण	19 वीं श.	कीटविद्ध व त्रुटित
26×14.5 13;26	7–109	पूर्ण	1818	लि.क. नागजी; लि.स्था. पुर (मेवाड़)
26.5×12 10;32	7	„	19 वीं श.	र.का. 1750; जीर्ण-शीर्ण
14×12.5 15;18	1–6	„	18 वीं श.	5वां पत्र अप्राप्त
25.5×10.5 15;36	11	„	19 वीं श.	
26.5×10.5 11;38	22	„	17 वीं श.	र.का. 1557

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(4) जै.सा.606	4887	वसुदेव-चउपई	
607	5375	वस्तुपाल-तेजपाल-रास	समयसुन्दर
608	5246	विक्रम-चौबोली-चउपई	अभयसोम
609	4351	विक्रम-प्रबन्ध	लाभवर्द्धन
610	3866	विक्रमभूपाल-पंचदण्ड-चतुष्पदी	लक्ष्मीवल्लभ गणि
611	3764	विक्रमसेन-चतुष्पदी	मानसागर शिष्य जीतसागर
612	3765	विक्रमसेन-चउपई	
613	5196	विक्रमादित्य-चरित्र	खेमचन्द शिष्य मुक्तिचन्द
614	5195	विक्रमादित्य-चरित्र पंच-दण्ड-साधन	लाभवर्द्धन शिष्य शान्तिहर्ष
615	4466	विक्रमादित्य-चउपई	लाभवर्द्धन
616	4867	विक्रमादित्य-चौबोली-चउपई	अभयसोम

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
26.5×11.5 15; 38	10	अपूर्ण	20 वीं श.	अंतिमांश अपूर्ण
17.5×11 16; 18	58–61	पूर्ण	19 वीं श.	र.का. 1682
25×10 17; 42	10	,,	1774	र.का. 1724; लि.क. शांतिसागर; लि.स्था. समेल नगर
25×11.5 14; 42	8–18	अपूर्ण	1789	जीर्ण-शीर्ण; र.स्था. जैतारण; लि.स्था. राजनगर; पत्र 1-7 अप्राप्त
29.5×13.5 13; 52	79	पूर्ण	1875	र.का. 1738; लि.क. जयदेव; पत्रांक 11-12 एक ही हैं।
25.5×11 17; 40	26	,,	1787	लि.क. जसवन्तसागर; लि.स्था. पचेड़ा; जीर्ण-शीर्ण
25×10.5 15; 40	34	अपूर्ण	19 वीं श.	
26.5×13 15; 32	223	,,	1788	लि.स्था. मालपुरा; पत्रांक 1-21, 39-194 अप्राप्त
25.5×11.5 13; 38	41	पूर्ण	19 वीं श.	र.का. 1733
26.5×11 20; 60	10	,,	1771	र.का. 1727; र.स्था. जैतारण; लि.क. रूपचंद मुनि; लि.स्था. श्री नाथाजी का गुढ़ा
22×11 13; 38	13	,,	1938	र.का. 1724; लि.क. लक्ष्मीविजय

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(4) जै.सा. 617	4766	विचार-चौसठी	नन्दसूरि
618	4842	विमलमंत्री-प्रबन्ध	लावण्यसमयगणि
619	3571	वैदर्भी-चउपई	प्रेमऋषि
620	5271 (22)	व्यवहार-शुद्धि-साधु-चतुष्पदी	समयसुन्दर
621	4165	शकुन दीपिका-चउपई	लाभवर्द्धन
622	4508	शत्रुञ्जय-उद्धार-रास	नयसुन्दर
623	5375(A) (7)	शत्रुञ्जय-तीर्थरास	समयसुन्दर
624म.	3757	शत्रुञ्जय-रास	जिनहर्ष
625	4495	,,	समयसुन्दर
626	5310 (1)	,,	नयसुन्दर
627	5356 (1)	,,	,,

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
14×27 25; 14	4	पूर्ण	1796	लि.क. भागचंद; र.स्था. खंभात; प्रारम्भ में सं. 1796 में लिपिकृत वृद्धिशान्ति का अंतिमांश है।
27×11 13; 40	3–52	अपूर्ण	18 वीं श.	पत्र 1-2 व अंतिमांश अपूर्ण
24×10 12; 38	8	पूर्ण	1826	लि क. ऋषि जीवणदास; लि.स्था. किशनगढ़
30×16.5 13; 40	131–138	,,	17 वीं श.	र.का. 1696; र.स्था. अहमदाबाद; जीर्णोद्धरित प्रति
25×11.5 15; 46	15	,,	1821	लि क. सदानंद
25×11 5 11; 32	9	अपूर्ण	1876	त्रुटित व कीटविद्ध; लि.स्था श्रीपत्तन; पत्रांक 1 व 8वां अप्राप्त
17.5×11 16; 18	11	,,	19 वीं श.	पत्र 1-5 अप्राप्त
25×11.3 15; 52	166	पूर्ण	1758	र.का. 1755; र.स्था. श्रीपत्तन; लि.क. त्र्यविकेश्वर; लि स्था. श्रीपत्तन (पाटण); रचनाकाल के समीपवर्ती समय की व उसी स्थान पर की गई प्रतिलिपि
25×11 13; 38	6	,,	18 वीं श.	र.का. 1682; र.स्था. नागौर
21.5×13.5 16; 30	28–29	अपूर्ण	1675	लि.स्था. भाणपुरा; पत्र 1-27 अप्राप्त
12×12.5 16; 15	1–11	पूर्ण	19 वीं श.	कीटविद्ध व पत्र चिपके हुए

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(4) नै.सा.628	3751	शालिभद्र-चउपई	जिनराजसूरि
629	4583	,,	
630	4586	,,	जिनराजसूरि
631	3630	,,	,,
632	4583	,,	,,
633	4729	,,	,,
634	4872	,,	,,
535	4873	,,	,,
636	5032	,,	,,
637	5239	,,	,,
638	5223	,,	,,
639	5380 (1)	,,	,,

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
26×11 14;42	19	पूर्ण	19 वीं श.	लि.स्था. बीकानेर, जीर्ण-शीर्ण; पत्र चिपके हुए
23×11 18;40	2–12	अपूर्ण	19 वीं श	सचित्र
29×12.5 11;34	23	,,	19 वीं श.	र.का. 1678; अंतिमांश अपूर्ण
23×11 11;24	39	पूर्ण	19 वीं श.	र.का. 1678; पत्रांक 1 चित्रित
23.5×11 18;40	2–12	अपूर्ण	19 वीं श,	र का 1678
25.5×11 14;32	5–22	,,	1792	लि क. नवनिधिसागर; लि.स्था. रूपनगर; महाराजा राजसिंह (उदयपुर) के राज्य में; पत्र 1-4 अप्राप्त
25×11 16;40	14	पूर्ण	1794	लि.क. ऋषि पं. मोहनजी
26×11 14;44	18	,,	1786	लि क. सौभाग्यरुचि शिष्य गौतमरुचि; लि.स्था. रिछेल नगर
25.5×11 13;44	8	अपूर्ण	17 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
26×12 17;42	15	पूर्ण	1882	र.का. 1678; लि.क. तीर्थगणि; लि.स्था. नारदपुरी (नाडोल)
26.5×13 11;32	30	,,	1897	लि.क. ऋषि रायचंद; लि.स्था. लसकर; कीटभक्षित व त्रुटित
15×16 14;14	39-92	,,	1724	लि.क. मानजी गणि; लि.स्था. सूरत; पत्र 1-38 अप्राप्त

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(4) जै.सा. 640	5271 (1)	शीलभद्र-रास	जिनराज
641	4400 (36)	शील की ढाल आदि ढाल-संग्रह	
642	5380 (3)	शील-रास	विजयदेवसूरि
643	4759	शील-रासो	धर्मसी (धर्मसिंह)
644	4125	शीलवन्ती-रास	
645	5260	शीलोपरि चंपकमाला-सती-प्रवन्ध	सौभाग्यसागरसूरि
646	3756	शुक-रास	ज्ञानसागर
647	5349 (21)	श्रावकातिचार-चउपई	पासचन्द्र
648	3743	श्रीपाल-चउपई	जिनहर्ष
649	3570	श्रीपाल-रास	विनयविजय एवं यशोविजय
650	4800	,,	,,
651	4542	,,	ब्रह्मरायमल

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
30×16.5 13;40	1–8	अपूर्ण	17 वीं श.	कीट भक्षित
25×11.5 12;34	27–29	,,	19 वीं श.	
15×16 14;14	111–131	पूर्ण	1724	
25×11 12;28	5	,,	1857	लि.क. शांतिरत्न; लि.स्था.देशनोक र.स्था. बीकानेर
24×11 10;40	10	अपूर्ण	19 वीं श.	
26.5×11.5 19;44	20	,,	1644	
25.5×11.5 11;38	54	पूर्ण	19 वीं श.	
16×10 11;20	45–54	,,	1772	
27×12.5 15;38	30	,,	1891	र.का. 1740; र.स्था. पाटण; लि.स्था.मिर्जापुर; त्रुटित,जीर्ण-शीर्ण
27×11.5 12;44	51	अपूर्ण	1866	र.का. 1738; र.स्था. राणेर; लि.क. हेमचन्द्र; लि.स्था. लिखनेड़; प्रथम पत्र अप्राप्त; जीर्ण-शीर्ण
25×12.5 13;24	2–20	पूर्ण	1858	लि.क.चेतनसिंह; प्रथम पत्र अप्राप्त अन्त में 'चैत्यवन्दन'
22×12	28	,,	19 वीं श.	र.का. 1630

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(4) जै.सा. 652	4906	श्रीपाल-रास	
653	5275 (3)	सनत्कुमार-चौढालियो	कुशललाभ
654	5399 (6)	सनत्कुमार-चउपई	धर्मसुन्दर वाचक
655	4615	सम्मेतशिखर गिरि उद्धार-रास	दयारुचि
656	4486	शाम्ब प्रद्युम्न-चउपई	समयसुन्दर गणि
657	4522	,,	,,
658	5233	,, (द्वितीय-खण्ड)	,,
659	5262	साम्ब-प्रद्युम्न-रास	,,
660	3582	सिद्धचक्रजी को रास	
661	3750	सीताराम-प्रबन्ध (राम-चरित्र)	समयसुन्दर
662	5250	सुदर्शन-रास	ब्रह्मरायमल
663	5366 (1)	सुभद्रा महासती-चौढालियो	मानसागर

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25.5×10.5 17;48	10–15	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्र 1-9 व अन्तिमांश अप्राप्त; जीर्ण-शीर्ण
25×17 14;24	16–21	पूर्ण	1834	र. का. 1789
14×13 20;24	33–44	„	18 वीं श.	
24.5×12 14;32	29	„	20 वीं श.	कीटविद्ध; र.का. 1835
25.5×10.5 16;48	16	„	18 वीं श.	र.का.1659 विजयदशमी; जीर्ण
25.5×11 12;38	29	„	18 वीं श.	र.का. 1659; र.स्था. खम्भात; पत्र तड़कने
27×11.5 14;54	18	„	18 वीं श.	
25×11 15;38	19	„	19 वीं श.	
24.5×11.5 14;40	9	„	19 वीं श.	तृतीय व चतुर्थ खण्ड की मुख्य गाथाओं का अर्थ
26×11 15;44	77	„	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
25.5×11 19;42	10	„	1830	र.का. 1629; लि.क. रतना अजेका
16.5×11 19;30	18–20	„	1850	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(4) जै.सा. 664	4419 (2)	सुभद्रा सती-चौढालियो	
665	3989	सुरसुन्दरी-चउपई (शील विषयक)	केशर कवि
666	4443	सुरसुन्दरी-चउपई	धर्मवर्द्धन
667	5269	सेठ मोतीसाह-रास	वीरविजय
668	3540	स्थूलभद्र-नवरसो	उदयरतन
669	3776	,,	,,
670	5375 (38)	,,	,,
671	5416 (16)	,,	दीप
672	5377 (10)	स्थूलभद्र-बारहमासो	लाभोदय
673	3978	स्थूलभद्र-सीयलवेलि	चिरविजय
674	5379 (5)	स्थूलभद्र चरित्र-चउपई	
675	3760	हरिचन्द-चउपई	कनकसुन्दर
676	4673	हरिबल-रास	कुशलसंयम

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
24.5×11.5 14;40	3–5	अपूर्ण	19 वीं श.	तीसरी ढाल तक
24.5×10 15;40	12	पूर्ण	1781	लि.क. गुलालरुचि
26×11 16;36	2–26	,,	1825	र.का.1736; र.स्था.वेनातटनगर; लि.क. जैतसी; प्रथम पत्र अप्राप्त
25×13 11;30	6	,,	1910	लि.क. अमृतविजय मुनि
24.5×10 16;40	5	,,	1821	लि.क. खुशाल सौभाग्य शिष्य सौभाग्य गणि
28.5×13.5 14;30	7	,,	19 वीं श	र.का. 1759
17.5×11 16;18	26–32	,,	19 वीं श.	
15×12 11;16	1–19	,,	1869	लि.क. पं. विजयचन्द पत्रांकन स्वतन्त्र
14.5×10.5 10;16	32–33	,,	18 वीं श.	
25×11 14;38	10	,,	1880	र.का. 1862; र.स्था. राजनगर; लि.क. कीर्तिमल्ल; जीर्ण-शीर्ण
14.5×11 16;20	47-51	,,	19 वीं श.	
26×11.5 11;34	21	,,	19 वीं श.	र.का. 1697; अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण; क्षतिग्रस्त
26.5×11.5 14;44	2–24	अपूर्ण	1753	लि.स्था. खम्भात; लि.क.नेमविजय प्रथम पत्र अप्राप्त

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(4) नै.सा.677	3678	हरुंजा को चौढालियो	
22(5) 678	3572	उदायन राजा-सम्बन्ध	
679	5251	कालिकाचार्य-कथा-भाषा	
680	4288	कालिकाचार्य-कथा	जयकीर्त्ति गणि
681	3589	कालिकाचार्य-कथा-बालावबोध	
682	5271	गजसुकुमाल-चरित्र	
683	4756	गुणमंजरी-कथा	
684	4100 (24)	चंदनमलयागिरि-वार्त्ता (प्रथम कलिका)	
685	4106	"	
686	4229	चन्द्र-प्रद्योतन-दृष्टान्त	
687	4399	चन्द्रप्रभ-चरित्र	
688	4722	चित्रसेन-पद्मावती-कथा	सोमकलशसूरि
689	5344 (7)	चौवीस तीर्थंकर री बात	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25.5×11.5 17;38	3	अपूर्ण	1885	लि.क. बाजू; लि.स्था. पोखरजी; प्रथम पत्र अप्राप्त
24.5×10.5 15;38	3	पूर्ण	18 वीं श	
26.5×12.5 16;40	12	,,	19 वीं श.	
26×10.5 13;38	16	अपूर्ण	1712	लि.क.मानविजय; लि स्था.मालपुरा
26×11 10;32	19	पूर्ण	1877	लि.क. पं. गोवर्द्धन
30×16.5 13;40	276–294	,,	18 वीं श.	
26.5×13.5 12;38	4	,	19 वीं श.	र.का. 1740; लि.क. रामसिंह; लि.स्था. सहारनपुर
22×10.5 11;30	25वां	,,	19 वीं श.	
28×12 21;48	6	,,	1914	लि.क. अमहरता; लि.स्था. मसूदा
25.5×11 13,43	4	,,	1667	लि.क. श्रीचन्द; लि.स्था. अहिपुर
26×11 13;38	1–5	अपूर्ण	18 वीं श.	अत्यन्त जर्जरित
27×11 13;52	18–21	,,	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; पत्रांक 1-17 अप्राप्त
12×14.5 9;12	29-32	पूर्ण	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(5) जै.सा.690	4406	जिन-चरित्र	
691	5375 (36)	,,	
692	3602	जैनकथा-संग्रह	
693	3552	ज्ञानपंचमी (सौभाग्यपंचमी) कथा	
694	4371	ज्ञानपंचमी-कथा	
695	4230	तीनमनोरथ	
696	4489	दीतवार की कथा	माऊ अग्रवाल गर्ग
697	3555	दीपमालिका-व्याख्यान	
698	4407	,,	जिनवल्लभ
699	5295 (2)	,,	
700	3694	नागकेतु की कथा (गद्यात्मक)	
701	4634	नेमिनाथ-चरित्र	
702	5267	परदेशी-प्रबोध	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24.5×12 14; 36	10–14	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्र 1-9 अप्राप्त
17.5×11 16; 18	19–21	पूर्ण	19 वीं श.	
26×11.5 18; 46	6	"	17 वीं श.	
22.5×11.5 16; 30	8	अपूर्ण	19 वीं श.	अन्तिमांश अपूर्ण है।
25.5×12 16; 41	1–2	"	19 वीं श.	
25×12.5 17; 52	1	"	19 वीं श.	अत्यन्त जीर्ण व त्रुटित
25×11 14; 46	6	पूर्ण	1769	लि.क. आर्या हठीली; प्रथम पत्र त्रुटित
21×11 5 14; 26	13	"	20 वीं श.	लि.क. कृष्णविजयचंद्र; लि.स्था. जैसोल
26 5×12 11; 30	34	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्र 1-19 अप्राप्त
19.5×31.5 14; 10	9–58	पूर्ण	20 वीं श.	पत्रांकन स्वतंत्र
24×10.5 16; 34	1	"	18 वीं श.	
21×10 11; 28	3	"	19 वीं श.	
26×11.5 14; 44	4	"	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(5) जै.सा. 703	4305	महाधनपाल की कथा	
704	5300 (8)	मोक्षमार्ग-पैड़ी	
705	4313	मौनएकादशी-कथा	
706	4323	,,	
707	4688	लघुदीपावली-कल्प	
708	4396	वर्द्धमान-चरित्र	
709	4617	वाग्विलासाद्-भोजन-विच्छिति	
710	4349	शालिभद्र-चरित्र	
711	3745 (1)	श्रीपाल-प्रवन्ध	विनयविजय शिष्य कीर्तिविजय
712	4746	सुदर्शन-श्रेष्ठि-कथा	दयारत्न
713	5344 (12)	सोलहसती री वार्त्ता	
22(6) 714	4721	अंचलगच्छ-गुर्वावली-गीत	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
26×11.5 15;48	4	पूर्ण	1825	लि.क. चन्द्रकीर्ति; लि.स्था. अहमदाबाद
13×17.5 16;18	51–54	,,	19 वीं श.	
25×11 13;40	6	अपूर्ण	20 वीं श.	
24.5×11 9;29	2–22	,,	1886	प्रथम पत्र अप्राप्त
26.5×11.5 29;80	3	पूर्ण	1796	लि.क. ज्ञानविजय
25×11.5 14;33	4-8	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्रांक 1, 3 व अंतिमांश अपूर्ण
26.5×12 15;36	3	पूर्ण	19 वीं श.	
26×11 16;42	8-14	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्र 1-7 व अन्तिमांश अपूर्ण
25×11 14;48	1–39	पूर्ण	18 वीं श.	र.का. 1738;पत्र चिपके हुए हैं।
26.5×11.5 13;36	19	,,	1827	लि.क. नवनिधिविजय; लि.स्था. संथाणा; र.का.1717; र.स्था. सोजत
12×14.5 9;12	63-64	,,	19 वीं श.	
25×10.5 11;42	1(प्रथम)	,,	18 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 715	5343 (23)	अजितजिन-स्तवन	
716	5153 (2)	,,	जसविजय वाचक
717	5378 (17)	अजितनाथ-स्तवन	ऋषभ शिष्य ऋद्धिसागर
718	5303 (7)	,,	आनन्दघन
719	5356(A) (6)	,,	नयविजय
720	5375 (12)	अजितशान्तिजिन-वृद्धिस्तवन	मेरुनन्दन
721	5343 (2)	अजितशान्तिजिन-पंच-कल्याणक	
722	4400 (4)	अजितशांतिनाथजिन-वृद्धस्तवन	
723	5404 (20)	अजितशान्ति-स्तवन	मेरुनन्दन उपाध्याय
724	4047	अठारह नाता री सज्झाय	लोहठ
725	5404 (131)	अठारह पाप स्थानक-स्वाध्याय	गुणसूरि
726	4028 (2)	अडसठ-तीर्थ-स्तवन	
727	5404 (56)	अतीत तथा वर्तमान चौबीसी नाम-स्तुति	मुनिमोहन

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
17.5×13.5 11; 20	13 वां	पूर्ण	20 वीं श.	
11.7×26 29; 18	1 (प्रथम)	,,	19 वीं श.	
16.5×8 14; 26	42–43	,,	19 वीं श.	
17.5×15 13; 18	54–55	,,	18 वीं श.	
12×12.5 16; 15	28–30	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण व कीटभक्षित
17.5×11 16; 18	21–25	,,	19 वीं श.	
17.5×13.5 11; 20	1–3	,,	20 वीं श.	पत्रांकन स्वतंत्र
25×11.5 12; 34	5–7	,,	18 वीं श.	
13×21 24; 18	10–12	,,	18 वीं श.	
25.5×11.5 17; 36	2	,,	1895	लि क.ज्ञानधर्म मुनि; लि.स्था.पाली
13×21 24; 88	182–188	,,	1763	लि क.मोहनऋषि; लि.स्था.उदयपुर अन्त में स्फुट स्तुति
25.5×11 14; 38	1 (प्रथम)	,,	19 वीं श.	
13×21 24; 18	38 वां	,,	18 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 728	5404 (97)	अध्यात्म-पद	बनारसी
729	5341 (22)	अध्यात्म-फाग	
730	5341 (18)	अध्यात्म-बत्तीसी	
731	5303(L)	अनन्तजिन-स्तवन	
732	5378 (11)	अनन्तनाथ-स्तवन	सुखराज
733	5404 (57)	अनागन चौवीस नाम-स्तुति	मुनि मोहन
734	5271(B) (45)	अनाथी-गीत	समयसुन्दर
735	5106	अनाथी-सज्झाय	,,
736	5416 (23)	अनाथीसाधु-सज्झाय	,,
737	5074 (1)	अन्तरिक्ष-पार्श्वनाथ-स्तवन	
738	5364 (3)	अन्तरीक-पार्श्वनाथ-स्तवन	मुनि लावण्यसमय
739	5404 (144)	,,	,,
740	4834	,,	विनयराज शिष्य लालकीर्त्ति (श्रीलल कीरत)

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
13×21 24; 18	91वां	पूर्ण	18 वीं श.	
12×8 9; 12	310–314	,,	19 वीं श.	
12×8 9; 12	295–300	,,	19 वीं श.	
17.5×15 13; 18	62–63	,,	18 वीं श.	
16.5×8 14; 26	16वां	,,	19 वीं श.	
13×21 24; 18	38–39	,,	[illegible] वीं श.	
30×16.5 13; 40	236वां	,,	18 वीं श.	
42×18 17; 50	1	,,	18 वीं श.	इसमें विजय व उदय के गीत हैं।
15×12 11; 16	45–46	,,	1869	लि.क. पं. विजयचन्द
25.5×11 21; 60	1	,,	19 वीं श.	
18×9 9; 20	7–13	,,	1874	र.का. 1785
13×21 24; 18	205–208	,,	18 वीं श.	
22.5×11 12; 34	3	,,	19 वीं श.	र.का. 1738

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा.741	5343(C) (23)	अभिनन्दन-स्तवन	
742	5378(C) (12)	,,	सुखराज
743	5404 (27)	,,	
744	5303(B) (8)	,,	
745	4947 (2)	अमावस्या-स्तुति	ज्ञानविमल
746	5399 (11)	अयवन्तो सुकुमाल-गीत	धर्मनरेन्द्र
747	3982	अयवन्ती सुकुमाल-सज्झाय	जिनहर्ष
748	4100 (7)	अरणक मुनि-सज्झाय	समयसुन्दर
749	4973	,,	,,
750	4400 (27)	,,	,,
751	5366 (13)	अरणक-सज्झाय	
752	4837 (1)	,,	गुणहर्ष
753	5303 (8)	अरनाथ-स्तवन	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17.5×13.7 11;20	11–12	पूर्ण	20 वीं श.	
16.5×8 14;26	18–19	,,	19 वीं श.	
13×21 24;18	15 वां	,,	18 वीं श.	
17.5×15 13;18	56–57	,,	18 वीं श.	
24×11.5 9;30	1	,,	20 वीं श.	लि.स्था. पाली; जीर्ण-शीर्ण
14×13 20;24	59–60	,,	18 वीं श.	र.का. 1586; जीर्ण-शीर्ण
27×12 15;34	6	,,	19 वीं श.	र.का. 1741; र.स्था.राजनगर
22×10.5 11;30	6–7	,,	19 वीं श.	
24×11 10;38	1	,,	20 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
25×11.5 12;34	19–20	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
16.5×11 19;30	22 वां	,,	1850	
24×10.5 17;38	1(प्रथम)	,,	19 वीं श.	
17.5×15 13;18	66 वां	,,	18 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 754	4611 (11)	अल्पाबहुत्व-स्तवन	समयसुन्दर
755	5272 (28)	अष्टक	
756	5408 (17)	,,	
757	4958	अष्टभव निवारण ऋषभ-स्तवन	
758	5375 (29)	अष्टपद निवारण-सज्झाय	लाधोशाह
759	4144	अष्टमी रो स्तवन	पं. देवसौभाग्य
760	5404 (94)	अष्टमी-स्तवन	केसराज
761	4242 (7-8)	अष्टमी-स्तुति	
762	4242 (5)	,,	
763	3940	,,	
764	5373 (4)	,,	
765	4077 (3)	अष्टापद-प्रतिहार्या-स्तोत्र	
766	5364(B) (11)	अष्टापद-स्तवन	समयसुन्दर

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25.5×11.5 11;28	5–7	पूर्ण	19 वीं श.	
20.5×27.5 31;28	34वां	,,	20 वीं श.	
16.5×10.5 10;20	28–30	,,	20 वीं श.	
25.5×10.5 23;52	1	,,	20 वीं श.	
17.5×11 16;18	10वां	,,	19 वीं श.	
26.5×11.6 13;29	2	,,	20 वीं श,	र.का. 1829
13×21 24;18	89–90	,,	18 वीं श.	
31×13.5 10;26	16–17	,,	20 वीं श.	
31×13.5 10;26	15वां	,,	20 वीं श.	
25.5×12.5 12;29	11–12	,,	1868	लि.क. धनरूप; लि.स्था. पाली
11×18 15;10	5वां	,,	20 वीं श.	
24.5×10.5 11;34	5वां	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; क्षतिग्रस्त
18×9 9;20	33-34	;,	1876	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 767	5404(C) (196)	असजाई-विचार-स्वाध्याय	
768	4535 (7)	आंगीर व गीत	ज्ञानविमल
769	3772	आत्म-गीता	देवचन्द
770	4948 (4)	आत्मनिन्दा-पद	जिनदास
771	5358 (92)	आत्म-पचीसी	मुनि पुण्यकीर्त्ति
772	4737	आत्मप्रकाश-स्तवन	विनयविजय
773	5144	आत्मबोध-त्रिलोकदीपिका-बत्तीसी	
774	5364 (35)	आत्मबोध-सज्झाय	लावण्यसमय; सहजसुन्दर
775	5416 (25)	"	धरमसी
776	5404 (106)	आत्मशिक्षा-स्वाध्याय	गुणसागर
777	5404 (132)	"	काजी अहमद
778	5404 (121)	"	मुनि हर्षकीर्ति
779	5349 (12)	आत्मशिक्षा-सज्झाय	रामचन्द

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
13×21 24; 18	152–153	पूर्ण	19 वीं श.	
25.5×11.5 15; 46	2(द्वितीय)	,,	1831	लि.क. रामविजय
25.5×12.5 6; 40	6	,,	19 वीं श.	
24.5×11 18; 46	4 (चतुर्थ)	,,	20 वीं श.	
17×11 11; 16	88–90	,,	18 वीं श.	र.का. 1771
23×11 12; 42	6	,,	19 वीं श.	र.का. 1716
23.5×10.5 16; 48	1	अपूर्ण	19 वीं श.	त्रुटित पत्र; अन्त में वार्त्ता भी है।
18×9 9; 20	80–83	पूर्ण	1876	
15×12 11; 16	48–50	,,	1869	लि.क. पं. विजयचन्द
13×21 24; 18	143 वां	,,	18 वीं श.	
13×21 24; 18	188–189	,,	18 वीं श.	
13×21 24; 18	170–171	,,	18 वीं श.	
16×10 19; 20	25–27	,,	1775	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 780	5364(A) (30)	आत्म-सज्झाय	
781	4711 (3)	,,	विजयदेव
782	5405 (16)	,,	राजसमुद्र
783	5343 (3)	,,	
784	5346 (7)	आत्महित-शिक्षा	देवचन्द्र
785	5271 (31)	आत्महित-शिक्षा-सज्झाय	लावण्यकीर्त्ति
786	4055 (18)	आदि-जिनपद	
787	5375(B) (7)	आदि-जिन-लघुस्तवन	
788	5185 (11)	आदिजिन-स्तवन	पद्मराज
789	5343 (5)	,,	समयसुन्दर
790	3940(B) (9)	आदिजिन-स्तुति	
791	4242 (26)	आदिजिनेन्द्र-स्तुति	
792	5344 (2)	आदिनाथ-स्तवन	विनोदीलाल

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
18×9 9;20	72–73	पूर्ण	1876	
24×10.5 12;34	2–3	,,	19 वीं श.	
18×11 10;22	86–87	अपूर्ण	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण व कीटभक्षित
17.5×13.5 11;20	4 (चतुर्थ)	पूर्ण	20 वीं श.	
13.5×23 23;16	31–37	,,	19 वीं श.	
30×16.5 13;40	194-196	,,	18 वीं श.	कीटविद्ध; अन्त में 'हनुमानजी' का गीत भी है।
24.5×11.5 14;34	6 ठा	,,	19 वीं श.	
17.5×11 16;18	11 वां	,,	19 वीं श.	
19.5×11 16;32	1	,,	19 वीं श.	
17.5×13.5 11;20	14–16	,,	20 वीं श.	
25.5×12.5 12;29	11 वां	,,	1868	लि.क. धनरूप; लि.स्था. पाली
31×13.5 10;26	27-28	,,	20 वीं श.	
12×14.5 9;12	13–14	,,	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 793	5404 (36)	आदिनाथ-स्तवन	गुणसागरसूरि
794	5404 (40)	,,	अजितदेवसूरि
795	5364 (32)	,,	
796	4535 (10)	आदीश्वर-विनती	विनय
797	5404 (141)	आदीश्वर-स्तवन	गुणसूरि
798	5404 (76)	,,	सुमतिसागरसूरि
799	5364 (21)	आबू के पद	जसवन्तसागर
800	5375 (35)	आर्यदेश-स्तवन	
801	5142(B)	आलोयणा गीत तथा बीस स्थानक-टिप्पण	
802	5416 (39)	आलोयण-स्तवन	समयसुन्दर
803	4779	इषुकार-सज्झाय	
804	5366 (19)	इरियावहि-स्वाध्याय	विनयविजय उपाध्याय
805	5375 (44)	इलापुत्र-सज्झाय	लब्धिविजय

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
13×21 24; 18	23 वां	पूर्ण	18 वीं श.	
13×21 24; 18	27-28	,,	18 वीं श.	
18×9 9; 20	76-77	,,	1876	
25.5×11.5 15; 46	3-4	,,	1831	लि.क. रामविजय
13×21 24; 18	203-204	,,	18 वीं श.	
13×21 24; 18	63 वां	,,	18 वीं श.	पत्रांक 64-66 अप्राप्त
18×9 9; 20	52 वां	,,	1876	
17.5×11 16; 18	18-19	,,	19 वीं श.	
25.5×10.5 32; 42	1	,,	1657	पत्रांकन पृथक् से
15×12 11; 16	71-75	,,	1869	
13.5×9.5 15; 36	2	,,	19 वीं श.	
16.5×11 19; 30	27 वां	,,	1851	र.का. 1723
17.5×11 16; 18	31-32	,,	18 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) नं.सा. 806	5416 (37)	इलापुत्र-सज्झाय	समयसुन्दर
807	5404(B) (114)	इलायचीपुत्र-सज्झाय	लब्धिविजय
808	5272 (17)	इष्ट-छत्तीसी	
809	3680	उत्तराध्ययनसूत्र-अध्ययनगीत	
810	4670	उपदेश-छत्तीसी	जिनहर्ष
811	4228	उपदेश-बत्तीसी	बालचन्द
812	5375 (37)	उपदेश-सज्झाय	
813	4948	,,	विनयचंद
814	5405 (3)	उपदेश-सत्तरी	विजयदेवसूरि
815	4221 (2)	ऋषभजिन-सज्झाय	समयसुन्दर
816	5378 (6)	,,	कवि जसवन्त
817	5122 (4)	,,	
818	4535	,,	रत्न

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15×12 11;16	69–70	पूर्ण	1869	लि.क. पं. विजयचन्द
13×21 24;18	150 वां	,,	19 वीं श.	
20.5×27.5 31;28	25–26	,,	20 वीं श.	र.का. 1750
25.5×11 15;40	11	,,	1707	लि.क. वीरदास; लि.स्था. बेराहा; दूसरा पत्र दो बार
25×10.5 14;44	2–5	अपूर्ण	19 वीं श.	लि.स्था. सत्यपुर; प्रथम पत्र अप्राप्त
25×11 19;50	2	पूर्ण	19 वीं श.	
17.5×11 16;18	21–25	,,	19 वीं श.	अन्त में 'पार्श्वजिन-स्तवन' दौलत कृत है।
24.4×11 18;46	1–2	,,	20 वीं श.	र.का. 1874
18×11 10;18	26–27	,,	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; कीटभक्षित।
24.5×11 9;21	2(द्वितीय)	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; अन्त में रेखता है।
16.5×8 14;26	10 वां	,,	19 वीं श.	
24.5×10.5 18;48	2–3	,,	19 वीं श.	र.का. 1727
25 5×11.5 15;46	2–3	,,	1831	लि.क. रामविजय

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 819	5416 (14)	ऋषभजिन-स्तवन	राम शिष्य श्रीविजय
820	5343 (10)	,,	लालचन्द
821	3687	,,	क्षमाकल्याण पाठक
822	5319 (2)	,,	
823	4242 (18)	ऋषभजिन-स्तुति	
824	4731 (3)	ऋषभदेव की लावणी	
825	5404 (1)	ऋषभदेव जिनाभिषेक-कलश	
826	4984 (1)	ऋषभदेव पार्श्वनाथ-स्तवन	सुखलाल शिष्य विनयविमल
827	5067	ऋषभदेव-बृहत्स्तवन	राजसमुद्र
828	5271 (46)	ऋषभदेव-विनती	समयसुन्दर
829	5351 (42)	ऋषभदेव की विनती	बालचन्द
830	5271(A) (41)	,,	
831	5364 (10)	ऋषभदेव-स्तवन	जसविजय

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15×12 11;16	22–23	पूर्ण	1869	लि.क. पं. विजयचन्द
17.5×13.5 11;20	35–36	,,	20 वीं श.	र.का. 1839
25.5×10.5 13;34	1–2	,,	19 वीं श.	र.का. 1862
11.5×16 22;24	6 ठा	,,	19 वीं श.	
31×13.5 10;26	24 वां	,,	20 वीं श.	
22×10.5 11;19	2–3	,,	19 वीं श.	
13×21 24;18	1–5	,,	18 वीं श.	
21×11 9;22	1–2	,,	20 वीं श.	र.का. 1911; र.स्था. अजमेर
22.5×13 16;36	1	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; पृष्ठ भाग में 'उन्तीस-बोल' लिखित हैं।
30×16.5 13;40	238–239	,,	18 वीं श.	
13×10 10;14	212–214	,,	19 वीं श.	अन्त में राग-पद हैं।
30×16.5 13;40	226-227	,,	19 वीं श.	
18×9 9;20	32 वां	,,	1875	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा.832	5404 (89)	ऋषभदेव-स्तवन	गोविन्द मुनि
833	5404 (73)	,,	मोहन
834	4838	,,	सहजकीर्ति शिष्य
835	5048 (2)	,,	
836	5404 (53)	,,	विनयसागरसूरि
837	5271 (40)	,,	ऋषभदास
838	5349 (22)	ऋषभदेव-स्तुति	
839	5404 (13)	ऋषभ-स्तुति	मुनि मोहन
840	4282 (8)	ऋषभदेव-स्वामी-स्तुति	
841	4221 (1)	ऋषभ-स्तवन	लालचन्द
842	5346 (5)	ऋषभ स्वामी-स्तवन	देवचन्द्र
843	3696 (2)	ऋषभ स्वामी-स्तोत्र	कीरत मुनि
844	4419 (3)	ऋषि-बत्तीसी-स्वाध्याय	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
13×21 24; 18	84वां	पूर्ण	18 वीं श.	
13×21 24; 18	62वां	,,	18 वीं श	र.का. 1763
24×10 12; 40	1	,,	18 वीं श.	लि.क. सोमचन्द; लि.स्था. राधिकापुर
24.5×10.5 16; 46	1 (प्रथम)	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
13×21 24; 18	35–36	,,	18 वीं श.	
30×16.5 13; 40	221–225	,,	18 वीं श,	कीटविद्ध
16×10 11; 20	54वां	,,	18 वीं श.	
13×21 24; 18	5वां	,,	18 वीं श.	अंत में तीन चौबीसियों के नाम हैं।
21×10.5 15; 33	2–3	,,	19 वीं श.	
24.5×11 9; 21	1–2	,,	19 वीं श.	जीर्ण; र.का. 1839; र.स्था. बीकानेर
13.5×23 23; 16	29–30	,,	19 वीं श.	
25×11 27; 58	1 (प्रथम)	,,	18 वीं श.	
24.5×11.5 14; 40	26-27	,,	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 845	4772	ऋषि-बत्तीसी	जिनहर्ष
846	5404 (95)	एकादशी-स्तवन	केसराज
847	5373 (5)	एकादशी-स्तुति	जिनचन्द्र
848	5369 (13)	एकीभाव-स्तोत्र-भाषा	
849	5404 (125)	कपिल मुनि-छत्तीसी	सोहनदास शिष्य जसवन्तसागर
850	5300 (9)	कर्म-छत्तीसी	
851	5375 (20)	,,	समयसुन्दर
852	5271 (25)	कर्म-बत्तीसी	,,
853	4400 (35)	,,	,,
854	4100 (9)	कर्म-सज्भाय	ऋद्धिहर्ष
855	5416 (29)	,,	,,
856	5343 (17)	,,	,,
857	5404 (137)	कर्म-हिंडोला-सज्भाय	हर्षकीर्त्ति

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
26.5×14.5 13;28	3	पूर्ण	1885	
13×21 24;18	90वां	"	18 वीं श.	
11×18 15;10	5–6	"	20 वीं श.	
13.5×22 19;18	37–39	"	18 वीं श.	
13×21 24;18	173–174	"	1865	
13×17.5 16;18	54–56	"	19 वीं श.	
17.5×11 16;18	70–73	"	19 वीं श.	
30×16.5 13;40	179–181	"	17 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण व कीटभक्षित
25×11.5 12;34	25–27	"	19 वीं श.	
22.5×10.5 11;30	8–9	"	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
15×12 11;16	54-57	"	1869	पं. विजयचन्द
17.5×13.5 11;20	44–45	"	20 वीं श.	
13×21 24;18	194–195	"	18 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 858	4132	कलयुग-सज्झाय	चौथमल
859	5404(A) (116)	कल्याणसागरसूरि-स्वाध्याय	गुणसागर
860	5358 (5)	कल्याण-मन्दिर-भाषा	
861	5272 (6)	,, (पद्यानुवाद)	अनु० बनारसीदास
862	5255	कल्याण-मन्दिर-स्तोत्र-भाषा	,,
863	5245	,,	,,
864	5325 (13)	,,	,,
865	5300 (6)	,,	,,
866	5408 (5)	,,	,,
867	5351 (23)	,,	,,
868	5404 (64)	,,	,,
869	5375 (18)	,,	,,
870	5344 (9)	,,	,,

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण / अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
26×11 17;34	3	अपूर्ण	19 वीं श.	र.का 1856; लि.क. बिरजू; लि.स्था. गोविन्दगढ़
13×21 24;18	151वां	पूर्ण	19 वीं श.	अन्त में जिनराज कृत स्वाध्याय है।
17×11 11;16	15–20	अपूर्ण	18 वीं श.	
20.5×27.5 31;28	3–5	पूर्ण	1916	
25×12 11;34	4	,,	20 वीं श.	
25.5×11 12;43	3	,,	1756	लि.क. ऋषि मुकुन्द
25×16.5 13;28	77–79	,,	17 वीं श.	
13×17.5 16;18	45–49	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्रांक 46, 48-49 अप्राप्त
16.5×10.5 10;20	4–9	पूर्ण	20 वीं श.	
13×10 10;14	92–98	,,	19 वीं श.	
13×21 24;18	45–47	,,	18 वीं श.	
17.5×11 16;18	64–65	अपूर्ण	19 वीं श.	इसमें 31 से 44 तक पद्य हैं।
12×14.5 9;12	35–48	पूर्ण	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 871	4699 (3)	कवित्त-संग्रह	ब्रह्मज्ञानसागर
872	4656	,, आदि	बनारसीदास
873	5404 (108)	काया-गीत	जिनराज
874	5380 (5)	काया-जीव-गीत	राजसमुद्र
875	4016	कापरड़ा-पार्श्वनाथ-स्तवन	विजयचन्द्रसूरि
876	4400 (21)	,,	जिनहर्ष
877	5404 (16)	कुकड़ेसर-पार्श्वनाथ-स्तवन	सुमतिसागरसूरि
878	5378 (8)	कुंथनाथजिन-स्तवन	सुखराज
879	5303(O) (8)	,,	
880	5416 (10)	कुंथुजिन-स्तवन	तेजमुनि
881	5349 (10)	,,	
882	4103	कुमति-खण्डन-स्तवन	
883	4769	कुमति-निराकरण-हुंडिका-स्तवन	मेघविजय

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
17.5 10 8; 20	8–16	अपूर्ण	20 वीं श.	
26×10.5 9; 34	14	पूर्ण	19 वीं श.	अंतिमांश की स्याही अस्पष्ट
13×21 24; 18	144वां	,,	19 वीं श.	
15×16 14; 14	146–148	,,	1724	
23.5×10.5 12; 38	3	,,	20 वीं श.	र.का. 1698; लि.क. हरिसिंह
25×11.5 12; 34	15–16	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
13×21 24; 18	8वां	,,	18 वीं श.	
16.5×8 14; 26	13वां	,,	19 वीं श.	12वां पत्र अप्राप्त
17.5×15 13; 18	65वां	,,	18 वीं श.	
15×12 11; 16	18–19	,,	1869	पं. विजयचन्द
16×10 11; 20	22–24	,,	18 वीं श.	पत्र 23वां निरंकित
25.5×13.5 10; 21	4	,,	20 वीं श.	र.का. 1724
28.5×14 14; 52	3	,,	19 वीं श.	लि क. जोशी देवकृष्ण; लि.स्था. जयपुर

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 884	5343 (29)	केवल-ज्ञान-स्तवन	हीरधर्म
885	4064	क्षमा-छत्तीसी	समयसुन्दर
886	5375 (49)	,,	,,
887	5404 (112)	,,	,,
888	5416 (35)	,,	,,
889	5271 (42)	,,	,,
890	4837 (7)	खंधककुमार-सज्झाय	गुणहर्ष
891	4919	खेतल वीर नो छन्द	
892	5416 (30)	गज-सुकुमाल-सज्झाय	जिनराज
893	4818 (2)	गज-सुकुमाल-गीत	नथमल
894	5343 (13)	गज-सुकुमाल-सज्झाय	
895म.	4231	,,	चौथमल
896	4947 (1)	गंहुली	देवचन्द

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17.5×13.5 11;20	29–30	पूर्ण	20 वीं श.	
25.5×11 15;38	1	"	1953	लि.क. अमोलकचंद मुनि; लि.स्था. दिल्ली
17.5×11 16;18	50–53	"	19 वीं श.	
13×21 24;18	147–149	"	19 वीं श.	
15×12 11;16	62–67	"	1869	लि.क. पं. विजयचंद
30×16.5 13;40	228–229	"	18 वीं श.	कीट भक्षित
24×10.5 17;38	5–6	"	19 वीं श.	
22×11 17;52	1	"	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण व कीटभक्षित
15×12 11;16	57–58	"	1869	लि.क. पं. बिजयचन्द्र
23×10.5 14;32	1(प्रथम)	"	19 वीं श.	
17.5×13.5 11;20	39–40	"	20 वीं श.	
26×11.5 16;40	1	"	1860	लि.क. आर्या सुखां र. का. 1858
24×11.5 9;30	1	"	20 वीं श.	लि.स्था. पाली

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 897	4970 (1)	गंहुली	दीपविजय
898	4400 (24)	गिरमंडल-ऋषभजिन-स्तवन	क्षमाकल्याणगणि
899	5366	गीत-संग्रह	श्रीसार, जिनचन्द्र, भुवनकीर्त्ति
900प.	5378 (1)	,,	
901प.	5378(B) (45)	,,	
902	5378 (45)	,,	सुमतिकलश, विनयसागर
903	5405 (11)	,,	समयसुन्दर
904	5027	,,	विद्याविमल शिष्य विजयविमल
905	5271 (51)	,,	जिनराज रायहंस, भुवनकीर्ति, राजसमुद्र, लक्ष्मीदास
906	5271 (49)	,,	जिंनराज, राजसमुद्र, समयसुन्दर, भैरवदास, कनक, साधुकीर्त्ति, रंग
907	5278 (32)	गीत तथा स्तवन-संग्रह	रामचन्द्र गणि

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
26.5×11 10;26	1	पूर्ण	20 वीं श.	जीर्ण
25×11.5 12;34	20 वां	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
16.5×11 19;30	29 वां	,,	1851	
16.5×8 14;26	1–3	अपूर्ण	19 वीं श.	
16.5×8 14;26	59–63	पूर्ण	19 वीं श.	
16.5×8 14;26	91–93	,,	19 वीं श.	
18×11 9;22	42–43	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण व कीटभक्षित
25.5×11 11;34	1	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
30×16.5 13;40	271–275	,,	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण व कीटभक्षित
30×16.5 13;40	249–266	,,	18 वीं श.	
16.5×8 14;26	70–72	,,	19 वीं श.	इसमें-बाहुजिन गीत; स्वयंप्रभुजिन-गीत; पुण्यधरजिन गीत; सीमन्धर जिन-स्तवन; सुबाहुजिन गीत; ईश्वरजिन गीत हैं। अंत में लग्न प्रमाण लिखित है।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा.908 प.	5399 (2)	गीत तथा स्तवन-संग्रह	खेमराज, मेरुगणि, पासचंद, कर्मसागर का शिष्य, सेवक, लावण्यसमय, पुण्यलब्धि, देवपाल, शान्तिसूरि
909	5366 (3)	,,	राजसमुद्र, पद्मराज, भद्रसेन
910	5379 (6)	,,	विष्णुदास, हरिवंश, रत्न-निधान, कृष्णदास, केशवदास, हर्षकीर्त्ति, भुवनकीर्त्ति, सूरदास, कृपासागर, विजयदेव
911	5404 (130)	गुणसागरसूरि-विरदावली	मुनि शिवचन्द
912	5325 (9)	गुणस्थान-स्तवन	भगवतीदास
913	5272 (15)	गुरां की विनती	
914	5375 (1)	गुरु-गीत	जिनकुशल
915	5378(C) (25)	गुरुदास-सज्झाय	कल्याण शिष्य चरित्रसागर
916	4699 (2)	गुरुदेव-कवित्त	ज्ञानसागर यति
917	4412 (2)	गुरुराज-छन्द	
918	5404 (111)	गुरु-स्वाध्याय	पंचाइण

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
14×13 20; 24	8–23	पूर्ण	18 वीं श.	
16.5×11 19; 30	8–9	,,	19 वीं श.	
14.5×11 16; 20	52–62	,,	19 वीं श.	पत्रांक 61 पर मराठी भाषा में माधवकृत आरती है।
13×21 24; 18	180–181	,,	18 वीं श.	
25×16.5 13; 28	68–70	,,	17 वीं श.	
20.5×27.5 31; 28	24वां	,,	20 वीं श.	
17.5×11 16; 18	7वां	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्रांक 1-6 अप्राप्त
16.5×8 14; 26	56वां	पूर्ण	19 वीं श.	
17.4×10 8; 20	5–8	,,	20 वीं श.	
30×13 10; 29	106–108	,,	19 वीं श.	
13×21 24; 18	146-147	,,	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा.919	5404 (107)	गुरु-स्वाध्याय	गुणसागर
920	5404 (119)	गुरु-स्वाध्याय-संग्रह	गुणसागर, ऋषि गिरधर, पंचायण, शिवचंद
921	5404 (129)	गुरु-हिंडोली	मुनि रायचन्द
922	5136 (2)	गुर्वाष्टक-विनती	
923	4837 (12)	गुलीनी-भास	
924	5404 (44)	गूगौर-पार्श्वनाथ-स्तवन	गुणसागरसूरि
925	5030	गौड़ीजी रो अष्टभय-निवारण-छन्द	
926	4984 (3)	गौड़ी-पार्श्वजिन-वृद्ध-स्तवन	सुखलाल
927	5416 (3)	गौड़ी-पार्श्वजिन-स्तवन	जिनभक्ति
928	5404 (118)	गौड़ी-पार्श्वनाथ-छन्द	धरमसी
929	5364 (9)	"	उदयरत्न
930	5068	गौड़ी-पार्श्वनाथ-पद	
931	4001	गौड़ी-पार्श्वनाथ-स्तवन गुरु-स्तुति-सह	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
13×21 24; 18	143–144	पूर्ण	19 वीं श.	
13×21 24; 18	156–158	,,	1762	
13×21 24; 18	180वां	,,	18 वीं श.	
11.5×10.5 13; 18	6ठा	,,	19 वीं श.	
23.8×10.5 17; 38	9वां	,,	19 वीं श.	
13×21 24; 18	30वां	,,	1767	र.का. 1653; लि.स्था. साहजिहानाबाद
24.5×11.5 12; 34	2	,,	19 वीं श.	अति जीर्ण; पत्र चिपके हुए
21×11 9; 22	2–3	,,	20 वीं श.	र.का. 1912; र.स्था. अजमेर
15×13 11; 16	8–9	,,	1869	र.का. 1781
13×21 24; 18	155–156	,,	1762	लि.स्था. हुरड़ानगर
18×9 9; 20	31–32	,,	1875	
24×12.5 10; 32	1	,,	20 वीं श.	
25×10.5 13; 32	2	,,	1773	र.का. 1722; लि.स्था. सांगानेर

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 932	4400 (8)	गौड़ी-पार्श्वनाथ-स्तवन	
933	4100 (17)	,,	
934	4100 (19)	,,	
935	5356 (3)	,,	
936	5364 (12)	,,	
937	5364 (20)	,,	
938	5416 (13)	,,	
939	5405 (21)	,,	जिनराज
940	4538	,,	अनोपचन्द
941	4932	,,	प्रीतविमल
942	4984 (2)	,,	सुखलाल
943	5356 (10)	,, तथा दोहे	
944	5358 (22)	गौतम स्वामी-गीत	लावण्यसमय

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25×10.5 12; 34	8वां	पूर्ण	19 वीं श.	
22×10.5 11; 30	14-15	,,	19 वीं श.	
22×10.5 11; 30	15-16	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
12×12.5 16; 15	16-21	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; कीटभक्षित एवं पत्र चिपके हुए।
18×9 9; 20	35-36	,,	1876	
18×9 9; 20	50-52	,,	1876	
15×12 11; 16	21-22	,,	1869	लि.क. पं. विजयचन्द
18×11 10; 20	111वां	,,	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; कीटग्रसित
24×12.5 13; 30	5	,,	19 वीं श.	र.का. 1825
26.5×11.5 13; 46	2	,,	1867	लि.क. गंगविजय; लि.स्था. उज्जैन
21×11 9; 22	2(द्वितीय)	,,	20 वीं श.	र.का. 1912; र.स्था. अजमेर
12×12.5 16; 15	44-46	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; कीटभक्षित
17×11 11; 16	107-108	,,	18 वीं श.	अंत में नाकोड़ा-स्तवन है।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 945	5271(D) (44)	गौत-मगणधर-गीत	लावण्यसमय
946	3998	गौतम-सज्झाय	,,
947	3550	गौतमस्वामी-सज्झाय	,,
948	5359 (5)	गौतमस्वामी-स्तवन	,,
949	5375 (22)	गौतमस्वामी-लघु-स्तवन	,,
950	4216 (2)	चउपडि-सज्झाय	रतनसागर
951	5272 (8)	चक्रवर्ति-भावना	
952	4611 (5)	चतुदर्श-गुणस्थान-गर्भित-विचार-स्तवन	धरमसी (धर्मसिंह)
953	5303 (18)	चतुर्विंशति-गीता	
954	5375(B) (4)	चतुर्विंशति-जिनगीत	जिनराज
955	4030	,,	जिनराजसूरि
956	5349(B) (26)	चतुर्विंशति-जिन-नमस्कार	पार्श्वचन्द्रसूरि
957	5343 (22)	चतुर्विंशति-जिन-स्तवन	हेमविमलसूरि

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
30×16.5 13;40	234वां	पूर्ण	18 वीं श.	
25.5×11 12;34	1	"	1758	लि स्था. नरायण; लि.क. कपूरा
25.5×11.5 15;34	4	"	19 वीं श.	
18×11 12;21	17–18	"	20 वीं श.	
17.5×11 16;18	76वां	"	19 वीं श.	
24.5×10.5 14;40	16	"	19 वीं श.	
20.5×27.5 31;28	5–6	"	1916	
25.5×15.5 11;28	13–16	"	19 वीं श.	
17.5×15 14;20	58–63	"	1741	
17.5×11 16;18	8–20	"	19 वीं श.	पत्रांकन स्वतंत्र
26×12 11;28	10	अपूर्ण	19 वीं श.	लि.क. उदयचन्द्र; लि.स्था. पाली। पत्रांक 1-3 व 7वां अप्राप्त
16×10 11;20	71–76	पूर्ण	18 वीं श.	अस्पष्ट अक्षर
17.5×13.5 11;20	6–9	"	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 958	5346 (4)	चसुर्विशतिजिन-स्तवन	देवचन्द्र
959	5122 (9)	,,	तेजसिंह
960	5404 (77)	,,	जिनराज
961	5404 (79-88)	,,	विनयसागर
962	4065	चतुर्विंशतिजिन-स्तुति-सत्व-चत्वारिंश-वोल-गर्भित	
963	5162	चतुर्विशतिजिन-स्तुति-सस्तबक	ग्रानन्दघन; ज्ञानविमलसूरि
964	4388	चतुर्विशतितीर्थंकर-गीतानि	हर्षसुन्दर शिष्य प्रभाचन्द्र
965	4031 (2)	,, -पद	
966	5416 (33)	चतुस्सरण-गीत	समयसुन्दर
967	4282 (4)	चन्द्र-प्रज्ञप्ति-नमस्कार	
968	5343 (18)	चन्द्रप्रभु-स्तवन	
969	5349 (16)	,,	पासचन्द्रसूरि
970	5378 (9)	,,	सुखराज

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
13.5×23 23; 16	15-28	पूर्ण	19 वीं श.	अंत में 'गणधा-स्तुति' देवचन्द्र-कृत है।
24.5×10.5 18; 48	3 (तृतीय)	"	19 वीं श.	र. का. 1734
13×21 24; 18	67–73	"	18 वीं श.	
13×21 24; 18	74–84	"	1757	लि.क. ऋषि मोहन; लि.स्था. फतेपुर
25.5×11.5 11; 30	18	"	19 वीं श.	
27.5×13 13; 36	41	"	19 वीं श.	
25.5×11 13; 37	8-15	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्रांक 1-7 अप्राप्त
22×11 14; 36	5–10	पूर्ण	1855	अंत में संस्कृत में 'आदि-जिन-स्तुति' है।
15×12 11; 16	60वां	"	1869	लि.क. पं. बिजयचन्द्र
21×10.5 15; 33	1(प्रथम)	"	19 वीं श.	
17.5×13.5 11; 20	45–46	"	20 वीं श.	
16×10 11; 20	33–34	"	18 वीं श.	
16.5×8 14; 26	13–14	"	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 971	5404 (90)	चन्द्रप्रभु-स्तवन	केसराज
972	4400 (33)	,,	जैतसी
973	5303(F) (8)	,,	आनन्दघन
974	5404 (52)	चंपावती-शान्तिनाथ-स्तवन	पंचायण मुनि
975	5419(A) (1)	चिन्तामणि पार्श्वजिन-स्तवन	समयसुन्दर
976	5416 (6)	चिन्तामणि पार्श्वनाथजिन-स्तवन	खेमकरण (क्षेमकरण)
977	5375(B) (14)	चिन्तामणि पार्श्वनाथ-लघुस्तवन	बनारसी
978	5378 (37)	चिन्तामणि पार्श्वनाथ-स्तवन	कल्याण शिष्य चरित्रसागर
979	5375 (14)	,,	राजसमुद्र
980	4604	,,	गुणसागर
981	4293 (5)	,,	
982	4400 (7)	,,	समयसुन्दर
983	4104 (1)	चिन्तामणि पार्श्वजिन-स्तवन	जिनचन्द्र

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
13×21 24; 18	84वां	पूर्ण	18 वीं श.	
25×11.5 12; 34	25वां	,,	19 वीं श.	
17.5×15 17; 20	59वां	,,	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
13×21 24; 18	35वां	,,	18 वीं श.	
13.5×8.5 9; 12	1(प्रथम)	,,	19 वीं श.	
15×12 11; 16	12–14	,,	1869	लि.क. पं. विजयचंद
17.5×11 16; 18	33वां	,,	19 वीं श.	
16 5×8 14; 26	78वां	,,	19 वीं श.	
17.5×11 16; 18	30–33	,,	19 वीं श.	
26×11.5 18; 40	2	,,	1776	लि.स्था. खम्भात
26×12 10; 22	8–9	,,	19 वीं श.	
25×11.5 12; 34	7–8	,,	19 वीं श.	
22.5×12.5 11; 32	1-2	,,	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 984	4731 (1)	चेतन-सज्झाय	
985	5351 (35)	,,	विजयदेवसूरि
986	4814 (3)	चेलणानीसज्झाय	समयसुन्दर
987	5416 (26)	चेलणा-सती अभयकुमार-सज्झाय	,,
988	4100 (8)	चेलणा-सज्झाय	,,
989	5404(A) (68)	चेलणा-स्वाध्याय	,,
990	5420 (15)	चैताला-बन्ध	महीचन्द
991	4965 (1)	चैत्यवन्दन	कीर्तिविजय
992	4970 (2)	,,	
993	4002 (1)	चौदहगुण-स्थानक विचार-स्तवन	धरमसी
994	4920	चौदह गुण-ठाणां-सज्झाय	
995	5404 (4)	चौदह गुण-स्थानक-स्तवन	सहजरत्नगणि
996	5359 (8)	चौदह सुपना री सज्झाय	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
22×10.5 11;19	1–2	पूर्ण	19 वीं श.	
13×10 10;14	155–157	,,	19 वीं श.	
23×10.5 14;32	1(प्रथम)	,,	19 वीं श.	
15×12 11;16	50–51	,,	1869	लि.क. पं. विजयचन्द
22×10.5 11;30	7–8	,,	19 वीं श.	
13×21 24;18	51वां	,,	18 वीं श.	
13.5×11.7 12;20	27–29	,,	1828	लि क. दौलतराम
22.5×11.5 14;34	1	,,	20 वीं श.	
26 5×11 10;26	1	,,	20 वीं श.	त्रुटित
26×11.5 16;40	1–2	,,	18 वीं श.	
23.5×11.5 13;44	1	,,	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
13×21 24;18	8–9	,,	18 वीं श.	
18×12 12;21	29–32	,,	20 वीं श.	अन्त में चौबीस नाम

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जैं.सा.997	5416 (31)	चौरासी लाख-सुखमती-खामणा	समयसुन्दर गणि
998	4273 (6)	चौलेर-पार्श्वनाथ-स्तवन	ज्ञानसौभाग्य
999	5404(A) (140)	चौलेर-मण्डन-पार्श्वनाथ-स्तवन	
1000	5377 (7)	चौबीस-तीर्थंकर-गीत	राजहर्ष
1001	5417 (30)	चौबीस-तीर्थंकरां रो छन्द	अमीयो
1002	5378(A) (25)	चौबीस-तीर्थंकर-स्तवन	जसवन्त मुनि
1003	4960 (1)	,,	महामुनि
1004	5341 (23)	चौबीस-तीर्थंकर-स्तुति	विनोदीलाल
1005	5404 (32)	चौबीस-दण्डक-विचार-स्तवन	गुणसागरसूरि
1006	5405 (7)	छिनुवे जिन नाम-संख्यादि-विचार-गर्भित-स्तवन	लब्धिकल्लोल मुनि
1007	5351 (29)	जखड़ी	
1008	5420 (9)	,,	पं. दयाचन्द
1009	5420 (18)	,,	रूपचन्द

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15×11 11;16	58–59	पूर्ण	1869	लि.क. विजयचंद
26×11 13;22	3–4	,,	19 वीं श.	
13×21 24;18	197–198	,,	19 वीं श.	अंत में पद तथा समयसुन्दर कृत सज्भाय तथा पत्रांक 198 पर कबीर के पद हैं।
14.5×10.5 10;16	8–19	,,	18 वीं श.	
21.5×14.5 27;16	155–158	,,	19 वीं श.	
16.5×8 14;26	54–55	,,	19 वीं श.	
25.5×11 15;38	1	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; र.स्था. विरमगांव
12×8 9;12	314–316	,,	19 वीं श.	
13×21 24;18	20–21	,,	18 वीं श.	लि.स्था. चंपावती ग्राम
18×11 10;18	34–37	,,	1771	र.का. 1656; लि.क. भक्तिविशाल-गणि; जीर्ण-शीर्ण व कीटभक्षित
13×10 10;14	130–131	,,	1844	सचित्र
13.5×11.5 12;20	15 वां	,,	19 वीं श.	
13.5×11.5 12;20	32–33	,,	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1010	4818 (4)	जम्बूकुमार-सज्झाय	
1011	5378 (4)	जम्बू-स्वाध्याय	
1012	5404 (61)	"	गुणविजय
1013	3992	जम्बू-स्वामी-चरित्र	
1014	5190	"	
1015	4100	जम्बू-स्वामी-सज्झाय	हर्षकुशल
1016	5375 (30)	जिनकुशलसूरि-वृद्धि तथा लघु-स्तवन	मुनि दौलत
1017	4400 (22)	जिनकुशलसूरि-स्तवन	साधुकीर्ति पाठक
1018	4400 (23)	"	
1019	4400 (24)	"	
1020	5375 (16)	"	करमचन्द
1021	5404 (71)	जिन-चैत्यवन्दन-भाषा	खेमा
1022	5375 (24)	जिन-चौबीसी	गुणविलास

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण / अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
23×10.5 14; 32	1–2	पूर्ण	19 वीं श.	
16.5×8 14; 26	8–9	,,	19 वीं श.	
13×21 24; 18	41–42	,,	18 वीं श.	
25.5×10.5 13; 44	15	,,	17 वीं श.	शिवनिधानगणि द्वारा संशोधित; क्षतिग्रस्त
25×10.5 10; 44	1	,,	19 वीं श.	र.का. 1522; जीर्ण-शीर्ण
22×10.5 10; 30	9–10	,,	19 वीं श.	
17.5×11 16; 18	11–12	,,	19 वीं श.	
25×11.5 12; 34	16वां	,,	19 वीं श.	
25×11.5 12; 34	16–17	,,	19 वीं श.	
25×11.5 12; 34	17–18	,,	19 वीं श.	अंत में जिनरंगसूरि कृत दादाजी का गीत है।
17.5×11 16; 18	1–2	,,	19 वीं श.	पत्रांकन स्वतंत्र
13×21 24; 18	58–59	,,	18 वीं श.	
17.5×11 16; 18	81–87	,,	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1023	5272 (2)	जिन-दर्शन-स्तवन	
1024	4837 (13)	जिनदास-सज्झाय	गुणहर्ष
1025	4535 (15)	जिनदेवमाल	विनय
1026	5336(C) (13)	जिन-धमाल	
1027	5344(A) (10)	जिन-नमस्कार तथा पार्श्वनाथ-जप	
1028	5366 (1)	जिन-पद	नयविमल
1029	5366 (7)	,,	रतनविजय, लब्धिविजय
1030	5419 (8)	,,	जिनहर्ष, मल्लदास, हेमराज साधुकीर्त्ति, जगजीवन, वृद्धिकुशल
1031	5359 (2)	जिन-पद तथा स्तवन-संग्रह	मुनिराय
1032	5364 (5)	जिन-पद-संग्रह	वृद्धिकुशल, ज्ञानविमल, कनककुशल
1033	5375 (32)	जिन-प्रतिमा-स्तवन	समयसुन्दर
1034	4051	जिन-प्रतिमा-स्थापन पार्श्वनाथ-स्तवन	,,
1035	4946	जिन-प्रतिमा-स्थापन-स्तवन	गुणरंग

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
20.5×27.5 31;28	1(प्रथम)	पूर्ण	1916	
24×10.5 17;38	9वां	,,	19 वीं श.	
25.5×11.5 15;46	5वां	,,	1831	लि.क. रामविजय
16.5×21.5 18;20	129–130	,,	19 वीं श.	
12×14.5 11;20	49-51	अपूर्ण	19 वीं श.	अन्त में छप्पय है।
16.5×11 19;30	1	पूर्ण	19 वीं श.	
16.5×11 19;30	11वां	,,	19 वीं श.	
13.5×9 9;12	18-20	,,	19 वीं श.	
18×12 12;21	4-7	,,	20 वीं श.	र.का. 1828
18×9 9;20	21–23	,,	1875	
17.5×11 16;18	15-16	,,	19 वीं श.	
24×11.5 15;34	2	,,	19 वीं श.	
25×12 13;48	1	,,	20 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1036	4104 (2)	जिन-प्रतिमा-हुण्डी-स्तवन	जिनहर्ष
1037	4400 (32)	,,	,,
1038	4706 (2)	जिनबल्लवर्णन-कवित्त	
1039	5303 (6)	जिन-बिम्ब-चैत्यपरिपाटी	
1040	4535 (17)	जिनराज-स्तवन	कनककीर्त्ति
1041	4611 (1)	जिनसप्ततिनाम-स्तवन	हंस शिष्य सागरचन्द्रसूरि
1042	5336 (10)	जिन-सहस्रनाम	
1043	4286	जिन-सहस्रनाम-भाषा	बनारसीदास
1044	4400 (14)	जिन-स्तवन	जैतसी शिष्य पुण्यकलश
1045	5359 (3)	,,	रत्नचन्द्र
1046	5375 (15)	,,	समयसुन्दर
1047	5404 (45)	,,	गुणसागरसूरि

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
22.5×12.5 11; 32	2–6	पूर्ण	19 वीं श.	र.का. 1750
25×11.5 12; 34	21–25	,,	19 वीं श.	
24×11 15; 40	7वां	,,	1819	
17.5×15 13; 18	50–53	,,	18 वीं श.	पत्रांक 47-49 पर स्फुट राग पद, आयुर्वेदिक नुस्खे तथा स्फुट स्तुति स्तोत्र हैं । लि.क. सुमतिरत्न गणि
25.5×11.5 15; 46	6–7	,,	1831	लि.क. रामविजय
25.5×11.5 11; 28	3–5	,,	19 वीं श.	र.का. 1833; पत्रांक 1-2 अप्राप्त
16.5×21.5 18; 20	115–121	पूर्ण	19 वीं श.	र.का. 1690; पत्रांक 122वां निरंकित व 123वां अप्राप्त
24.5×11.5 11; 35	6	,,	18 वीं श.	र.का. 1690
25×11.5 12; 34	11वां	,,	19 वीं श.	
18×12 12; 21	7–8	,,	20 वीं श.	
17.5×11 16; 18	33वां	,,	19 वीं श.	
13×21 24; 18	30वां	,,	18 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1048	5404 (54)	जिन-स्तवन	हर्षकीर्त्ति
1049	5404 (78)	,,	कानजी
1050	4055 (15)	जिन-स्तुति	
1051	4845	,,	मुनि रत्नविजय
1052	5325 (12)	,,	श्रीपाल
1053	5271 (35)	जिनागम-स्थापना-सत्यगीत	समयसुन्दर
1054	4937	जीरण सेठ नी सज्झाय	
1055	4042	जीवकाया-सज्झाय	
1056	5378 (38)	,,	
1057	4131	जीव-दया की सज्झाय	रत्नचन्द्र
1058	4387	,,	
1059	4935	,,	सोमसुन्दरसूरि
1060	5420 (6)	जीवदया की विनती	कवियण

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
13×21 24; 18	36–37	पूर्ण	18 वीं श.	
13×21 24; 18	73वां	,,	18 वीं श.	
24.5×11.5 14; 34	5वां	,,	19 वीं श.	
25×12 10; 28	1	,,	20 वीं श.	र.का. 1907
25×16.5 13; 28	76–77	,,	17 वीं श.	
30×16.5 13; 40	208वां	,,	18 वीं श.	कीटभक्षित
25.5×12 19; 44	1	,,	20 वीं श.	
25×11.5 13; 34	1	,,	19 वीं श.	
16.5×8 14; 26	79–81	,,	19 वीं श.	पत्रांक 79 पर जीव और देवताओं के भेद हैं।
26×11.5 17; 44	1(प्रथम)	,,	19 वीं श.	र.स्था. नागौर; लि.स्था. सर किशनगढ़
20×10.5 14; 36	3	,,	20 वीं श.	
24×12.5 12; 32	1	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
13.5×11.5 12; 20	8–9	,,	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1061	4678	जीव विचार-स्तवन	वृद्धिविजय
1062	5403(C) (6)	जीवाजीव-विषयक-सज्झाय	
1063	4971	जैन-गीत	देवानन्द
1064	5420 (4)	ज्ञान-कसीदा	मुनि ज्ञानचन्द
1065	5176	ज्ञानपंचमी-चैत्यवन्दन	
1066	5375 (11)	ज्ञानपंचमी-वृद्धि-स्तवन	समयसुन्दर
1067	4464 (1)	ज्ञान-पचीसी	बनारसीदास
1068	5271(B) (44)	"	"
1069	5325(B) (14)	"	"
1070	5341 (19)	"	"
1071	5375 (55)	"	"
1072	5404 (99)	डोरी	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25.5×12 9;28	8	पूर्ण	19 वीं श.	र.का. 1713; पत्रांक दूसरा दो बार
26×14.5 9;18	129–130	,,	19 वीं श.	
25.5×11 14;20	3	,,	1858	जीर्ण-शीर्ण; लि.क. सौभाग्यविजय
13.5×11.5 12;20	6ठा	,,	19 वीं श.	
24.5×10.5 9;38	3	,,	1922	लि. स्था. पाली; ग्रंत में सिद्ध-चक्र नित्यपूजा-विधि; हस्त-संजीवनो तथा शौच-विधि के स्फुट श्लोक हैं।
17.5×11 16;18	19–21	,,	19 वीं श.	
21×10 9;22	1–4	,,	18 वीं श.	
30×16.5 13;40	232–233	,,	18 वीं श.	
25×16.5 13;28	82-84	,,	17 वीं श.	
12×8 9;12	300–304	,,	19 वीं श.	
17.5×11 16;18	72–74	,,	19 वीं श.	
13×21 24;18	94-95	,,	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1073	4100 (12)	ढंढण-ऋषि-सज्झाय	जिनहर्ष
1074	5152	,,	,,
1075	5416 (36)	,,	,,
1076	4259	ढाल निहालदे की	चन्द्रभान
1077	4134	ढाल-संग्रह	गुणसागर शिष्य पद्मसूरि
1078	5122	तम्बाकू री सज्झाय	तेजसिंह
1079	4818 (11)	तारा नो सज्झाय	
1080	5272 (1)	तीन-चौबीसी का नाम	
1081	5404 (17)	तीन-चौबीसी-नाम-स्तवन	सुमतिसागरसूरि
1082	5379 (2)	तीर्थङ्कर-गीत तथा स्तवन-पद-संग्रह *महिमानिदान, रत्नचन्द्र, गुण सौभाग्यसूरि, राजमूर्त्ति, धनहर्ष, भैरवदास, साधुकीर्त्ति	सौभाग्यसागर, रत्नकीर्त्ति, कल्याणसागर, वीर स्वामीदास, समयसुन्दर, विजयसागर, कबीर, गंगाराम, लालदास, हरिदास, नंददास, वच्छनागर, कनकसिंह, हीर, जीवराज, माल, महमूदकाजी, सूर, विवेकमेरु, विद्याकुशल, लेखराज, भानुचन्द, सहजसुन्दर, जयवंतसूरि, विजयविमल, लावण्यसमय,*

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण / अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
22×10.5 11;30	10–11	पूर्ण	19 वीं श.	
24.5×12 11;32	1	,,	1853	लि.क. दलीचन्द्र
15×12 11;16	67–69	,,	1869	लि.क. पं. बिजयचन्द्र
25.5×11 12;24	1	,,	1880	र.का. 1863; र.स्था.फतेपुर बांगड़ लि.स्था. भरतपुर
24×11.5 19;37	1	,,	19 वीं श.	
24.5×10.5 18;48	3(तृतीय)	,,	1733	लि.क. मनोहर
23×10.5 14;32	6–7	,,	19 वीं श	
20.5×27.5 31;28	1(प्रथम)	,,	1916	
13×21 24;18	8वां	,,	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
14.5×11 16;20	15–43	,,	19 वीं श.	पत्रांक 21-22 पर नेमिनाथ बारह-मासा; 26-27 पर नेम बारह-मासा; 35वें पर मानसिंह कृत पार्श्वस्तवन; 42-43 तक सेवक लिबू कृत भाषा

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1083	4063	तीर्थमाला	समयसुन्दर
1084	5404 (22)	तीर्थमाला-स्तवन	समयसुन्दर
1085	5369 (12)	तेरह काठिया री सज्झाय	
1086	5404 (124)	तेरह-काठिया-स्वाध्याय	
1087	4818 (8)	तेवीस-पदवी-सज्झाय	केशव
1088	4216 (1)	,,	रतनसिंह
1089	4242 (37)	त्रिगढ़ा-स्तुति	
1090	4002 (4)	त्रिविपद नी सज्झाय	रूपसी ऋषि
1091	5403 (1)	त्रिषष्टि-शलाका-छन्द-अनुक्रमणिका	ब्रह्म कामराज
1092	4002 (2)	त्रिषष्टि-शलाका-उत्तमपुरुष-स्तवन	
1093	4927	दशपञ्चखण्ड-स्तवन	
1094	4609	,,	रामचन्द्र
1095म.	3541	दशवैकालिक-दशाध्ययन-गीत	कमलहर्ष

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
25.5×12 12;34	1	पूर्ण	19 वीं श.	अंत में सीमन्धर-पद है।
13×21 24;18	13वां	,,	18 वीं श.	
13.5×22 19;18	36वां	,,	18 वीं श.	
13×21 24;18	172वां	,,	1765	लि.स्था. आगरा
23×10.5 14;32	4–5	,,	19 वीं श.	
24.5×10.5 14;40	1(प्रथम)	,,	19 वीं श.	र. का. 1681
31×13.5 10;26	31–32	,,	20 वीं श.	
26×11.5 16;40	4–5	,,	18 वीं श.	र.का. 1681
26×14.5 10;20	4–6	,,	19 वीं श.	
26×11.5 16;40	2–3	,,	18 वीं श.	
26×11 13;32	2(द्वितीय)	अपूर्ण	19 वीं श.	प्रारम्भांश पत्र अप्राप्त
26×11 13;38	2	पूर्ण	1921	लि.क. शान्तिरत्न गणि; लि.स्था. पाली; र.का. 1731
25×10.5 13;38	7	,,	1723	लि क. विद्याविलास; लि. स्था. सोजत; रचना काल व प्रतिलिपि काल एक ही है।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1096	5375(A) (53)	दशश्रावक-स्तवन	श्रीसार
1097	5399(B) (15)	दशार्णभद्र-गीत	
1098	5117	दशार्णभद्र-छन्द	
1099	5271(A) (45)	दशार्णभद्र-सज्झाय	भावविजय शिष्य शुभविजय
1100	4967	दशार्णभद्र ऋषि-सज्झाय	लालविजय शिष्य शुभविजय
1101	5378 (19)	दशार्णभद्र-सज्झाय	
1102	4050	दशार्णभद्र-राजऋषि-सज्झाय	
1103	5404(B) (68)	दस-समाचारी	
1104	4400 (31)	दादाजी के गीत	जिनचन्द्र
1105	4589	दादाजी री घग्घर-निसाणी	दौलतराम यति
1106	5375 (17)	दादाजी-स्तवन-संग्रह	समयसुन्दर, ज्ञानमेरु, आशकरण शिष्य सेवककुम्भ, जयचन्द, कुम्भ, सुमतिरंग, जिनरंगसूरि, राजसागर, जिनविजयसूरि, भुवनकीर्त्ति, राजहर्ष, जिनचंदसूरि, लछीराम

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17.5×11 16; 18	64–66	पूर्ण	19 वीं श.	
14×13 20; 24	63–65	,,	18 वीं श.	
26×11 15; 48	2	,,	1747	लि.स्था. नागौर
30×16.5 13; 40	235–236	,,	18 वीं श.	कीटभक्षित
26×13 13; 30	2	,,	20 वीं श.	कीटभक्षित
16.5×8 14; 26	44–45	,,	19 वीं श.	अंत में गीत भी हैं।
25.5×11.5 17; 40	1	,,	1865	
13×21 24; 18	51–53	अपूर्ण	18 वीं श.	
25×11.5 12; 34	21वां	पूर्ण	19 वीं श.	
27.5×12.5 16; 38	1	,,	1947	र.का. 1835
17.5×11 16; 18	2–11	,,	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1107	4100 (1)	दादाजी-स्तवन	जिनरंगसूरि
1108	4401	दादाजी री स्तुति	
1109	4100 (23)	दादाजी री स्तुति	
1110	5343 (15)	दान-सज्झाय	मुनि लावण्य
1111	3674	दीवाली-सज्झाय	जैमल
1112	5378 (2)	,,	ऋषभसागर
1113	5404 (42)	देवता-विहरमान-स्तवन	शिवचन्द मुनि
1114	5349 (8)	देवाधिदेव-गुण-स्तुति	
1115	4218 (2)	देवीजी-स्तवन	सागरचन्द
1116	4958 (2)	द्वारका री सज्झाय	
1117	5404 (114)	धन्ना-अणगार री सज्झाय	सेवक सिंघो
1118	4818 (1)	,,	विद्याकीर्त्ति
1119	5358 (29)	धन्ना ऋषि-सज्झाय	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
22×10.7 11;30	1–2	पूर्ण	19 वीं श.	
25×11.5 10;30	1 (अंतिम)	अपूर्ण	19 वीं श.	
22×10.5 11;30	24वां	पूर्ण	19 वीं श.	
17.5×13.5 11;20	41–42	,,	20 वीं श.	
24×11 21;40	1	,,	1817	लि.क. रायचन्द; लि.स्था. नागौर
16.5×8 14;26	4(चतुर्थ)	,,	19 वीं श.	
13×21 24;18	29वां	,,	18 वीं श.	
16×10 11;20	20वां	,,	18 वीं श.	
25.5×11.5 14;29	4(चतुर्थ)	,,	19 वीं श.	
25.5×10.5 23;52	1	,,	20 वीं श.	अंत में धनीदास का पद तथा उत्पात-फल भी है।
13×21 24;18	150वां	,,	19 वीं श.	
23×10.5 14;32	1(प्रथम)	,,	19 वीं श.	
17×11 11;16	106–107	,,	18 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1120	5416 (34)	धन्ना ऋषि री सज्झाय	तिलोकसी
1121	5375 (27)	,,	,,
1122	5375(B) (44)	,,	कुशल
1123	5404 (63)	,,	तिलोकचन्द
1124	4100 (15)	,,	
1125	4052	,,	विद्याकीरत
1126	5404 (149)	धन्नाजी की सज्झाय	श्रीदेव
1127	4890	,,	,,
1128	4837 (8)	धन्ना शालिभद्र सज्झाय	
1129	5375 (33)	,,	समयसुन्दर
1130	5378 (29)	,,	
1131	4731 (5)	धमाल	
1132	5303(M) (8)	धर्मजिनेश-स्तवन	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15×12 11;16	60-62	पूर्ण	1869	लि.क. विजयचंद
17.5×11 16;18	7-8	,,	19 वीं श.	
17.5×11 16;18	32-33	,,	19 वीं श.	
13×21 24;18	43-44	,,	18 वीं श.	
22×10.5 11;30	12-13	,,	19 वीं श.	
24.5×11.5 17;34	7	,,	19 वीं श.	
13×21 24;18	220-221	,,	18 वीं श.	
25.5×11 16;56	1	,,	20 वीं श.	साथ में पार्श्वनाथ एवं उपदेशी कृति भी है।
24×10.5 17;38	6-7	,,	19 वीं श.	
17.5×11 16;18	16-17	,,	19 वीं श.	
16.5×8 14;26	64वां	,,	19 वीं श.	
22×10.5 11;19	5वां	,,	19 वीं श.	
17.5×15 13;18	63वां	,,	18 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1133	5189	धर्म-दुहैलो	
1134	5271(C) (45)	धर्मनाथजिन-स्तवन	राजहर्ष शिष्य ललितकीर्त्ति
1135	5343(B) (23)	धर्मनाथजिन-स्तवन	मोहनविजय
1136	4400 (26)	,,	
1137	5349 (17)	,,	आनन्दघन
1138	5273	धर्म-परीक्षा-भाषा	मनोहर खण्डेलवाल
1139	5271(C) (44)	ध्यान-बत्तीसी	बनारसी
1140	5300 (10)	,,	
1141	5341 (17)	,,	बनारसी
1142	5170 (1)	नन्द-बत्तीसी	
1143	4491	नन्द-बहोत्तरी	
1144	4837 (16)	नन्दिषेण-स्वाध्याय	लब्धिविजय
1145	5366 (24)	,,	लालविजय

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
25.5×15 14;26	14	अपूर्ण	19 वीं श.	अति जीर्ण-शीर्ण; अंतिमांश अप्राप्त ।
30×16.5 13;40	236-237	पूर्ण	18 वीं श.	
17.5×13.5 11;20	10-11	,,	20 वीं श.	
25×11.5 12;34	18-19	,,	19 वीं श.	
16×10 11;20	34वां	,,	18 वीं श.	
20.5×28.5 22;16	131	,,	1932	र.का. 1775; र.स्था. सांगानेर; लि.स्था. किशनगढ़
30×16.5 13;40	233-234	,,	18 वीं श.	
13×17.5 16;18	56-57 व 62वां	अपूर्ण	19 वीं श.	अंतिमांश अप्राप्त
12×8 9;12	284-295	पूर्ण	19 वीं श.	
24×10 14;42	1-5	,,	1760	लि.क. अमरसागर; लि.स्था. मालपुरा; प्रारंभांश 'अग्निदग्ध'
24.5×11 10;34	4	,,	19 वीं श.	लि.क. ब्रजलाल; र.का. 1714
24×10.5 17;38	10-11	,,	19 वीं श.	
16.5×11 19;30	31वां	,,	1851	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1146	5364(B) (30)	नन्दिषेण-स्वाध्याय	मेरुविलास
1147	5343 (16)	,,	,,
1148	4468 (2)	नन्दीश्वर-स्तव-सार्थ	मुनि मेरु
1149	5404 (48)	नरक-विभक्ति-गर्भित-स्तवन	गुणसागरसूरि
1150	4699 (1)	नवकार-कवित्त	ज्ञानसागर यति
1151	4469	नवकार-मन्त्र-सार्थ	
1152	4244	नवकार-मंत्र-स्तवन	कुशललाभ
1153	5419 (2)	नवकार री सज्झाय	गुणसुन्दर
1154	5153 (1)	,,	विचारलब्धि
1155	4978	नवखण्ड-पार्श्वनाथ-स्तवन	जिनलाभसूरि
1156	5266	,,	लब्धिचन्द्र शिष्य भानुचन्द
1157	5403(B) (7)	नवपद-स्तवन	
1158	5039	,,	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
18×9 9;20	73–75	पूर्ण	1876	लि.स्था. सादड़ी
17.5×13.5 11;20	42–44	,,	20 वीं श.	
25.5×11.5 14;40	5–9	,,	19 वीं श.	
13×21 24;18	32–33	,,	18 वीं श.	
17.5×10 8;20	1–4	,,	20 वीं श.	
26×11 11;28	4	,,	18 वीं श.	लि.क. मुनि महिमामूर्त्ति
25×10.5 9;40	2	,,	19 वीं श.	
13.5×9 9;12	3–5	,,	19 वीं श.	
11.5×26 29;18	1(प्रथम)	,,	19 वीं श.	
24.5×11 10;28	1	,,	19 वीं श.	र.का.1830; अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण; एक ओर ही लिखित है।
22×10.5 13;35	2	,,	19 वीं श.	
26×14.5 9;18	136–139	,,	19 वीं श.	
26.5×11.5 17;34	1	,,	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1159	4242 (15)	नवपद-स्तुति	
1160	5071 (26)	नव-ब्रह्मचर्य-बाड़ी-गीत	पुण्यसागर
1161	4535 (9)	नवलखा-पार्श्व-स्तवन	लक्ष्मीविजय
1162	4621 (2)	नववाड़ी-सज्झाय	अमर मुनि
1163	4969	,,	उदयरत्न
1164	3549	,,	जिनहर्ष
1165	5416 (12)	नाकोड़ा-पार्श्वनाथजिन-स्तवन	समयसुन्दर
1166	5419(B) (1)	,,	,,
1167	4400 (11)	नाकोड़ा-पार्श्वनाथ-लघु-स्तवन	,,
1168	5404(B) (91)	नागदा-शांतिनाथ-स्तवन	गुणसागरसूरि
1169	4245	नाटक-सज्झाय	धर्मचन्द वाचक
1170	4119 (1)	नाम-निर्माण-कथा	जयसमुद्र
1171	5378 (3)	निन्दक-सज्झाय	राजसमुद्र

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
31×13.5 10;26	22वां	पूर्ण	20 वीं श.	
30×16.5 13;40	181–182	,,	1724	कीटभक्षित
25.5×11.5 15;46	3(तृतीय)	,,	1831	लि.क. रामविजय
26×11.5 21;50	7–8	,,	1817	र.स्था. फतेपुर
25.5×12 13;34	3	,,	1892	कीटभक्षित
26×11 11;30	6	,,	19 वीं श.	र.का.1692; लि.क. अमोलकचंद; लि.स्था. वीचूंद
15×12 11;16	20–21	,,	1869	लि.क. विजयचंद
13.5×9 9;12	2–3	,,	19 वीं श.	
25×11.5 12;34	9वां	,,	19 वीं श.	
13×21 24;18	85वां	,,	18 वीं श.	र का. 1659
25×11 13;35	1	,,	19 वीं श.	
22.5×11 10;25	1–2	,,	19 वीं श.	
16.5×8 14;26	7–8	,,	19 वीं श.	अतिरिक्त 5वें पृष्ठ पर लालसागर कृत स्तवन है।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1172	5378 (36)	निन्दक-सज्झाय	राजसमुद्र
1173	4837 (3)	"	
1174	5349 (25)	निर्ग्रन्थ-गीत	
1175	5343 (30)	निर्वाण-कल्याणक	
1176	5366 (17)	निश्चय-व्यवहार-स्तवन	जसविजय
1177	5399 (18)	नेककुमार-गीत	पुण्यपाल
1178	4902 (3)	नेमिगीत	गंग
1179	4220	नेमिजिन-स्तवन	क्षमाविजय
1180	5122 (1)	"	तेजसिंह
1181	5182 (2)	"	पद्मसागर
1182	4242 (36)	नेमिजिन-स्तुति	
1183	4242 (17)	"	
1184	5364 (36)	नेमिनाथ-गीत	रूपविमल

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
16.5×8 14;26	77वां	पूर्ण	19 वीं श.	
24×10.5 17;38	2–3	,,	19 वीं श.	
16×10 11;20	66–67	,,	18 वीं श.	पत्रांक 66वां अप्राप्त ।
17.5×13.5 11;20	30–31	,,	20 वीं श.	
16.5×11 19;30	24–26	,,	1851	
14×13 20;24	74–75	,,	18 वीं श.	
22.5×10 14;34	16वां	,,	19 वीं श.	
24.5×11.5 28;16	1	,,	20 वीं श.	
24.5×10.5 18;48	1(प्रथम)	,,	19 वीं श.	र.का. 1811; र.स्था. बड़ौदा
24.5×11 13;40	1	,,	18 वीं श.	
31×13.5 10;26	31वां	,,	20 वीं श.	
31×13.5 10;26	23वां	,,	20 वीं श.	
18×9 9;20	83–84	,,	1882	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1185	4611 (6)	नेमिनाथजिन-स्तवन	लालचन्द
1186	5416 (1)	,,	महानन्द मुनि
1187	3687 (1)	,,	क्षमाकल्याण पाठक
1188	5364 (13)	,,	
1189	4273 (7)	नेमिनाथ-राजमति-स्तवन	ऋद्धिहर्ष
1190	5378 (14)	नेमिनाथ-स्तवन	
1191	5404 (96)	,,	कल्याणसागर
1192	5078	,,	आनन्दघन
1193	5303(s) (8)	,,	
1194	5297 (3)	नेमिनाथजी का नवमंगल	
1195	5349 (1)	नेमिनाथ-राजीमति-गीत	मानसागर
1196	5378 (35)	,,	भुवनकीर्त्ति
1197	5378 (22)	,,	ऋषभ शिष्य ऋद्धिसागर

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
25.5×11.5 11;28	17–19	पूर्ण	18 वीं श.	र.का. 1833
15×12 11;16	6–7	"	1869	पत्रांक 1-5 अप्राप्त
25.5×10.5 13;34	1 (प्रथम)	"	19 वीं श.	
18×9 9;20	36वां	"	1875	
26×11 13;22	4–6	"	19 वीं श.	
17×11 11;16	92वां	"	18 वीं श.	
13×21 24;18	90–91	"	18 वीं श.	र. का. 1681
26×12 12;28	2	"	19 वीं श.	
17.5×15 13;18	68–69	"	18 वीं श.	10-16 के पद्य 77वें पत्र पर पूर्ण होते हैं।
22×19.5 14;30	180–181	अपूर्ण	20 वीं श.	
16×10 11;20	1–2	पूर्ण	18 वीं श.	
16.5×8 14;26	77वां	"	19 वीं श.	
16.5×8 14;26	50वां	"	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1198	4535 (13)	नेमिनाथ-राजीमती-गीत	नित्यविजय
1199	5358 (18)	,, -विनती	
1200	5366 (5)	,, -सज्झाय	प्रमाणसागर
1201	4698	,, -सवैया	
1202	5378 (30)	,, -स्तवन	जिनरंग
1203	4039	नेमि-राजुल-कागल	
1204	5378 (39)	,, -गीत	
1205	4535 (18)	,, -बारामासी	
1206	5366 (18)	,, -सज्झाय	
1207	5356(A) (5)	,, -स्तवन	विद्याहर्ष
1208	5420 (12)	,,	जीतसागर
1209	5404 (30)	नेमीश्वरजी का हिंडोला	पंचायण
1210	5404 (46)	नेमीश्वर-स्तवन	गुणसागरसूरि

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25.5×11.5 15; 46	5वां	पूर्ण	1832	लि.क. रामविजय
17×11 11; 16	97–99	"	18 वीं श.	
16.5×11 19; 30	10वां	"	19 वीं श.	
24×10.5 14; 52	1	"	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
16.5×8 14; 26	65–67	"	19 वीं श.	अंत में ऋषभसागर कृत 'धर्मनाथ-गीत' हैं।
24.5×11 16; 44	1	"	1832	लि.क. चतुर्विजय; लि. स्था. आहोर
16.5×8 14; 26	81–83	अपूर्ण	19 वीं श.	स्फुट पत्र
25.5×11.5 15; 46	8–10	"	1831	लि.क. रामविजय; पत्रांक 8-9 अप्राप्त
16.5×11 19; 30	26वां	पूर्ण	1851	
12×12.5 16; 15	23–26	"	19 वीं श.	कीटभक्षित व जीर्ण-शीर्ण
13.5×11.5 12; 20	18–20	"	19 वीं श.	
13×21 24; 18	19वां	"	18 वीं श.	
13×21 24; 18	30–32	"	18 वीं श.	र.का. 1770

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा.			
1211	5397 (2)	पंचकल्याण-मंगल	रूपचन्द
1212	5181	पंचकल्याणक-स्तवन	जिनचन्द
1213	4412 (1)	पंचतीर्थी-नमस्कार	
1214	5404 (19)	पंचतीर्थी-स्तवन	मुनि लावण्यसमय
1215	5419 (4)	"	"
1216	4837 (6)	पंचदृष्टान्त-नी-सज्झाय	गुणहर्ष
1217	5357 (31)	पंचपरमेष्ठि-नमस्कार-स्तवन	जिनवल्लभसूरि
1218	5271 (29)	पंचपरमेष्ठि-महामंत्र-स्तवन	जिनदत्तसूरि
1219	5405 (5)	पंचपरमेष्ठि-स्तवन	गुणप्रभसूरि
1220	5351 (2)	पंचमंगल	रूपचन्द्र
1221	5353 (12)	"	"
1222	5072	पंचमंगल-स्तवन	"
1223	5272 (4)	"	"

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
18.5×18.5 18;24	260–264	पूर्ण	18 वीं श.	
11×23 29;24	1	"	19 वीं श.	त्रुटित
30×13 10;29	104–105	"	19 वीं श.	पत्रांक 103 अप्राप्त
13×21 24;18	9–10	"	18 वीं श.	
13.5×9 9;12	9–14	"	19 वीं श.	
24×10.5 17;38	5वां	"	19 वीं श.	
17.5×11 16;18	13–14	"	19 वीं श.	
30×16.5 13;40	191–192	"	17 वीं श.	कीटभक्षित
18×11 10;18	29–30	"	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; कीटविद्ध
13×10 10;14	5–17	"	19 वीं श.	
15.5×12 13;26	167–172	"	19 वीं श.	
24.5×10 21;48	2	"	1942	लि क. मोतीलाल साधु; लि.स्था. गाजीपुर
20.5×27.5 31;28	1–3	"	1916	केवल प्रथम व द्वितीय मंगल

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1224	4400 (1)	पंचमीतप वृद्ध तथा लघु-स्तवन	समयसुन्दर
1225	5356 (4)	पंचमीतप-स्तवन	"
1226	4273 (8)	पंचमी-स्तवन	सौभाग्य(?)
1227	5404 (93)	"	मुनि केसराज
1228	4242 (6)	पंचमी-स्तुति	
1229	5364 (2)	पंचव्रत (परिग्रहव्रत) सज्झाय	कान्तिविजय
1230	4819	पंचेन्द्रिय-सज्झाय	विजयदेवसूरि
1231	5348 (2)	"	
1232	5029	"	हेमविजय शिष्य कमलविजय
1233	5416 (22)	"	जिनहर्ष
1234	4837 (14)	पडिलेहण-सज्झाय	
1235	5341(A) (5)	पद (स्फुट)	
1236	5341(C) (5)	"	नवल, जगतराम

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25×11.5 12; 34	3–4	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्रांक 1-2 अप्राप्त
12×12.5 16; 15	21–23	पूर्ण	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; कीटविद्ध; पत्र चिपके हुए हैं।
26×11 13; 22	6–7	"	19 वीं श.	
13×21 24; 18	87–88	"	18 वीं श.	
31×13.5 10; 26	15–16	"	20 वीं श.	
18×9 9; 20	2–7	"	1874	लि.क. मायासागर शिष्य दलपतसागर; अंत में 'प्रभा-दृष्टि-सज्झाय' है।
22×11 11; 28	1	"	19 वीं श.	लि.क. कान्हजी ऋषि
14.5×9.5 12; 11	4–6	अपूर्ण	18 वीं श.	
24.5×10.5 14; 38	1	पूर्ण	1646	जीर्ण-शीर्ण; लि.क. पंचानन
15×12 11; 16	44–45	"	1869	लि.क. विजयचन्द
24×10.5 17; 38	9–10	"	19 वीं श.	
12×8 9; 12	216–217	"	19 वीं श.	
12×8 9; 12	221–224	"	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) वै.सा. 1237	5404 (66)	पद (स्फुट)	जिनसुन्दर, रूपचन्द
1238	5419 (10)	"	
1239	5343 (28)	पद (जन्म कल्याण-स्तवन)	हीरधर्म
1240	5420 (11)	पद राग-बिलावल	देवभूषण
1241	4100 (5)	पद-संग्रह	जिनलाभसूरि
1242	4293 (6)	"	
1243	4368	"	जिनचंद, जिनभूषण, शिवचंद, रूपचंद
1244	4731	"	चंदविजय, गुलाब
1245	5343 (20)	"	हर्षचंद, उदयरत्न, धरमसी
1246	5404 (70)	"	नेमिचंद, सुमतिसागर, जिनदास, बनारसी
1247	5346 (6)	पद्मनाभ-जिन-स्तवन	देवचंद्र
1248	5378(E) (12)	पद्मप्रभ-जिन-स्तवन	सुखराज

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
13×21 24; 18	49वां	पूर्ण	18 वीं श.	
13.5×9 9; 12	23–24	अपूर्ण	19 वीं श.	
17.5×13.5 11; 20	28–29	पूर्ण	20 वीं श.	अंत में 'दीक्षा ज्ञान स्तवन' है।
13.5×11.5 12; 20	17–18	,,	19 वीं श.	
22×10.5 11; 30	3–4	,,	19 वीं श.	
26×12 10; 22	9वां	अपूर्ण	19 वीं श.	
24×10.5 11; 36	4–8	,,	19 वीं श.	पत्रांक 1-3 अप्राप्त
22×10.5 11; 19	3–4	पूर्ण	19 वीं श.	
17.5×13.5 11; 20	47–49	,,	20 वीं श.	
13×21 24; 18	55–57	,,	18 वीं श.	
13.5×23 23; 16	30वां	,,	19 वीं श.	
16.5×8 14; 26	22वां	,,	19 वीं श.	लि.क. कीर्त्तिसागर; 20वां पत्र अप्राप्त; 21वें पत्रांक पर शुभसागर कृत अपूर्ण स्तवन है।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1249	5303(D) (8)	पद्मप्रभ-स्तवन	
1250	3573	पद्मावती-आराधना	समयसुन्दर
1251	5416 (32)	पद्मावती-आलोयरणा	,,
1252	3981	पद्मनी-चरित्र	लब्धोदय
1253	5123 (1)	पनेर करमाटां-सज्झाय	करमादान
1254	4128 (2)	पन्द्रह तिथि की सज्झाय	गंगदास
1255	4818 (9)	परस्त्री नी सज्झाय	विजय (?)
1256	4242 (16)	पर्युषरण-स्तुति	
1257	5364 (16)	पाँच-तीर्थी-स्तवन	समयसुन्दर
1258	5016	पाँच-पाण्डव री सज्झाय	हीर
1259	4893 (1)	पाँचमा आरानो भाव-सज्झाय	जिनहंस
1260	5416 (21)	पाँच-संवर-सज्झाय	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण / अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17.5×15 13; 18	57–58	पूर्ण	18 वीं श.	
25.7×10.5 13; 40	2	„	1770	लि. क. उदयचन्द; लि. स्था. आगरा; जीर्ण-शीर्ण; अंत में 'अम्बिका-स्तुति' तथा सोलह-सतियों के नाम है।
15×12 11; 16	59–60	„	1869	लि.क. बिजयचन्द
24.5×12 11; 28	51	„	1845	र.का. 1777; लि.क. चित्रनन्दन; लि.स्था. प्रतापगढ़
26.5×11.5 16; 44	1 (प्रथम)	„	19 वीं श.	
24×11.5 15; 42	1 (प्रथम)	„	19 वीं श.	
23×10.5 14; 32	5–6	„	19 वीं श.	
31×13.5 10; 26	22–23	„	20 वीं श.	
18×9 9; 20	46वां	„	1876	
25×11.5 11; 42	1	„	20 वीं श.	त्रुटित पत्र
24.5×11.5 14; 34	1 (प्रथम)	„	20 वीं श.	
15×12 11; 16	42–44	„	1869	लि.क. विजयचन्द

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1261	4100 (22)	पार्श्वनाथ-अष्टमय-निवारण	
1262	4965 (2)	पार्श्वनाथ-गीत	ज्ञानविमलसूरि
1263	5366 (15)	,,	ज्ञानविमल, उदयरत्न, आनन्दघन
1264	4603	पार्श्वनाथ-घग्घर-निसाणी	जिनहर्ष
1265	4982	,,	लालसेन कवि
1266	5349 (31)	,,	जिनहर्ष
1267	5404 (98)	,,	,,
1268	5018	पार्श्वनाथ-छन्द	मुनि मेघराज
1269	5392 (2)	,,	नारायण
1270	5392 (1)	,,	कवि ध्यान
1271	5408 (9)	पार्श्वनाथ-जयमाल	
1272	4400 (5)	पार्श्वनाथ-जिन-लघु-स्तवन तथा समस्त जिन-स्तुति	
1273	4055 (2)	पार्श्वनाथ-जिन-स्तवन	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
22×10.5 11;30	21-23	पूर्ण	19 वीं श.	अंत में 'गौड़ी-पार्श्वनाथजी रो गीत' है ।
22.5×11.5 14;34	1	,,	20 वीं श.	
16.5×11 19;30	23वां	,,	19 वीं श.	
25.5×11 12;48	2	,,	19 वीं श.	
21×15 12;20	2-5	अपूर्ण	20 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; प्रथम पत्र अप्राप्त ।
16×10 11;20	125-131	पूर्ण	18 वीं श.	
13×21 24;18	92-94	,,	1791	लि.क. यति श्यामदत्त
24.5×12 11;32	1	,,	20 वीं श.	लि.क. अमृतविजय
7.5×5.5 8;8	20-25	,,	20 वीं श.	
7.5×5.5 8;8	17-19	अपूर्ण	20 वीं श.	पत्रांक 1-16 अप्राप्त
16.5×10.5 10;20	19वां	पूर्ण	20 वीं श.	
25×11.5 12;34	7वां	,,	19 वीं श.	
24.5×11.5 14;34	1(प्रथम)	,,	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जं.सा. 1274	4293 (3)	पार्श्वनाथ-जिन-स्तवन	दीपचन्द
1275	5343 (25)	,,	लब्धिरुचि
1276	5349 (18)	,,	पाशचन्द्रसूरि
1277	5349(B) (19)	,,	विमलचन्द्र चरित्र
1278	5364(B) (15)	,,	
1279	5364 (19)	,,	उदयरत्न
1280	5364 (28)	,,	हीरविजयसूरि
1281	5366 (20)	,,	बुद्धिविजय शिष्य रत्नविजय
1282	5378 (7)	,,	जसवन्तसागर
1283	5416 (4)	,,	जिनभक्तिसूरि
1284	4100 (2)	पार्श्वनाथ-जिन-स्तुति	
1285	5081 (1)	पार्श्वनाथ देशान्तरी-छन्द	लक्ष्मीवल्लभ
1286	5392 (10)	,,	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
26×12 10;22	6–7	पूर्ण	19 वीं श.	
17.5×13.5 11;20	15–17	„	20 वीं श.	
16×10 11;20	35वां	„	18 वीं श.	
16×10 11;20	36वां	„	18 वीं श.	
18×9 9;20	40–42	„	1876	
18×9 9;20	50वां	„	1876	
18×9 9;20	63–70	„	1876	
16.5×11 19;30	28वां	„	1851	
16.5×8 14;26	10–11	„	19 वीं श.	
15×12 11;16	9–11	„	1869	र.स्था. जैसलमेर
22×10.5 11;30	2–3	„	19 वीं श.	
21×10.5 13;38	1–3	„	20 वीं श.	
7.5×5.5 8;8	126–146	अपूर्ण	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1287	5081 (2)	पार्श्वनाथ-निसाणी	
1288	5364(C) (22)	पार्श्वनाथ-पद	
1289	5364(A) (15)	पार्श्वनाथ-पद-संग्रह	रतनसागर, जिनचन्द्र, उदयसागर
1290	5364(D) (15)	पार्श्वनाथप्रभु जिन-स्तवन	मोहन
1291	4037 (1)	पार्श्वनाथ-लघु-स्तवन	समयसुन्दर
1292	4037 (2)	,,	राजसोम यति
1293	4055 (14)	,,	,,
1294	4150 (2)	,,	ज्ञानतिलक
1295	4400 (2)	,,	समयसुन्दर
1296	4900	,,	
1297	4282 (10)	पार्श्वनाथ-स्तवन	
1298	3696 (3)	,,	कीरत मुनि
1299	4055 (17)	,,	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
21×10.5 13; 38	3–5	अपूर्ण	20 वीं श.	
18×9 9; 20	55वां	पूर्ण	1876	
18×9 9; 20	44–45	,,	1876	
18×9 9; 20	44–45	,,	1876	
25.5×11.5 13; 44	1(प्रथम)	,,	19 वीं श.	लि.क. शंभुराम; लि.स्था. पाली; संस्कृत में भी रचना है ।
25.5×11.5 13; 44	1(प्रथम)	,,	19 वीं श.	लि.क. शंभुराम; लि.स्था. पाली; इसकी भाषा फारसी मिश्रित राजस्थानी है ।
24.5×11.5 14; 34	4–5	,,	19 वीं श.	
25×11 13; 34	1(प्रथम)	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
25×11.5 12; 34	4था	,,	19 वीं श.	र.का. 1722
25×11 13; 34	1	,,	19 वीं श.	
21×10.5 15; 33	3–4	,,	19 वीं श.	
25×11 27; 58	1(प्रथम)	,,	18 वीं श.	
25×11.5 14; 34	5–6	,,	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1300	4100 (18)	पार्श्वनाथ-स्तवन	
1301	4100 (20)	"	
1302	4151	"	
1303	4273 (1)	"	राजसमुद्र
1304	4273 (2)	"	
1305	4400 (13)	"	
1306	4400 (15)	"	जसवर्द्धन
1307	4400 (25)	"	जिनहर्ष
1308	4400 (28)	"	लाभउदय
1309	4801	"	राजरत्न पाठक
1310	5054	"	जिनलाभसूरि
1311	5085	"	"
1312	5319 (5)	"	ऋषभसागर

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
22×10.5 11;30	15वां	पूर्ण	19 वीं श.	
22×10.5 11;30	16वां	,,	19 वीं श.	
24.5×11.5 11;34	1	,,	20 वीं श.	अंत में लग्न निकालने की विधि संस्कृत में है।
26×11 13;22	1(प्रथम)	,,	19 वीं श.	
26×11 13;22	1–2	,,	19 वीं श.	
25.5×11.5 12;34	10-11	,,	19 वीं श.	
25×11.5 12;34	11–12	,,	19 वीं श.	
25×11.5 12;34	18वां	,,	19 वीं श.	अंत में 'आतम शिष्य स्तवन' है।
25×11.5 12;34	20वां	,,	19 वीं श.	
25×11 10;30	1	,,	19 वीं श.	
25.5×11.5 11;32	1	,,	19 वीं श.	लि.क. अमरदत्त; लि.स्था. सूरत
24.5×11 14;38	33वां	,,	19 वीं श.	र.का. 1870; र.स्था. जैसलमेर के पास लोध्रवपुर
11.5×16 24;32	21वां	,,	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1313	5349 (2)	पार्श्वनाथ-स्तवन	
1314	5349 (11)	,,	विजयदेवसूरि
1315	5356(B) (6)	,,	शान्तिविजय
1316	5356(A) (7)	,,	,,
1317	5362 (5)	,,	मेरु मुनि
1318	5378(A) (14)	,,	उदय
1319	5378(B) (12)	,,	सुखराज
1320	5378 (13)	,,	जयकवि
1321	5378 (27)	,,	दौलत शिष्य राजसुन्दर
1322	5404 (15)	,,	ऋषि आनन्द
1323	5404 (18)	,,	राजसमुद्र
1324	5404 (28)	,,	विनयसागरसूरि
1325	5404 (31)	,,	यति विशाल

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
16×10 11;20	3(तृतीय)	पूर्ण	18 वीं श.	
16×10 11;20	24–25	„	18 वीं श.	
12×12.5 16;15	30–31	„	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; कीटभक्षित; पत्र चिपके हुए।
12×12.5 16;15	31–32	„	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; कीटविद्ध
12×10.5 10;15	126वां	„	18 वीं श.	
16.4×8 14;26	25वां	„	19 वीं श.	
16.5×8 14;24	18वां	„	19 वीं श.	
16.5×8 14;24	24वां	„	19 वीं श.	
16.5×8 14;24	57वां	„	19 वीं श.	
13×21 24;18	7वां	„	18 वीं श.	
13×21 24;18	8–9	„	18 वीं श.	
13×21 24;18	15वां	„	18 वीं श.	
13×21 24;18	19–20	„	18 वीं श.	अंत में स्फुट-पद हैं।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1326	5404 (35)	पार्श्वनाथ-स्तवन	विनयसागरसूरि
1327	5404 (37)	"	खेमकलश गणि
1328	5404 (43)	"	शिवचन्द मुनि
1329	5404 (50)	"	कल्याणसागरसूरि
1330	5404(A) (91)	"	विजयदेवसूरि
1331	5404 (139)	"	
1332	4242 (22)	पार्श्वनाथ-स्तुति	
1333	3940 (11)	"	
1334	4282 (3)	पार्श्वनाथ स्वामी का छन्द	
1335	4282 (९)	पार्श्वनाथ स्वामी की स्तुति	
1336	5024	पार्श्वनाथाष्टक	
1337	4290 (2)	पार्श्वेश्वर-स्तुति	रूपचन्द्र
1338	5210	पावटो	रूपचन्द्र

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
13×21 24; 18	22वां	पूर्ण	18 वीं श.	
13×21 24; 18	24वां	,,	18 वीं श.	
13×21 24; 18	29वां	,,	18 वीं श.	
13×21 24; 18	34वां	,,	18 वीं श.	
13×21 24; 18	85वां	,,	18 वीं श.	
13×21 24; 18	196–197	,,	18 वीं श.	
31×13.5 10; 26	25–26	,,	20 वीं श	
25.5×12.5 12; 29	12वां	,,	1868	लि क. धनरूप; लि.स्था. पाली
21×10.5 15; 33	1(प्रथम)	,,	19 वीं श.	
21×10.5 15; 33	3(तृतीय)	,,	19 वीं श.	
25.5×11.5 14; 30	1	,,	20 वीं श.	लि.स्था. धारनगर (मध्यप्रदेश)
25.5×11.5 10; 29	3–4	,,	19 वीं श.	
10×27 27; 17	1	,,	20 वीं श.	र.का. 1760; र.स्था. द्वारिका

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1339	4124 (1)	पाविणी	
1340	4400 (17)	पुण्डरगिरि-स्तवन	साधुकीर्ति शिष्य अमरमाणिक्य
1341	5375 (50)	पुण्य-छत्तीसी	समयसुन्दर
1342	4070	पुण्यप्रकाश-स्तवन (वीरजिन-स्तवन)	विनयविजय शिष्य कीर्तिविजय
1343	4141	पुण्यप्रकाश-स्तवन	,,
1344	5408 (16)	पूजा-पद	
1345	4273 (10)	पूरसादाणीं-पार्श्व-स्तवन	दीपसौभाग्य
1346	5375(B) (53)	पोसह विधि बृहत्-स्तवन	समयसुन्दर
1347	4939	पोसीणा-पार्श्वनाथ-स्तवन	कपूर
1348	5378 (5)	प्रत्याख्यान-स्वाध्याय	
1349	5312 (3)	प्रथम पार्श्वनाथ-स्तुति	बनारसी
1350	5346 (2)	प्रभंजन-सज्भाय	देवचन्द्र
1351	5358 (2)	प्रास्ताविक-दोहे	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25×13.5 10; 32	1–9	पूर्ण	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
25×11.5 12; 34	12–13	,,	19 वीं श.	
17.5×11 16; 18	53–57	,,	19 वीं श.	
25.5×12 12; 38	6	अपूर्ण	1884	र.का. 1729; लि.स्था. नाडूल; प्रथम पत्र अप्राप्त
24×13 12; 29	6	पूर्ण	20 वीं श.	
16.5×10.5 10; 20	26–27	अपूर्ण	20 वीं श.	पत्रांक 21–25 निरंकित
26×11 13; 22	9वां	पूर्ण	19 वीं श.	
17.5×11 16; 18	66–71	,,	19 वीं श.	
10.5×25.5 23; 18	1	,,	20 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; र.का. 1816
16.5×8 14; 26	9वां	,,	19 वीं श.	
22×15 11; 24	88–89	अपूर्ण	18 वीं श.	पत्रांक 95–96 पर स्फुट दोहे हैं।
13.5×23 23; 16	4–6	पूर्ण	19 वीं श.	
17×11 11; 16	100–105	,,	18 वीं श.	

क्रमांक एव विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जैं.सा. 1352	5366 (4)	फलवर्द्धि-पार्श्वनाथ-स्तवन	
1353	4711 (1)	,,	सत्यसागर शिष्य रत्नसागर
1354	5379 (3)	फलौधीमण्डन-पार्श्वनाथ-स्तवन	मुनिवीर
1355	5377 (6)	फाग-गीत	राजहर्ष
1356	4611 (4)	बत्तीस दूषण का स्तवन	जिनलब्धिसूरि
1357	5356(B) (5)	बंभणवाड़ि महावीर-स्तवन	कमलकलशसूरि
1358	5378(A) (28)	बंभणवाड़ि मंडण महावीर-स्तवन	,,
1359	5420 (14)	बलभद्र नो गीत विनती	अमीचन्दसूरि
1360	5375 (26)	बारहभावना-वृद्धि-स्तवन	जयसोम शिष्य प्रमोदमाणिक्य गणि
1361	5404 (110)	बारहभावना-स्वाध्याय	मुनि केसराज
1362	5403(A) (6)	बारह व्रत की सज्झाय	तिलकविजय शिष्य लक्ष्मीविजय
1363	4408	बालचन्द-बत्तीसी	
1364	4535 (3)	बाहुजित-स्तवन	जिनहर्ष

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
16.5×11 11;22	10वां	पूर्ण	19 वीं श.	लि.क. विजयचन्द
24×10.5 12;34	1(प्रथम)	"	19 वीं श.	र.का. 1798
14.5×11 16;20	44–45	"	19 वीं श.	
14.5×10.5 10;16	4–7	"	18 वीं श.	लि.क. पं. धर्मरंग
25.5×11.5 11;28	10–13	"	19 वीं श.	
12×12.5 16;15	26–28	"	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; कीटविद्ध; पत्र चिपके हुए हैं।
16.5×8 14;26	58–59	"	19 वीं श.	
13.5×11.5 12;20	22–26	अपूर्ण	1828	लि.क. पं. दौलतराम; बीच का एक पत्र अप्राप्त।
17.5×11 16;18	1–7	पूर्ण	19 वीं श.	
13×21 24;18	145–146	"	19 वीं श.	
26×14.5 9;18	119–128	"	19 वीं श.	
25.5×11.5 17;51	1	अपूर्ण	19 वीं श.	
25.5×11.5 15;46	1(प्रथम)	पूर्ण	1831	लि.क. पं. रामविजय

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1365	5271(E) (45)	बाहुबलि-सज्झाय	लब्धिविजय
1366	5416 (40)	,,	समयसुन्दर
1367	5404 (122)	,,	विमलकीर्त्ति
1368	5378 (40)	,,	समयसुन्दर
1369	4100 (10)	,,	,,
1370	5364 (25)	बुढ़ापा री (जरा नी) सज्झाय	जीतसागर गणि
1371	3745 (2)	भगवती-सूत्र-सज्झाय	विनयविजय शिष्य कीर्त्तिविजय
1372	5374 (13)	भक्तामर-बालावबोध	
1373	5351 (27)	भक्तामर-भाषा	हेमराज
1374	4858	भक्तामर-भाषा	
1375	4859	,,	
1376	4483	भक्तामर-स्तोत्र-भाषा	
1377	4749	,,	हेमराज

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
30×16.5 13;40	237–238	पूर्ण	18 वीं श.	अंत में 'नेमि गीत' है।
15×12 11;16	75–76	,,	1869	लि.क. विजयचन्द
13×21 24;18	171वां	,,	18 वीं श.	
16.5×8 14;26	84वां	,,	19 वीं श.	प्रारम्भ में एक स्वाध्याय और है।
22×10.5 11;30	9वां	,,	19 वीं श.	
18×9 9;20	57–59	,,	1876	
25×11 14;48	40वां	,,	18 वीं श.	र.का. 1738
15.3×13 14;24	114–141	,,	1810	लि.स्था. वडियालि
13×10 10;14	114-124	,,	19 वीं श.	
25.5×10.5 15;60	31	अपूर्ण	17 वीं श.	कीटविद्ध
25×10.5 15;48	2–33	,,	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; कीटविद्ध व पत्रांक 1-31 व अंतिमांश अप्राप्त।
25×14 16;60	4	पूर्ण	20 वीं श.	दग्ध प्रति
24×10.5 14;34	3	,,	19 वीं श.	लि.क. यति सावन्त

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1378	4837 (5)	भरत बाहुबलि-सज्झाय	
1379	5353 (10)	भरत बाहुबलि-सम्वाद	विश्वभूषण
1380	5353 (15)	,,	
1381	4818 (5)	भरथक-वर्तिनी-सज्झाय	
1382	4837 (10)	भवदेवनी-सज्झाय	
1383	4273 (3)	भावी चतुर्विंशति जिन-स्तवन	सौभाग्यउदय
1384	5177	भास	राजसिंह
1385	5118	भास-संग्रह	देव मुनि
1386	5127	,,	रवि मुनि
1387	5093	भास-संग्रह-(त्रय) (नवकार, नेमिनाथ व फलवर्द्धि)	शान्तिसूरि
1388	5116	भास-संग्रह— साधु-सज्झाय, रूपशाहजी नी भास, जीवनी-भास, श्रावकवरसंघजी नी रास, जसवन्तसिंहजी नी भास, रूपसिंहजी नी भास*	*दामोदर कर्मसिंहजी नी भास, केशवजी नी भास, गुरु गुणमाला भास

नाप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24×10.5 17; 38	4-5	पूर्ण	19 वीं श.	
15.5×12 13; 32	153-158	,,	19 वीं श.	पत्रांक 110-152 तक निरंकित
15.5×12 13; 30	183-185	,,	19 वीं श.	पत्रांक 181-182 निरंकित
23×10.5 14; 32	2-3	,,	19 वीं श.	
24×10.5 17; 38	7-8	,,	19 वीं श.	
26×16 13; 22	2(द्वितीय)	,,	19 वीं श.	
26×11.5 11; 28	1	अपूर्ण	19 वीं श.	चित्रित व जीर्ण-शीर्ण
25.5×11 16; 50	1	पूर्ण	19 वीं श.	र,का. 1742
25.5×11 11; 40	1	,,	19 वीं श.	
26×11.5 16; 50	1	,,	17 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; कीटविद्ध
26×11.5 15; 48	3	,,	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1389	5119	भास-संग्रह	रूपसिंह, मुनि वाघ
1390	5356 (9)	भिन्नमाल पार्श्वनाथ-स्तवन	पुण्यकमल शिष्य सुमतिकमल
1391	5369 (14)	भूपाल-पचीसी-भाषा	भूपाल नरेन्द्र
1392	5344(B) (10)	मगल	
1393	5348 (9)	मंगल, पानफुलों का झगड़ा तथा जुगथी	
1394	5126 (2)	मंगल री भास	
1395	5404 (60)	मगसी-पार्श्वनाथ-स्तवन	गुणसागरसूरि
1396	5404 (47)	,,	,,
1397	5209 (7)	मणिभद्रवीर-छन्द	
1398	5378(B) (25)	मनक मुनि-स्वाध्याय	लब्धिविजय
1399	5349(B) (23)	मन्दर (सीमन्धर) जिन-स्तवन	
1400	3629 (2)	मनोरथ-स्तवन	
1401	4002 (3)	मल्लिनाथ-वृद्ध-स्तवन	कुशललाभ

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि: संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
26×11 11;36	2	पूर्ण	19 वीं श.	
12×12.5 16;15	39–44	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; कीटविद्ध
13.5×22 19;18	39–41	,,	18 वीं श.	
12×14.5 9;12	52–55	,,	19 वीं श.	अंत में स्फुट हिसाब है ।
14.5×9.5 12;11	118–125	,,	18 वीं श.	
25.5×11.5 11;38	1	,,	19 वीं श.	
13×21 24;18	40–41	,,	18 वीं श.	र.का. 1652
13×21 24;18	32वां	,,	18 वीं श.	
16.5×15 16;24	20-21	,,	18 वीं श.	अंत में अमरसीकृत कवित्त हैं; अतिरिक्त स्फुट 6 पत्रों में नवपद, पार्श्वनाथ-स्तवन, बोपारी री वार्ता आदि हैं ।
16.5×8 14;26	55वां	,,	19 वीं श.	
16×10 11;20	55–57	,,	18 वीं श.	
24×12.5 10;32	1-2	,,	1904	लि.क. खुस्यालचन्द्र लि. स्था. अहमदाबाद
26×11.5 16;40	3–4	,,	18 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जं.सा. 1402	5378 (10)	मल्लिनाथ-स्तवन	सुखराज
1403	5404 (2)	महावीर-जन्माभिषेक	
1404	5416 (5)	महावीर-जिन-स्तवन	
1405	5122	,,	तेजसिंह
1406	5343 (31)	,,	हीरधर्म
1407	5416 (15)	,,	समयसुन्दर
1408	3940(B) (7)	महावीर जिन-स्तुति	
1409	4100 (6)	महावीरजी रो पारणो	
1410	5343 (6)	महावीरजो को पारणो	
1411	5375 (21)	महावीरजी री सज्भाय	मुनिमाल
1412	5364 (18)	महावीर-पद	जस वाचक
1413	5375(A) (9)	महावीर-स्तवन	समयसुन्दर
1414	4400 (30)	,,	जिनचन्द्र

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
16.5×8 14; 26	15वां	पूर्ण	19 वीं श.	अंत में मुनि सुव्रतगीत भी हैं।
13×21 24; 18	5–7	„	18 वीं श.	अंत में 'पार्श्वनाथ पूजाष्टक' है।
15×12 11; 16	11–12	„	1869	र.का. 1777
24.5×10.5 18; 48	3(तृतीय)	„	19 वीं श.	र.का. 1733
17.5×13.5 11; 20	31वां	„	20 वीं श.	
15×12 11; 16	23–26	„	1869	र.स्था. जैसलमेर; लि.क, विजयचंद
25.5×12.5 12; 29	10वां	„	1868	
22×10.5 11; 30	4–6	„	19 वीं श.	
17.5×13.5 11; 20	16–19	„	20 वीं श.	अंत में श्रीपद हैं।
17.5×11 16; 18	74–76	„	19 वीं श	
18×9 9; 20	49वां	„	1876	
15.5×13 14; 24	15–16	अपूर्ण	19 वीं श.	लि.स्था. जैसलमेर
25×11.5 12; 34	20वां	पूर्ण	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1415	4400 (20)	महावीर-स्तवन	
1416	4400 (19)	"	समयसुन्दर
1417	5362 (9)	"	गुणहर्ष शिष्य प्रमोदमाणिक्य
1418	5349(B) (28)	"	समयसुन्दर
1419	3917	"	
1420	5378 (18)	"	ऋषभ शिष्य ऋद्धिसागर
1421	5303 (2)	"	देवीदास
1422	4150 (1)	महावीर-स्तोत्र	ज्ञानतिलक
1423	3993	मानकुतूहल	हीर
1424	5349 (9)	मानपरिहार-सज्झाय	विनयविवेक
1425	5336(B) (13)	मुक्ति-पीहर	
1426	4400 (34)	मूण्डवा-महावीर-स्तवन	
1427	5059	मुनि-मालिका	चरित्रसिंह

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
25×11.5 12; 34	15वां	पूर्ण	19 वीं श.	
25×11.5 12; 34	14–15	,,	19 वीं श.	
12×10.5 10; 15	134–136	,,	18 वीं श.	
16×9 11; 20	89–91	,,	1778	
24.5×10.5 20; 40	1	,,	1939	लि.क. ऋषि मगनमल; लि.स्था. पाली
16.5×8 14; 26	43वां	,,	19 वीं श.	
17.5×15 17; 20	19–22	,,	1744	लि.स्था. औरंगाबाद
25×11 13; 34	1(प्रथम)	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
24.5×10 14; 48	7	,,	19 वीं श.	
16×10 11; 20	21–22	,,	18 वीं श.	
16.5×21.5 18; 20	128–129	,,	19 वीं श.	
25×11.5 12; 34	25वां	,,	19 वीं श.	र.का. 1821
26×13 10; 22	6	,,	1908	जीर्ण-शीर्ण; लि.स्था. अजीमगंज

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1428	5303(R) (8)	मुनि सुव्रत-स्तवन	
1229	4535 (2)	मुनि सुव्रतस्वामी-स्तवन	जिनहर्ष
1430	5404 (62)	मुनीश्वर-स्तुति	
1431	4100 (14)	मृगापुत्र-सज्भाय	मुनि खेम
1432	5310 (6)	"	विमलसिंह
1433	5359 (7)	"	क्षेम
1434	5364 (6)	"	
1435	5404 (113)	"	सुमतिसागर
1436	5378(B) (44)	मेघकुमार-सज्भाय	प्रीतिविजय
1437	5312 (4)	"	जादव
1438	5349(C)	"	रायचन्द्र
1439	5364 (34)	"	
1440	5048 (1)	मेघ मुनि-सज्भाय	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17.5×15 13; 18	67–68	पूर्ण	18 वीं श.	
25.5×11.5 15; 46	4(चतुर्थ)	,,	1831	लि.क. रामविजय
13×21 24; 18	42–43	,,	18 वीं श.	
22×10.5 11; 30	11–12	,,	19 वीं श.	
21.5×13.5 16; 30	111–112	,,	17 वीं श.	
18×12 12; 21	27–29	,,	20 वीं श.	
18×9 9; 20	23–26	,,	1875	अंत में 'नेमि राजीमती स्तवन' है।
13×21 24; 18	149–150	,,	19 वीं श.	
16.5×18 14; 26	90वां	,,	19 वीं श.	अंत में 'चौदह स्वप्न विचार' है।
22×15 11; 24	100–101	,,	18 वीं श.	पत्रांक 97–99 अप्राप्त।
16×10 11; 20	57–60	,,	19 वीं श.	
18×9 9; 20	79–80	,,	1876	
24.5×10.5 16; 46	1(प्रथम)	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1441	5366 (26)	मेघरथराय-सज्झाय	
1442	5378(E) (12)	मेतारज मुनि-स्वाध्याय	रामसाधु
1443	5378 (43)	,,	,,
1444	5378 (26)	,,	,,
1445	5416 (18)	,,	जिनहर्ष
1446	5358 (15)	मोरला पार्श्वनाथजी की विनती	
1447	5271 (30)	मोह-छत्तीसी	आनन्द मुनि शिष्य पुण्यकीर्ति
1448	5300 (1)	मोहनदास-बहोत्तरी	
1449			
1450	4022	मौनेकादशी-गुणनो-कल्याणक-महिमा-स्तवन	विशुद्धविमल
1451	5375 (10)	मौनी-इग्यारस-स्तवन	समयसुन्दर
1452	4922 (1)	मौन-एकादशी-स्तवन	प्रेमविजय
1453	4400 (3)	,,	समयसुन्दर

नाप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
16.5×11 19; 30	32वां	पूर्ण	1851	
16.5×8 14; 26	23वां	,,	19 वीं श.	
16.5×8 14; 26	88वां	,,	19 वीं श.	
16.5×8 14; 26	56–57	,,	19 वीं श.	
15×12 11; 16	53–54	,,	1869	लि.क. विजयचन्द
17×11 11; 16	93–94	,,	18 वीं श.	र.का. 1785
30×16.5 13; 40	192–193	,,	1724	र.का. 1684; र.स्था. नागौर; कीटभक्षित
13×17.5 16; 18	3-6	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्रांक 10, 15 व 24 पर भी यही कृति है। पत्रांक 1-2 अप्राप्त। पूर्व के 3-15 के पत्र किसी अन्य ग्रन्थ के हैं।
24.5×11 7; 28	6	पूर्ण	1844	लि.क. दानविजय; लि.स्था. पाली
17.5×11 16; 18	18–19	,,	19 वीं श.	लि.स्था. जैसलमेर
22×11.5 11; 26	1–5	,,	19 वीं श.	र.का. 1769
25×11.5 12; 34	4–5	,,	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1453	4055 (16)	यमक-बन्धाष्टक	
1454	4535 (2)	युगन्धरजिन-स्तवन	जिनहर्ष
1455	4944	रत्नमुनि-सज्झाय	
1456	5357 (3)	राग-पद-संग्रह	
1457	5353 (2)	,,	कीर्त्तिविजय, विश्वभूषण, नवल, जगतराम, हर्षकीर्त्ति, खुशालचन्द,बनारसी, शिवचन्द्र मुनि, भानुकीर्त्ति, गंग, रामदास,लालचन्द,हर्षचन्द, खेम, रूपचन्द, साधुकीर्त्ति, अखयराम, मान, कबीर, गुणचन्द्र, सुन्दर,चन्द्रकीर्त्ति, मायाराम, भूषण, समयसुन्दर, शुभचन्द्र मुनि, अनन्तकीर्त्ति, मलूकदास, हीरसिंह
1458	5420 (13)	,,	ज्ञानवंत, महेन्द्रकीर्त्ति
1459	5411 (3)	राग-पद (मल्लार में)	
1460	5364 (31)	राग-फाग	
1461	5404 (136)	राजुल-गीत	गजानन्द

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24.5×11 5 14; 36	5वां	पूर्ण	19 वीं श.	
25.5×11.5 15; 46	1(प्रथम)	;;	1831	लि.क. रामविजय
12×22 25; 20	3(तृतीय)	अपूर्ण	1837	इस सज्झाय में 30 से 52 तक ही छन्द हैं।
14×10.5 10; 16	61–70	,,	19 वीं श.	त्रुटित पत्र
15.5×12 13; 30	1–74	पूर्ण	19 वीं श.	पत्रांकन पृथक् से हैं।
13.5×11.5 12; 20	20-21	,,	19 वीं श.	
13×9 8; 12	9–10	,,	19 वीं श.	
18×9 9; 20	75–76	,,	1876	
13×21 24; 18	192–194	,,	18 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1462	5404 (135)	राजुल-गीत	भुवनकीर्त्ति
1463	5353 (13)	राजुल-पचीसी	लालचन्द
1464	5351 (25)	,,	विनोदीलाल
1465	5375 (19)	,,	आनन्दचन्द
1466	4049	राजुल-रहनेमि-सज्झाय	रूपविजय
1467	5123 (2)	राजेमती नी सज्झाय	हीरानन्द
1468	3516 (3)	राणपुरजी का स्तवन	
1469	4785	राणकपुर-स्तवन	शिवसुन्दर
1470	4400 (10)	राणकपुर-पार्श्वजिन-स्तवन	समयसुन्दर
1471	5180	रात्रि-भोजन-सज्झाय	
1472	5404 (138)	,,	
1473	5353 (3)	रेखता-संग्रह	त्रिलोककीर्त्ति, बखतराम, नवल
1474	4922 (2)	रोहिणी-स्तवन	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
13×21 24; 18	191वां	पूर्ण	18 वीं श.	
15.5×12 12; 28	173–177	,,	19 वीं श.	
13×10 10; 14	102–111	,,	19 वीं श.	
17.5×11 16; 18	65–70	,,	19 वीं श.	
23×10 10; 26	1	,,	19 वीं श.	
26.5×11.5 16; 44	1 (प्रथम)	,,	19 वीं श.	
11×10.5 9; 12	21–24	,,	1859	पत्रांक 25-27 निरंकित व 28वां अप्राप्त ।
25.5×12 13; 30	1	,,	20 वीं श.	त्रुटित पत्र
25×11.5 12; 34	9वां	,,	19 वीं श.	
24.5×10.5 13; 44	1	,,	19 वीं श.	त्रुटित पत्र
13×21 24; 18	195–196	,,	18 वीं श.	
15.5×12 13; 30	75-78	,,	19 वीं श.	
22×11.5 11; 26	5–7	अपूर्ण	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1475	4893 (2)	लघु-स्तवन	जसविजय
1476	4731 (2)	लावणी-संग्रह	
1477	4948 (3)	,,	जिनदास
1478	5379 (1)	लोचनादशक	
1479	5379 (2)	,,	धन मुनि
1480	5065	लोद्रवपुर-पार्श्वनाथ-स्तवन	जिनचन्द्र शिष्य जिनलाभ
1481	5366 (16)	वयरकुमार-सज्झाय	नित्यविजय
1482	5378(A) (3)	वयरस्वामी-सज्झाय	ऋद्धिविजय
1483	5404 (21)	वरकाणा-पार्श्वनाथ-स्तवन	सेवकदेव
1484	5419(A) (3)	,,	जिनहर्ष
1485	4977	,,	जिनलाभसूरि
1486	4400 (6)	,,	
1487	5380 (7)	वर्तमान-चौबीसी-गीत	जिनराज

नाप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24.5×11.5 14; 34	1(प्रथम)	पूर्ण	20 वीं श.	
22×10.5 11; 19	2(द्वितीय)	,,	19 वीं श.	
24.5×11 18; 46	2–4	,,	20 वीं श.	
14.5×11 16; 20	1(प्रथम)	,,	19 वीं श.	
14.5×11 16; 20	1(प्रथम)	,,	19 वीं श.	
24.5×12 13; 32	1	,,	20 वीं श.	र.का. 1837; इसमें जिनचन्द्र कृत दो स्तवन हैं।
16.5×11 19; 30	24वां	,,	1851	
16.5×8 14; 26	6ठा	,,	19 वीं श.	5वें त्रुटित पत्र पर विमलकीर्त्ति-कृत 'बाहुबलि सज्झाय' है।
13×21 24; 18	12–13	,,	18 वीं श.	
13.5×9 9; 12	5–6	,,	19 वीं श.	
26.5×11.5 8; 28	1	,,	19 वीं श.	र.का. 1821
25×11.5 12; 34	7–8	,,	19 वीं श.	
15×16 14; 14	174–189	,,	1724	लि.क. मानजी गणि; लि.स्था. सूरत

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1488	5303(J) (8)	वासुपूज्यजिन-स्तवन	
1489	4630	,,	प्रेमविजय
1490	5362 (7)	,,	समयराज
1491	4461	विचार-मंजरी	जगऋषि (जुगरिषि)
1492	4040 (2)	विचार-स्तवन	
1493	4888	विजयदेवसूरीश्वर-सज्झाय	
1494	5378(B) (20)	विजयप्रभुसूरीश्वर-स्वाध्याय	कल्याण
1495	4885	,,	जयचन्द
1496	5349 (14)	विजय सेठ-विजया सेठाणी-स्वाध्याय	हर्षकीर्त्तिसूरि
1497	5416 (18)	विजय सेठ-विजया सेठाणी-सज्झाय	हर्षकीर्त्ति
1498	5344 (4)	विनती	
1499	5364(D) (11)	,,	रूपचन्द
1500	5369 (17)	,,	भूधरदास

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
17.5×15 17;20	61वां	पूर्ण	18 वीं श.	
24.5×11 12;40	2–7	अपूर्ण	1845	लि.क. रंगविजय; प्रथम पत्र अप्राप्त; जीर्ण-शीर्ण
12×10.5 10;15	129–131	पूर्ण	18 वीं श.	
26×11.5 13;40	7	,,	17 वीं श.	र.का. 1603; जीर्ण-शीर्ण
25×10 15;44	1–2	अपूर्ण	19 वीं श.	
22.5×10 11;32	1	पूर्ण	20 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; त्रुटित पत्र
16.5×8 14;26	46–47	,,	19 वीं श.	
26×11 11;36	1	,,	20 वीं श.	र.का. 1730
16×10 11;20	29–31	,,	18 वीं श.	अंत में 'अजीत गीत' भी है।
15×12 11;16	23–27	,,	1869	लि.क. विजयचन्द
12×14.5 9;12	16–19	,,	19 वीं श.	
18×9 9;20	35वां	,,	1876	
13.5×22 19;18	44वां	,,	18 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1501	4711 (2)	विनती	भूधरदास
1502	5420 (17)	,,	
1503	5303(Q) (8)	विमलजिन-स्तवन	
1504	5303(K) (8)	,,	आनन्दघन
1505	4273 (5)	विमलनाथ-स्तवन	दीपसौभाग्य
1506	5271 (34)	विमलाचल-गीत तथा स्तवन	राजसमुद्र
1507	4732	विमलाचल-तीर्थमाला	अमृत
1508	4400 (18)	विमलाचल-स्तवन	राजसमुद्र
1509	5366 (9)	विवहा नी सज्झाय	हंसभुवनसूरि
1510	5114	विविध-गीत-संग्रह	शान्तिनाथ, भावहर्ष
1511	3696 (1)	विषापहार-स्तोत्र	अचलकीर्त्ति
1512	5351 (28)	,, -भाषा	,,
1513	5369 (15)	विषापहार-भाषा	,,

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24×10.5 12;34	1–2	पूर्ण	19 वीं श.	र.का. 1798
13.5×11.5 12;20	31वां	,,	19 वीं श.	
17.5×15 17;20	66–67	,,	18 वीं श.	
17.5×15 17;20	61–62	,,	18 वीं श.	
26×11 13;22	3(तृतीय)	,,	19 वीं श.	
30×16.5 13;40	207–208	,,	18 वीं श.	कीटभक्षित
26.5×11 12;46	7	,,	19 वीं श.	र.का. 1740; जीर्ण-शीर्ण; अंत में र.का. 1883 का 'नारंग पार्श्वनाथ स्तवन' है।
25×11.5 12;34	13–14	,,	19 वीं श.	
16.5×11 19;30	17वां	,,	1850	लि.स्था. विक्रमपुर
27×12 12;36	5	,,	19 वीं श.	
25×11 27;58	1(प्रथम)	,,	18 वीं श.	
13×10 10;14	124–130	,,	19 वीं श.	
13.5×22 19;18	41–43	,,	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1514	5020 (2)	विहरमानजिन-स्तवन	रतनचन्द्र
1515	4648	विहरमान-वीसी	देवचन्द्र
1516	5375 (5)	विहरमान-स्तवन	जिनराज
1517	5343 (32)	,,	
1518	5378 (42)	वीरजिन-स्तवन	ऋषभसागर
1519	4008	वीरजिनवर-स्तव-आलोयणा-गर्भित	धर्मसिंह
1520	5379 (4)	वीरजिन-स्तवन	समयसुन्दर
1521	5343(B) (26)	,,	क्षमाकल्याण गणि
1522	5271 (47)	,,	समयसुन्दर
1523	5346 (3)	वीरनिर्माण-स्तवन	देवचन्द्र
1524	4273 (4)	वीर-स्तवन	दीपसौभाग्य
1525	4242 (12)	वीर-स्तुति	
1526	4242 (35)	,,	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
25×11 17;36	1(प्रथम)	पूर्ण	20 वीं श.	
25.5×12 11;40	10	„	1858	लि.स्था. अजीमगंज
17.5×11 16;18	20वां	„	19 वीं श.	
17.5×13.5 11;20	32–33	„	20 वीं श.	
16.5×8 14;26	86वां	„	19 वीं श.	
24.5×11.5 15;40	2	„	19 वीं श.	
14.5×11 16;20	45–46	„	19 वीं श.	
17.5×13.5 11;20	19–20	„	20 वीं श.	
30×16.5 13;40	239–240	„	18 वीं श.	कीटविद्ध
13.5×23 23;16	7–15	„	19 वीं श.	
26×11 13;22	2–3	„	19 वीं श.	
31×13.5 10;26	20–21	„	20 वीं श.	
31×13.5 10;26	30-31	„	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जैसा. 1527	4234	वीस-पदवी	
1528	5399 (13)	वीस-स्थानक-स्तवन	
1529	5380 (4)	वीस-विहरमान-गीत	जिनराज
1530	5272 (20)	„ -जयमाल	
1531	5375 (6)	„ -स्तवन	जिनराज
1532	5399(A) (15)	वीस-विहरमान-जिन-स्तवन	जयमाणिक्य
1533	4084	„	क्षमाविजय
1534	5404 (24)	„	विजयसिंह सेवक
1535	5404 (58)	वीस-विहरमान-जिन-स्तुति	मुनिमोहन
1536	5375 (54)	वीस-स्थानक-स्तवन	नयरंग
1537	5341 (2)	वेद-निर्णय-पंचाशिका	बनारसी
1538	5351 (39)	वैराग्य-पचीसी	
1539	5272 (18)	„	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
26.5×11.5 16; 32	1	पूर्ण	19 वीं श.	
14×13 20; 24	61वां	,,	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
15×16 14; 14	132–145	,,	1724	
20.5×27.5 31; 28	28–29	,,	20 वीं श.	
17.5×11 16; 18	21–31	,,	19 वीं श.	
14×13 20; 24	62–63	,,	18 वीं श.	
26×11.5 10; 30	12	,,	19 वीं श.	लि.क. धनविजय; लि.स्था. पाली
13×21 24; 18	13–40	,,	18 वीं श.	
13×21 24; 18	39वां	,,	18 वीं श.	
17.5×11 16; 18	71–72	,,	19 वीं श.	
12×8 9; 12	157–172	,,	19 वीं श.	पत्रांक 171-175 तक 'मिथ्यात्व वाणी' है।
13×10 10; 14	185-189	,,	19 वीं श.	
20.5×27.5 31; 28	26वां	,,	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1540	5271(A) (44)	वैराग्य-सज्झाय	विमलहर्ष वाचक शिष्य प्रेमविजय
1541	5271 (38)	वैराग्य-सज्झाय तथा गीत	विनय
1542	4020 (1)	वैराग्य-सज्झाय	
1543	4837 (9)	,,	
1544	5411 (7)	,,	काजी मोहम्मद
1545	5404 (109)	,,	मल्लिदास
1546	5375 (25)	,,	रूपचन्द
1547	4089	व्रतनी-सज्झाय	कान्तिविजय
1548	5364 (24)	शंखेश्वर-पार्श्वनाथ-स्तवन	जिनहर्ष
1549	5359 (1)	,,	
1550	3991 (2)	,,	
1551	5028	,,	प्रेमविजय
1552	5209 (4)	,,	जयसोम

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
30×16.5 13;40	231–232	पूर्ण	18 वीं श.	
30×16.5 13;40	217–220	,,	18 वीं श.	कीटभक्षित; अंत में 'अध्यात्म गीत' है।
25×11 17;36	1(प्रथम)	,,	20 वीं श.	
24×10.5 17;38	7वां	,,	19 वीं श.	
13×9 8;12	137–138	,,	19 वीं श.	
13×21 24;18	145वां	,,	19 वीं श.	
17.5×11 16;18	87–91	,,	19 वीं श.	
26.5×12 15;28	3	,,	19 वीं श.	कीटविद्ध; अंत में 'सुन्दरी महासती सज्झाय' है।
18×9 9;20	56–57	,,	1876	
18×12 12;21	3–4	अपूर्ण	20 वीं श.	पत्र संख्या 3 पर आनन्दघन, रतनसागर, भूषण के पद हैं; पत्रांक 1-2 अप्राप्त।
22.5×11 12;28	16वां	पूर्ण	19 वीं श.	
25.5×11 11;38	1	,,	17 वीं श.	कीटभक्षित; जीर्ण-शीर्ण
16.5×15 16;24	15–16	,,	18 वीं श.	अंत में राग गुजरी में गीत है।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1553	4400 (9)	शंखेश्वर-पार्श्वनाथ-स्तवन	जिनहर्ष
1554	4400 (12)	शंखेश्वर-स्तवन	
1555	5349 (15)	शत्रुञ्जय-आदिनाथ-स्तवन	पासचन्द्रसूरि
1556	5362 (8)	शत्रुञ्जय-इकतालीस नाम-स्तवन	रत्नमन्दिर शिष्य धर्मगणि
1557	4273 (9)	शत्रुञ्जय-गीत	शिवनिधान ?
1558	5349 (28)	शत्रुञ्जय-ऋषभ-स्तुति	
1559	5271(A) (48)	शत्रुञ्जय-मण्डन-ऋषभ-विनती	विजयतिलक
1560	5362 (4)	शत्रुञ्जय-महातीर्थ-गीत	जिनचन्दसूरि
1561	5271(B) (48)	शत्रुञ्जय-मण्डन-युगाधिदेव-विनती	विजयतिलक
1562	5185 (1)	शत्रुञ्जय-मण्डन-श्रीजिनादि-स्तवन	साधुकीर्त्ति
1563	5419 (7)	शत्रुञ्जय-स्तवन	समयसुन्दर
1564	5404 (92)	,,	केसराज
1565	5378 (46)	,,	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25×11 5 12; 34	8–9	पूर्ण	19 वीं श.	
25×11.5 12; 34	9–10	"	19 वीं श.	
16×10 11; 20	32–33	"	18 वीं श.	
12×10.5 10; 15	131–133	"	18 वीं श.	
26×11 13; 22	7–9	"	19 वीं श.	
16×10 11; 20	89वां	"	18 वीं श.	
30×16.5 13; 40	240–241	"	18 वीं श.	कीटविद्ध
12×10.5 10; 15	124–125	"	18 वीं श.	
30×16.5 13; 40	242–249	"	18 वीं श.	
19.5×11 16; 32	1	"	19 वीं श.	प्रारंभ में नयविमल कृत 'शत्रुञ्जयालंकार श्रीआदिजिन स्तवन' के अंतिम तीन पद्य हैं ।
13.5×9 9; 12	17वां	"	19 वीं श.	
13×21 24; 18	86–87	"	18 वीं श.	
16.5×8 14; 26	93वां	"	19 वीं श.	लि.क. धीरसागर

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1566	5404 (26)	शत्रुञ्जय-स्तवन	सुमतिसागरसूरि
1567	5378 (34)	,,	जिनरंगसूरि
1568	5375 (34)	,,	दयातिलक
1569	4781	,,	सोभाग शिष्य पं. साधुविजय
1570	5364 (14)	,,	क्षमाविजय शिष्य (?)
1571	5364 (8)	,,	
1572	5364 (23)	,,	विमलसूरि
1573	5343 (21)	,,	प्रेमविजय
1574	5343 (19)	,,	
1575	5319 (6)	,,	
1576	4242 (19)	शत्रुञ्जय-स्तुति	
1577	5343(A) (23)	,,	
1578	5404 (41)	शान्ति-कुंथु-अरनाथ-स्तवन	शिवचन्द मुनि

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
13×21 24; 18	15वां	पूर्ण	18 वीं श.	
16.5×8 14; 26	75–76	"	19 वीं श.	
17.5×11 16; 18	17–18	"	20 वीं श.	
20×11 12; 42	1	"	19 वीं श.	
18×9 9; 20	36–39	"	1876	
18×9 9; 20	28–30	"	1875	प्रारंभ में जिनहर्ष कृत स्तवन है।
18×9 9; 20	55–56	"	1876	
17.5×13.5 11; 20	1–5	"	20 वीं श.	पत्रांकन पृथक् से है।
17.5×13.5 11; 20	46–47	"	20 वीं श.	
11.5×16 24; 22	22वां	"	19 वीं श.	
31×13.5 10; 26	24–25	"	20 वीं श.	
17.5×13.5 11; 20	9–10	"	20 वीं श.	
13×21 24; 18	28–29	"	18 वीं श.	र.का. 1701

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1579	5378 (41)	शान्तिनाथ-गीत	ऋषभसागर
1580	5378 (15)	,,	जसवन्तसागर
1581	5416 (9)	शान्तिनाथजिन-स्तवन	जसवाचक
1582	5364(C) (11)	,,	
1583	5364(A) (11)	,,	मोहनविजय
1584	5017 (1)	,,	लक्ष्मीविजय
1585	4025 (1)	,,	
1586	5303(N) (8)	,,	
1587	5122 (3)	,,	तेजसिंह
1588	3699	शान्तिनाथ-स्तवन	गुणसागर
1589	4235	,,	,,
1590	4535 (12)	,,	
1591	4820	,,	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
16.5×8 14;26	85वां	पूर्ण	19 वीं श.	
16.5×8 14;26	30वां	,,	19 वीं श.	
15×12 11;16	17–18	,,	1869	लि.क. विजयचन्द
18×9 9;20	34वां	,,	1876	
18×9 9;20	32–33	,,	1875	
23×10.5 14;40	1(प्रथम)	,,	1753	जीर्ण-शीर्ण व त्रुटित; लि.क. रंगविजय गणि
25×11.5 15;40	1(प्रथम)	,,	19 वीं श.	
17.5×15 13;18	64–65	,,	18 वीं श.	
24.5×10.5 18;48	2(द्वितीय)	,,	19 वीं श.	र.का. 1733; र.स्था. बुरहानपुर
25.5×10 17;42	1	,,	19 वीं श.	
22×11.5 18;30	1	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; अंत में 34 दोष हैं।
25.5×11.5 15;46	4(चतुर्थ)	,,	1832	लि.क. रामविजय
26×10.5 7;40	1(प्रथम)	अपूर्ण	1647	यह कृति अंतिम पत्र में है।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1592	4949	शान्तिनाथ-स्तवन	गुणसागर
1593	4917	,,	,,
1594	4930	,,	
1595	5362 (6)	,,	
1596	5364 (7)	,,	मोहनविजय
1597	5349 (13)	,,	
1598	5404 (49)	,,	गुणसागरसूरि
1599	5404 (51)	,,	केसराज
1600	5404 (38)	,,	गुणसागरसूरि
1601	5404(C) (91)	,,	केसराज
1602	4611 (3)	शिखरगिरि-मण्डन-पार्श्वनाथ-विनती	लालचन्द
1603	5341 (20)	शिव-पचीसो	बनारसी
1604	5416 (11)	शीतलजिन-स्तवन	विजयक्षमासूरि

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
24.5×12 20; 36	1	पूर्ण	20 वीं श.	
25×10 5 11; 36	2(द्वितीय)	अपूर्ण	19 वीं श.	प्रारम्भिक पत्र अप्राप्त।
16.5×12 13; 20	1	पूर्ण	19 वीं श.	
12×10.5 10; 15	127–128	,,	18 वीं श.	
18×9 9; 20	27–28	,,	1875	
16×10 11; 20	28–29	,,	18 वीं श.	
13×21 24; 18	34वां	,,	18 वीं श.	र.का. 1689
13×21 24; 18	35वां	,,	18 वीं श.	
13×21 24; 18	24–25	,,	18 वीं श.	
13×21 24; 18	85–86	,,	18 वीं श.	
25.5×11.5 11; 28	7–10	,,	19 वीं श.	र.का. 1833
12×8 9; 12	304–309	,,	19 वीं श.	
15×12 11; 16	19–20	,,	1869	लि.क. विजयचन्द

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1605	5404 (25)	शीतलनाथ-स्तवन	मुनि रायचन्द
1606	5375(B) (9)	,,	समयसुन्दर
1607	5378(A) (12)	,,	सुखराज
1608	5364 (1)	,,	बुद्धिकुशल
1609	5349( ) (19)	,,	रायचन्दसूरि
1610	5303(H) (8)	,,	
1611	5399 (19)	शील-गीत	राजहंस
1612	5399 (10)	,,	सेवक
1613	4638	शील-महिमा-सज्झाय	
1614	5375(C) (44)	शीलव्रत-सज्झाय	भेरुदास
1615	5364 (27)	शील-सज्झाय	उदयरतन
1616	5416 (20)	,,	
1617	5271 (43)	शुक्लपक्ष-कृष्णपक्ष-सज्झाय	चन्द्रकीर्त्तिसूरि

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
13×21 24;18	14वां	पूर्ण	18 वीं श.	
17.5×11 16;18	16–18	,,	19 वीं श.	र.स्था. अमसरपुर
16.5×8 14;26	17वां	,,	19 वीं श.	
18×9 9;20	1–2	,,	1874	
16×10 11;20	36वां	,,	18 वीं श.	
17.5×20 17;20	60वां	,,	18 वीं श.	
14×13 20;24	75वां	,,	18 वीं श.	
14×13 20;24	58वां	,,	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
24.5×12 13;32	4	,,	1916	लि.क. मगनीराम; लि.स्था. अहमदनगर
17.5×11 16;18	33वां	,,	19 वीं श.	
18×9 9;20	61–62	,,	1876	
15×12 11;16	39–42	,,	1869	लि.क. विजयचन्द
30×16.5 13;40	229–230	,,	18 वीं श.	कीटभक्षित

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1618	5271 (33)	श्रावक-बारहव्रत-चउपई	
1619	5378 (24)	श्रीचक्र-स्तवन	ऋषभ शिष्य ऋद्धिसागर
1620	5341 (13)	श्रीपाल-स्तुति	
1621	5408 (10)	,,	
1622	4897 (2)	श्री भाँडासाह रा देहरा रौ सुमतिनाथ-चौमुखगीत	
1623	4535 (5)	श्रेयांसजिन-स्तवन	सेवकराम
1624	5303(I) (8)	,,	
1625	4535 (4)	श्रीसंभवजिन-गीत	दयानन्द
1626	4100 (4)	श्रीस्तवन	जिनचंद
1627	5404 (74)	श्रीस्तोत्र	देवराज
1628	5403 (9)	षडावश्यक-स्तवन	विनयविजय शिष्य कीर्तिविजय उपाध्याय
1629	4818 (6)	सागरचक्रवर्ती-सज्झाय	
1630	5403(B) (6)	सचित-अचित-पृथ्वी-सज्झाय	लालविजय

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
30×16.5 13;40	207वां	पूर्ण	18 वीं श.	कीटभक्षित
16.5×8 14;26	53वां	"	19 वीं श.	
12×8 9;12	244–247	"	19 वीं श.	
16.5×10.5 10;20	20–21	"	20 वीं श.	
24×10.5 11;34	1–2	"	19 वीं श.	क्षतिग्रस्त
25.5×11.5 15;46	2(द्वितीय)	"	1831	लि.क. रामविजय
17.5×15 13;18	60–61	"	18 वीं श.	
25.5×11.5 15;46	1–2	"	1831	लि.क. रामविजय
22×10.5 11;30	3(तृतीय)	"	19 वीं श.	
13×21 24;18	62वां	"	18 वीं श.	
26×14.5 9;18	143–146	"	19 वीं श.	
23×10.5 14;32	3(तृतीय)	"	19 वीं श.	
26×14.5 9;18	128–129	"	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1631	4837 (4)	सज्झाय	लब्धिविजय
1632	5122 (7)	,,	तेजसिंह
1633	5366 (27)	,,	समयसुन्दर
1634	5310 (7)	,,	
1635	5378(A) (43)	,,	,,
1636	5404 (69)	,,	गोपालदास
1637	4293 (2)	,,	नूतनसमुद्र
1638	5416 (38)	,,	पद्मतिलक
1639	4837 (15)	सज्झाय व गीत	
1640प.	5319 (4)	सज्झाय-संग्रह	
1641प.	5319 (7)	,,	
1642	5404 (126)	,	पद्मतिलक, सहजसुन्दर, समयसुन्दर एवं गुणसागर

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24×10.5 17; 38	3–4	पूर्ण	19 वीं श.	
24.5×10.5 18; 48	3(तृतीय)	,,	19 वीं श.	
16.5×11 19; 30	32–33	,,	1851	अंत में समयसुन्दर कृत 'चेलणा' है।
21.5×13.5 16; 30	112–113	,,	17 वीं श.	
16.5×8 14; 26	87वां	,,	19 वीं श.	
13×21 24; 18	53–54	,,	18 वीं श.	
26×12 10; 22	5–6	,,	19 वीं श.	
15×12 11; 16	70–71	,,	1869	लि.क. बिजयचन्द
24×10.5 17; 38	10वां	,,	19 वीं श.	
11.5×16 24; 22	11–20	,,	19 वीं श.	
11.5×16 24; 22	23–46	,,	19 वीं श.	
13×21 24; 18	174-178	,, ,,	1765	पत्रांक 75-76 पर 'पद्मावती-आलोयणा-स्वाध्याय'; 76-77 'स्थूलभद्रमुनि-सज्झाय' (गुणसागर) 77-78 पर भुवनकीर्त्ति कृत 'आत्मशिक्षा-सज्झाय' है।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1643	5404(B) (140)	सज्झाय-संग्रह	मुनि लावण्य
1644	5310 (7)	सत्ताईस-पात्री-सज्झाय	
1645	5366 (25)	सनत्कुमार-सज्झाय	इन्द्रविमल
1646	4282 (2)	सन्ताष्टक	
1647	5336 (12)	सपना-बत्तीसी	भगवतीदास
1648	5404 (120)	सप्तविंशति-पद	गुणसागर
1649	4837 (2)	सप्तछन्द व स्वाध्याय	
1650	5375 (28)	सप्तव्यसन-सज्झाय	धर्मसिंह
1651	5366 (12)	समकित-सज्झाय	,,
1652	5405 (5)	,,	तिलकविजय
1653	5271(D) (45)	समय-गीत	कनकनिधान
1654	5272 (14)	समाधि-पंचाशिका	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
13×21 24; 18	200–203	पूर्ण	18 वीं श.	
24.5×10.5 18; 48	3(तृतीय)	„	19 वीं श.	र.का. 1734
16.5×11 19; 30	31–32	„	1851	
21×10.5 15; 33	1(प्रथम)	„	19 वीं श.	
16.5×21.5 18; 20	126–127	„	19 वीं श.	र.स्था. उग्रसेनपुर
13×21 24; 18	158-169	„	1762	सप्तविंशति पद के अन्तर्गत सज्झाय, उपदेश-छत्तीसी तथा आत्म प्रबोध-बत्तीसी हैं; लि.स्था. मांगलोर-ग्राम
24×10.5 17; 38	2(द्वितीय)	„	19 वीं श.	
17.5×11 16; 18	8–9	„	19 वीं श.	
16.5×11 19; 30	21वां	„	1850	
26×14.5 9; 18	118वां	„	19 वीं श.	
30×16.5 13; 40	237वां	„	18 वीं श.	
20.5×27.5 31; 28	23–24	„	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1655	5351 (38)	समाधि-पंचाशिका-भाषा	बिहारीदास
1656	4780	समेतशिखर-गीत	ऋद्धिहर्ष
1657	4560 (2)	समेतशिखर की निर्वाण-काण्ड-भाषा	
1658	5378 (16)	समेतशिखर-तीर्थमाला-स्तवन	जयसागर गणि
1659	4560 (1)	समेतशिखर-माहात्म्य	
1660	5063	समेतशिखर-स्तवन	देवचन्द
1661	4902 (2)	सुमतिनाथ-स्तवन	गंग
1662	5364(A) (22)	संभवजिन-स्तवन	
1663	5303(A) (8)	संभव-स्तवन	आनन्दघन
1664	5366 (22)	संयम-श्रेणी-स्वाध्याय	जसविजय
1665	.5404 (117)	सरस्वती-छन्द	कान्तिकुशल
1666	5404 (143)	सरस्वती-स्तुति	बनारसीदास
1667	4384	संवेगी री कसौटी	जयविजय

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
13×10 10; 14	175–185	पूर्ण	19 वीं श.	र.का. 1758; र.स्था. आगरा; लि.क. नंदराम
25.5×11 10; 30	1	,,	19 वीं श.	र.का. 1744
26×11.5 10; 34	3–5	अपूर्ण	1871	लि.क. गणपतिसागर
16.5×8 14; 26	39–41	पूर्ण	19 वीं श.	
26×11.5 10; 34	1–3	,,	1871	लि.क. गणपतिसागर
25×11.5 11; 28	1	,,	20 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
22.5×10 14; 34	1(प्रथम)	,,	19 वीं श.	
18×9 9; 20	53वां	,,	1876	
17.5×15 17; 20	55–56	,,	18 वीं श.	
16.5×11 19; 30	29–30	,,	1851	अंत में 'सीमन्धर-स्तवन' है।
13×21 24; 18	153–155	,,	1762	
13×21 24; 18	204–205	,,	18 वीं श.	
25.5×12 12; 39	2–3	अपूर्ण	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा.	5379	सवैया	लालचन्द
1668	(8)		
1669	4025 (2)	सहस्रकूट-स्तवन	
1670	5034	सातवार नी गुहली	वीरविजय शिष्य धीरविजय
1671	4046	सातवार-सज्झाय	गोविक मुनि
1672	5403 (10)	सात-व्यसन-भाषा (पद्य)	ब्रह्महंस
1673	4100 (16)	सात-व्यसन-सज्झाय	जयरंग शिष्य पुण्यकलश
1674	4936	,,	हर्षनन्द
1675	5343 (14)	,,	विजयरंग
1676	5416 (24)	,,	जयरंग
1677	5364(B) (17)	,,	
1678	5417 (20)	सात-व्यसन रा गीत	भीम
1679	4535 (6)	साधारण-जिन-स्तवन	
1680	5272 (16)	साधुजयमाल	भूधर

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
14.5×11 16;20	64–66	पूर्ण	19 वीं श.	
25×11.5 15;40	1(प्रथम)	,,	19 वीं श.	
26×12 13;46	1	,,	19 वीं श.	त्रुटित पत्र; लि.क. क्षमावर्द्धन; लि.स्था. राधिकापुर
18×10.5 13;30	1	,,	19 वीं श.	र.का. 1692
26×14.5 9;18	147–149	,,	19 वीं श.	
22×10.5 11;30	13–14	,,	19 वीं श.	
26×11 13;36	1	,,	20 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
17.5×13.5 11;20	40–41	,,	20 वीं श.	
15×12 11;16	47–48	,,	1869	लि.क. विजयचन्द
18×9 9;20	46–49	,,	1876	
21.5×14.5 27;16	67वां	,,	1836	लि.क. खुशहालचन्द; लि.स्था. बिलाड़ा
25.5×11.5 15;46	2(द्वितीय)	,,	1831	लि.क. रामविजय
25.5×27.5 31;28	24–25	,,	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1681	4444	साधु-वन्दना	ऋषि जयमल
1682	5271 (28)	,,	पुण्यसागर
1683	5300 (7)	,,	बनारसी
1684	5366 (11)	,,	
1685	5349 (20)	,,	पासचन्द्र
1686	5377 (5)	,,	साधुचन्द
1687	53[illegible]9 (16)	,,	
1688	5341 (1)	,,	बनारसी
1689	5404	साधु-सज्झाय	ग्रानन्दविमलसूरि
1690	4948 (1)	साधु-सुपात्रता के दोहे	
1691	5325(A) (14)	साधु-स्तुति	
1692	5366 (6)	सामयिक-पोसह-स्वाध्याय	पं. सुमतिकमल
1693	5120	सिंहविजयजी रो छन्द	कंवरपाल नागौरी

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24×10 13;30	5	पूर्ण	20 वीं श.	
30×16.5 13;40	186–191	,,	17 वीं श.	कीटविद्ध
14×17.5 16;18	49–51	,,	19 वीं श.	
16.5×21.5 18;20	125–126	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्रांक 123-124 अप्राप्त ।
16×10 11;20	37–44	पूर्ण	1771	लि.क. ऋषि सदारंग
14.5×10.5 10;16	1–4	अपूर्ण	18 वीं श.	पत्रांकन स्वतंत्र
14×13 20;24	66–71	पूर्ण	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
12×8 9;12	151–156	,,	19 वीं श.	पत्रांक 1-149 अप्राप्त ।
18×11 10;18	28–29	,,	18 वीं श.	लि.क. जीवण; जीर्ण-शीर्ण; कीटभक्षित
24.5×11 18;46	1(प्रथम)	,,	20 वीं श.	
25×16.5 13;28	79–82	,,	17 वीं श.	
16.5×11 19;30	11वां	,,	19 वीं श.	
16.5×14.5 13;20	2	,,	19 वीं श.	र.का. 1731; लि.क. अमरा आसावत

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1694	5341 (21)	सिंधु-चतुर्दशी	बनारसी
1695	5364 (4)	सिद्धचक्र-स्तवन	ज्ञानविनोद, उत्तमसागर का शिष्य कान्तिसागर
1696	5378 (23)	,,	कल्याणसागर
1697	5366 (23)	,,	बुद्धिविजय
1698	5104 (2)	,,	
1699	5074 (4)	सिद्धचक्र-स्तुति	विजयसेनसूरि
1700	4242 (14)	,,	
1701	4590 (2)	सिद्धां नी स्तुति	
1702	4840	सिद्धाचल-गज़ल	कल्याण
1703	4427	सिद्धाचल-तीर्थमाला	अमृत
1704	5366 (14)	सिद्धाचल-स्तवन	ज्ञानविमल
1705	4892	,,	चन्द वाचक
1706	4996	सीताजी का आलोयणा	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
12×8 – 9; 12	309-310	पूर्ण	19 वीं श.	
18×9 9; 20	13–20	,,	1875	कुल स्तवन 8 हैं।
16.5×8 14; 26	51–52	,,	19 वीं श.	
16.5×11 19; 30	30–31	,,	1851	र.का. 1747
24.5×11 11; 32	1–2	,,	1695	लि.क. गौड़ीदास; लि.स्था. जैसलमेर
25.5×11 21; 60	2(द्वितीय)	,,	19 वीं श.	
31×13.5 10; 26	21–22	,,	20 वीं श.	
33.5×14 20; 58	2(द्वितीय)	,,	1871	त्रुटित पत्र; लि.क, ज्ञानसागर-गणि; लि.स्था. सूरत-बन्दर
24×44 56; 40	1	,,	1864	त्रिपुटी खरड़ा
25×11 11; 28	12	,,	1854	र.का. 1840; लि.क. कल्याण
16.5×11 19; 30	22वां	,,	1850	
26×11.5 16; 36	2	,,	20 वीं श.	र.का. 1830
25×11 10; 34	4	अपूर्ण	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1707	4100 (13)	सीता-सती-सज्झाय	जिनहर्ष
1708	5420 (20)	,,	,,
1709	5416 (27)	,,	,,
1710	4818 (10)	,,	
1711	4966	,,	जिनहर्ष
1712	5364(B) (22)	सीमन्धरजिन-स्तवन	
1713	5182 (1)	,,	लालचन्द गणि
1714	5378 (31)	,,	ऋषभ
1715	4380 (2)	सीमन्धरजिन-स्तुति तथा नमस्कार	
1716	5303 (19)	सीमन्धर-विनती	
1717	5404(D) (91)	सीमन्धर-स्तवन	
1718	4535 (1)	,,	जिनहर्ष
1719	5310 (5)	,,	सकलचन्द्र शिष्य सहजकुशल

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
22×10.5 11;30	11वां	पूर्ण	19 वीं श.	
13.5×11.5 12;20	36वां	,,	19 वीं श.	
15×12 11;16	51–53	,,	1869	लि.क. विजयचन्द
23×10.5 14;32	6ठा	,,	19 वीं श.	
26.5×12.5 14;40	1	,,	20 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
18×9 9;20	53–54	,,	1876	
24.5×11 13;40	1	,,	18 वीं श.	त्रुटित पत्र
16.5×8 14;26	67–68	,,	19 वीं श.	अंत में ऋषभसागर कृत 'मल्लिगीत' है।
24×12 15;29	7–8	,,	19 वीं श.	लि.क. ज्ञानविलास; लि.स्था. जैसलमेर
17.5×15 14;20	63वां	,,	18 वीं श.	
13×21 24;18	86वां	,,	18 वीं श.	
25.5×11.5 15;46	1(प्रथम)	,,	1831	लि.क. रामविजय
21.5×13.5 16;30	107-110	,,	1679	पत्रांक 107 व 108वां चित्रित।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1720	5364 (29)	सीमन्धर-स्तवन	लालचन्द गणि
1721	3685	,,	मुनि लावण्यसमय
1722	4242 (4)	,,	
1723	5373 (2)	सीमन्धर-स्तुति	जिनहर्ष
1724	4219	सीमन्धरस्वामी-स्तवन	भक्तिलाभ
1725	5343(B) (8)	,,	
1726	5375 (8)	,,	भक्तिलाभ
1727	5404 (29)	,,	मल्लिदास
1728	5404 (39)	,,	भक्तिलाभ
1729	4213	,,	
1730	4511 (2)	,,	लाभोदय
1731	5373 (7)	सुखंडिनी-स्तुति	
1732	3629 (2)	सुगुरु-पचीसी	जिनहर्ष

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
18×9 9;20	70–71	पूर्ण	1876	
24.5×10.5 16;44	2	,,	19 वीं श.	र.का. 1562
31×13.5 10;16	14–15	,,	20 वीं श.	लि.क. दीपचन्द
11×18 15;10	2–3	,,	20 वीं श.	
25.5×12 11;34	2	,,	20 वीं श.	
17.5×13.5 11;20	26–28	,,	20 वीं श.	
17.5×11 16;18	12–14	,,	19 वीं श.	
13×21 24;18	16–19	,,	1764	
13×21 24;18	26–27	,,	18 वीं श.	
23.5×10 16;50	1	,,	19 वीं श.	अंत में 'ब्रह्मचारी व्रत' है।
25×12.5 23;46	4(चतुर्थ)	,,	1869	
11×18 15;10	8–9	,,	20 वीं श.	
24×12.5 10;32	2–4	,,	1904	लि.क. खुस्यालचन्द; लि.स्था. अहमदाबाद

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1733	5411 (4)	सुदर्शन सेठ रा कवित्त	दीपो
1734	5416 (17)	सुपात्र-दान-गीत	राय
1735	5303(E) (8)	सुपार्श्वजिन-स्तवन	आनन्दघन
1736	5122 (2)	सुबुद्धिजिन-स्तवन	
1737	5303(G) (8)	"	आनन्दघन
1738	5404 (104)	सुभद्रा-स्वाध्याय	
1739	4238	सुभाषित	
1740	5392 (3)	सुभाषित-संग्रह	
1741	5303(C) (8)	सुमतिजिन-स्तवन	
1742	5343 (24)	"	वाचक मानविजय
1743	5356 (11)	"	
1744	5364(A) (27)	सुमतिजिन-स्तुति	
1745	5349(C) (19)	सुमतिनाथ-स्तवन	पासचन्द्रसूरि

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
13×9 8;12	11-79	पूर्ण	1866	लि.क. ऋषि माणकचन्द
15×12 11;16	20–23	"	1869	लि क. विजयचन्द
17.5×15 17;20	58–59	"	18 वीं श.	
24.5×10.5 18;48	1–2	"	19 वीं श.	
17.5×15 17;20	59–60	"	18 वीं श.	
13×21 24;18	141–142	"	19 वीं श.	
26×11 35;18	1	"	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
7.5×5.5 8;8	25-28	"	20 वीं श.	
17.5×15 17;20	57वां	"	18 वीं श.	
17.5×13.5 11;20	13–14	"	20 वीं श.	
12×12.5 16;15	47वां	"	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; कीटविद्ध
18×9 9;20	46–47	"	1876	
16×10 11;20	36--37	"	18 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1746	4837 (11)	सुवचन-कुवचन री सज्झाय	
1747	5378(D) (12)	सुविधि-जिन-स्तवन	सुखराज
1748	5271 (39)	सूरतमण्डन-पार्श्वनाथ-जिनस्तवन	विनय
1749	5364(C) (15)	सोलह-सतियाँ री सज्झाय	
1750	4128 (1)	सोलह-सती-सज्झाय	
1751	5366 (11)	,,	
1752	5404 (127)	सोलह-सती-स्वाध्याय	
1753	5343(A) (26)	,,	उदयरतन
1754	4899	सोलह-सपना री सज्झाय	
1755	5356 (8)	,,	
1756	5122 (5)	,,	तेजसिंह
1757	5359 (9)	,,	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24×10.5 17; 38	8वां	पूर्ण	19 वीं श.	
16.5×8 14; 26	19वां	,,	19 वीं श.	
30×16.5 13; 40	220–221	,,	18 वीं श.	अंत में 'वैराग्य-सज्झाय' है; कीटविद्ध
18×9 9; 20	42–44	,,	1876	
24×11.5 15; 42	1 (प्रथम)	,,	19 वीं श.	
16.5×11 19; 30	20वां	,,	1850	
13×21 24; 18	178–179	,,	18 वीं श.	
17.5×13.5 11; 20	17–19	,,	20 वीं श.	
15×10.5 13; 26	2	अपूर्ण	19 वीं श.	लि.क. वीरपाल शिष्य ऋषि यादव; त्रुटित; जीर्ण-शीर्ण
12×12.5 16; 15	37–39	पूर्ण	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; कीटविद्ध; पत्र चिपके हुए।
24.5×10.5 18; 48	2–3	,,	19 वीं श.	र.का. 1727
18×12 12; 21	32–35	,,	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1758	5319 (3)	स्तवन-गीत-संग्रह—	ऋषभसागर
		1. अजितनाथ-गीत	,,
		2. अभिनन्दन-गीत	,,
		3. सुमतिनाथ-गीत	,,
		4. अभिनन्दन-गीत	,,
		5. पद्मप्रभ-गीत	,,
		6. चन्द्रप्रभु-गीत	,,
		7. सुविधिनाथ-गीत	,,
		8. शीतलनाथ-गीत	,,
		9. संभवनाथ-गीत	,,
		10. नेमिनाथ-गीत	,,
		11. शान्तिनाथ-स्तवन	,,
		12. पद्मप्रभ-गीत	,,
		13. पार्श्वजिन-गीत	,,
1759	5404 (33)	स्तवन	
1760	5362 (3)	स्तवन (राग विलावल में)	जयसोम
1761	5371 (1)	स्तवन आदि संग्रह—	
		1. नेमिनाथ-स्तुति	
		2. पार्श्वनाथ-स्तुति	
		3. वर्द्धमान-स्तुति	
		4. सिद्धन की स्तुति	
		5. गुरां की स्तुति	
		6. जिनवाणी की स्तुति	
		7. ज्ञान की भावना	
		8. राग-विराग	
		9. योग-निषेध	
		10. देह-निरूपण	
		11. संसार-दशा	
		12. शिष्योपदेश (अपूर्ण)	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
11.5×16 24;22	6–10	पूर्ण	19 वीं श.	
13×21 24;18	21वां	पूर्ण	18 वीं श.	
12×10.5 10;15	123वां	;;	18 वीं श.	
17×11 10;18	1–7	;;	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) वं.सा. 1762	5357 (1)	स्तवन-संग्रह	गंग, कान्तिविजय, जगजीवन, परमानंद, समयसुन्दर, राम, हर्षचन्द्र, रूपचंद्र, ज्ञानविमलसूरि, आनन्दविजय, ऋषभविजय, चन्दविजय, जिनचन्द्र, गुणरत्न, विजयदास, नयविमल, खुशालचन्द, नयसागर, रंगविजय, जसविजय, मोहनविजय, भूधर, आनन्दघन, आशाधर, सेवक
1763	5353 (9)	"	विजयकीर्त्ति, कल्याणकीर्त्ति
1764	5343(A) (8)	"	रूपचन्द
1765	5131	स्तवन-संग्रह— 1. महावीरजी का स्तवन 2. सुपार्श्वनाथ-स्तवन 3. पद आदि	रंगविजय, विजयवाचक, नवल, लालचन्द
1766	5074 (3)	स्तवन	
1767	5074 (2)	"	विनयशील
1768	4568	"	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
14×10.5 10; 16	1–60	पूर्ण	1857	पत्रांक 24, 26 व 45वां त्रुटित; लि.क. गुलाबविजय
15.5×12 14; 32	105–108	,,	19 वीं श.	पत्रांक 109 पर 'राग-पद' हैं।
17.5×13.5 11; 20	24–26	,,	20 वीं श.	
26×11.5 14; 40	1	,,	19 वीं श.	
25.5×11 21; 60	1 (प्रथम)	,,	19 वीं श.	
25.5×11 21; 60	1 (प्रथम)	,,	19 वीं श.	
11.5×23.5 9; 16	1	,,	20 वीं श.	र.का. 1822; र.स्था. नागौर; लि.क. नन्दराम

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1769	5209(B) (3)	स्तवन	जयसोमप्रभ
1770	5420 (8)	स्तवन-पद-संग्रह	नवल, बनारसी, खुशहालचंद, रूपचन्द, जयकीर्ति
1771	5420 (24)	,,	विजयकीर्त्ति, रूपचन्द, भवनभूषण, जगतराम, भूधर, नवल
1772	5420 (22)	,,	लालचन्द, महेन्द्रकीर्त्ति, जगतराम, भुवनकीर्त्ति, बनारसीदास, मुनि शोभाचंद, मुनि कीर्त्ति, रामदास, तिलोक, दौलत, जिनदास, विजयकीर्त्ति, हरिसिंह, हर्षचंद, रत्न, नवल
1773	5420 (16)	,,	भानुकीर्त्ति, हर्षकीर्त्ति, विजयकीर्त्ति, लालचन्द
1774	5420 (19)	,,	भाणचंद, रूपचंद, समयसुन्दर, विश्वभूषण
1775	5344 (14)	,, (विनती, नेमिराजीमती-गीत तथा पद)	
1776	5353 (7)	,,	विजयकीर्त्ति, जगतराम, बनारसी, सवाईराम, हरिसिंह
1777प.	5337	,,	कनककीर्त्ति, दीप, अजयराज
1778	5349 (29)	,,	
1779	4073	स्तव-संग्रह	ज्ञानविमल

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
16.5×15 16;24	14–15	पूर्ण	18 वीं श.	
13.5×11.5 12;20	11–15	,,	1823	
13.5×11.5 12;20	66–70	,,	19 वीं श.	
13.5×11.5 12;20	38–61	,,	19 वीं श.	
13.5×11.5 12;20	29–30	,,	19 वीं श.	
13.5×11.5 12;20	33–36	,,	19 वीं श.	
12×14.5 9;12	71–81	,,	19 वीं श.	अंत में और कृतियां हैं।
15.5×12 12;30	92–94	,,	19 वीं श.	
16×12.5 9;15	27	अपूर्ण	1886	
16×10 11;20	92–98	पूर्ण	1778	
24×10.5 19;46	2	अपूर्ण	19 वीं श.	अंत में 'स्वाध्याय' है।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1780	4293 (4)	स्तुति	
1781	4242 (23)	"	
1782	4242 (31)	"	
1783	5351 (26)	स्तुति-कोश-स्तवन	
1784	5375 (13)	स्थंभरण-पार्श्वनाथ-वृद्धि-स्तवन	कुशललाभ
1785	5404 (55)	स्थंभरण-पार्श्वनाथ-स्तवन	
1786	4535 (16)	"	शान्तिचन्द्र
1787	5419(B) (3)	"	
1788	5343 (9)	" (द्वय)	अभयदेवसूरि, कुशललाभ
1789	5399(C) (15)	स्थूलिभद्र-कोश-जयमाला	कुरंग मुनि
1790	5416 (7)	स्थूलिभद्र-कोश्या-सज्झाय	मुनि लालचन्द
1791	3980	स्थूलिभद्र-छन्द	सहजसुन्दर
1792	5017 (2)	लिभद्र-सज्झाय	लक्ष्मीविजय

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण / अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
26×12 10; 22	7–8	पूर्ण	19 वीं श.	
31×13.5 10; 26	26वां	„	20 वीं श.	
31×13.5 10; 26	29–30	„	20 वीं श.	
13×10 10; 14	112–114	„	19 वीं श.	
17.5×11 16; 18	25–30	„	19 वीं श.	लि.क. मुनि दौलतराम
13×21 24; 18	37वां	„	18 वीं श.	
25.5×11.5 15; 46	5–6	„	1831	लि.क. रामविजय
13.5×9 9; 12	6–8	„	19 वीं श.	लि.क. चतुर्भुज; लि.स्था. मेड़ता
17.5×13.5 13; 20	28–35	„	20 वीं श.	
14×13 20; 24	65–66	„	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
15×12 11; 16	14–16	„	1869	लि.क. बिजयचन्द
26×12 17; 36	19	„	1816	लि.क. ऋषि भाणजी
23×10.5 14; 40	1(प्रथम)	„	1753	जीर्ण-शीर्ण; त्रुटित; लि.क. रगविजय गणि

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा. 1793	4825	स्थूलिभद्र-सज्झाय	रामजी शिष्य गुणसागर
1794	5416 (8)	"	
1795	5420 (5)	स्फुट-पद	विजयकीर्त्ति
1796	4999	"	जिनदास
1797	5420 (2)	स्फुट-राग-पद	समयसुन्दर
1798	5062	स्याद्वादाधिकार-पद-भाषा	अमृतचन्द मुनि
1799	4535 (14)	स्वयंप्रभु-जिनमाल	विनय
1800	5295 (1)	स्वाध्याय	
1801	5404 (103)	"	पद्मसागरसूरि
1802	5404 (105)		
1803	5404 (123)	"	गुणसूरि
1804	5404(B) (116)	"	जिनरंग
1805	5404 (115)	"	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
26.5×11 13;48	1	पूर्ण	18 वीं श.	
15×12 11;16	16–17	,,	1869	लि.क. विजयचन्द
13.5×11.5 12;20	7–8	,,	19 वीं श.	
10×23.5 30;20	1	,,	20 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण व त्रुटित
13.5×11.5 12;20	2–3	,,	19 वीं श.	
10.5×24 58;38	2–4	,,	20 वीं श.	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
25.5×11.5 15;46	5वां	,,	1831	लि.क. रामविजय
19.5×31.5 14;10	1–8	,,	20 वीं श.	
13×21 24;18	140वां	,,	19 वीं श.	
13×21 24;18	142–143	,,	19 वीं श.	
13×21 24;18	171–172	,,	18 वीं श.	
13×21 24;18	151–152	,,	19 वीं श.	
13×21 24;18	151वां	,,	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) जै.सा.। 1806	5378(A) (20)	स्वाध्याय	कल्याण शिष्य चरित्रसागर
1807	5130	हंस-सज्झाय	
1808	4824	हितशिक्षा-द्वात्रिंशिका	क्षमाकल्याण
1809	4142	हितोपदेश-सज्झाय	
1810	4430	हितोपदेश-सत्तरी	श्रीसार शिष्य रत्नहर्ष
1811	4902 (1)	हीर-सज्झाय	विजयसेनसूरि शिष्य ?
1812	4100 (3)	होरी-पद	
23-विविध 1813	5336 (4)	उत्सर्पिणी-काल-विवरणादि	
1814	5301(A) (17)	उदयपुर री भावना	
1815	5348 (1)	चरखा	
1816	5200	चौदह-राजलोक का चित्र	
1817	5301 (1)	तीर-कवाण की तालीम	
1818	5292	दस्तूर-मालिका	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
16.5×8 14;26	46वां	पूर्ण	19 वीं श.	
22×11.5 16;36	1	"	19 वीं श.	लि.क. मु. देवजी
24.5×11 10;38	2	"	1871	लि.क. पं. मोतीचन्द मुनि; लि.स्था. बीकानेर
25×11.5 9;33	4	"	20 वीं श.	लि.क. रेवाशंकर
25.5×11 15;40	3	"	1743	लि.क. सोमनन्दन गणि; लि.स्था. कर्णपुरा
22.5×10 14;34	1(प्रथम)	"	19 वीं श.	
22×10 11;30	3(तृतीय)	"	19 वीं श.	
16.5×21.5 18;20	31-33	"	1857	
24×14.5 9;24	212-213	"	18 वीं श.	इसी में 'अनोखाकुंवर' री बात है।
14.5×9.5 12;11	1-3	अपूर्ण	18 वीं श.	
12×26	1	पूर्ण	19 वीं श.	सचित्र
24×14.5 9;24	15-16	"	18 वीं श.	महाराणा जगतसिंहजी की आज्ञा से लिखित; पत्रांक 1-14 अप्राप्त।
20×13.5 9;18	46	अपूर्ण	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
23-विविध 1819	5320	दासबोध	रामदास
1820	5404 (6)	पोथी-टीप (ग्रन्थ-सूची)	
1821	5191	मकसुदाबाद का एक पत्र	
1822	4726	यति की हकदारी की रिपोर्ट	
1823	4901	स्फुट-नाम-संग्रह	कवि गद

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
18.5×11.5 11;20	18	पूर्ण	1896	लि.क. रंगलाल; लि स्था. नागपुर
13×21 24;18	1	,,	18 वीं श.	पत्रांकन स्वतंत्र ।
11.5×12.5 23;26	1	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; रूपा चेली द्वारा लिखित
22×34 28;24	1	,,	19 वीं श.	
12×22.5 31;22	1	,,	19 वीं श.	वसुधा, हाथी सिंह आदि के नाम; छन्द के गुरु-लघु गण तथा मराठी में कवित्त ।

टिप्पणी—इससे आगे के पृष्ठों में जो पूर्व के विषय पुनः प्रारम्भ हो रहे हैं वे भूलवश यथास्थान नहीं पा सके, इसके लिए हमें खेद है ।

—सम्पादक

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
10-का.शा.			
1824	4565	कविप्रिया	केशवदास
1825	4579	कविप्रिया-टीका	टी. हरिचरणदास
1826	5099	कृष्णचन्द्र का नखशिख-वर्णन	ग्वाल कवि
1827	8202 (2)	नखशिख-वर्णन	
1828	5298	नायिका-भेद	
1829	5335 (1)	,,	
1830	4908 (7)	पिंगल-छन्द-ग्रन्थ	
1831	5070	भाषा-तिलक	हरिप्रसाद
1832	4811	भाषा-भूषण	हरिदास
1833	5096	,,	महाराजा जसवन्तसिंह
1834	5311 (2)	रस-मंजरी	
1835	4527	रस-विलास	देव

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24×10.5 15; 40	48	अपूर्ण	1740	पत्र 31वां व अंतिम अंश अप्राप्त।
32.5×15.5 13; 38	107	,,	19 वीं श.	पत्र 1-3, 5-9, 12-31, 54-105 व अंतिमांश अप्राप्त।
17×27 16; 16	2–15	,,	20 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; कीटविद्ध
25×10.5 13; 38	5–9	,,	19 वीं श.	जर्जरित
17×26.5 20; 15	11–27	,,	20 वीं श.	पत्र 1-10 व अंतिमांश अप्राप्त।
16×21 16; 17	19–43	,,	19 वीं श.	पत्र 1-18, 20, 21-22, 26-27 व अंतिमांश अप्राप्त।
12×19.5 18; 15	17	,,	19 वीं श.	अंतिमांश अप्राप्त।
25.5×12.5 9; 34	48	,,	20 वीं श.	पत्र जीर्ण-शीर्ण व अव्यवस्थित।
29.5×13 10; 28	12	,,	19 वीं श.	अंतिमांश अपूर्ण।
25×9.5 7; 32	19	पूर्ण	1812	लि.क. यशोरूप; लि.स्था. नराइणा (नरेना); प्रारंभिक व अंतिम के दो पत्र गलित एवं जली हुई प्रति।
19.5×13 12; 13	83–98	अपूर्ण	19 वीं श.	
23.5×10.5 3; 36	49	पूर्ण	1896	लि.क. मंगल; क्षतिग्रस्त

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
10-का.शा. 1836	4775	रसिक-प्रिया	केशवदास
1837	5350 (1)	,,	,,
1838	5311 (1)	,,	,,
1839	3706	,,	,,
1840	3725	,,	,,
1841	4227	रूप-दीपक-पिंगल-भाषा	कृपाराम शिष्य ?
1842	4438	रूप-दीप-भाषा	भवानीदास
1843	4802 (1)	विरह-मंजरी	
1844	4606	संयोग-द्वात्रिंशिका	मान कवि
1845	5415 (1)	सुन्दर-शृंगार	कविराज सुन्दर
1846	3994	,,	,,
11-व्याक. 1847	4467	भाषा-विचार	
1848	5290 (4)	सोमपाटी (बारहखड़ी)	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15.7×21 18; 18	2–76	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्र 1, 9-10 अप्राप्त; जीर्ण-शीर्ण; कुछ पत्र बाद में लिखित ।
16.5×12 11; 16	5–113	,,	1806	लि.क. त्रिलोक ब्राह्मण; पत्र 1-4 अप्राप्त; जीर्ण-शीर्ण ।
19.5×13 15; 14	25–82	,,	20 वीं श.	पत्र 1-24 अप्राप्त ।
16×11.5 15; 45	26	,,	18 वीं श.	र.का. 1648; जीर्ण-शीर्ण
25×10.5 13; 38	37	पूर्ण	1747	लि.स्था. रिणी नगर
26.5×12 16; 44		,,	19 वीं श.	
27×13 11; 34	7	,,	1876	लि.क. नगराज; लि.स्था. गोपाचल
25×10.5 13; 38	1–5	,,	18 वीं श.	जर्जरित एवं कीटविद्ध
25.5×10.5 15; 52	4	,,	1761	र.का. 1730
13.5×10.5 15; 18	1–53	,,	1853	पत्र 23वां दो बार; लि.क. ऋषि जीवणदास; लि.स्था. बीदासर
24×10.5 13; 40	29	,,	19 वीं श.	
25×10.5 17; 40	2	,,	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण व कीटभक्षित
21×14 10; 22	16–23	,,	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
12-कोष			
1849	5338 (1)	अनेकार्थ-मंजरी (नाम-माला)	नन्ददास
1850	5308	उर्वसी-नाम-माला	
1851	4119 (4)	चौदह-विद्याओं के नाम	
1852	5376	मान-मंजरी	नन्ददास
13-आयुर्वेद			
1853	5168	अंजुल-पुराण (वैद्यक-शास्त्र)	हकीम फरासी सुकनाथ सुत
1854	3818	असालिया-पाक तथा प्रभावती-गोली-विधि	
1855	3816	आयुर्वेदीय-योग	
1856	5394	आयुर्वेद-ग्रन्थ-भाषा	
1857	5290 (8)	आयुर्वेदिक-रसायन (स्फुट)	
1858	5350 (2)	औषधि-संग्रह	
1859	5371 (2)	"	
1860	3811	कमलज्ञान-वैद्यक	लक्ष्मीवल्लभ गणि
1861	5134	कमलाप्रकाश-वैद्यक (स्फुट-पत्र)	कमलनयन

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र ग्रक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ ग्रपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
14×20 15; 14	16	पूर्ण	20 वीं श.	जर्जरित; कीटविद्ध; दग्ध
23.5×15 14; 13	25	ग्रपूर्ण	1703	पत्र 1-2, 12, 16 एवं 25वां ग्रप्राप्त ।
22.5×11 10; 25	4–5	पूर्ण	19 वीं श.	
11.5×15 9; 7	2–80	"	20 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; प्रथम पत्र ग्रप्राप्त ।
26.5×12.5 13; 44	80	ग्रपूर्ण	19 वीं श.	ग्रंतिमांश ग्रपूर्ण ।
24.5×10.5 13; 38	1	"	19 वीं श.	
25.5×11.5 14; 40	1	पूर्ण	19 वीं श.	लि.क. जयकरण; लि.स्था. बेनातट
15.5×4.5 7; 30	84	ग्रपूर्ण	18 वीं श.	स्फुट पत्र; प्रथम व ग्रंतिमांश ग्रप्राप्त ।
21×14 10; 22	1–11	"	19 वीं श.	स्फुट पत्र
16.5×12 11; 16	114–172	"	20 वीं श.	गलित व कीटभक्षित; बीच-बीच में गीत भी हैं ।
17×11 10; 18	8–9	पूर्ण	20 वीं श.	
25.5×10.5 17; 56	4	"	1755	लि.क. सभाचन्द; लि.स्था. रिणी
15×20.5 38; 26	5	ग्रपूर्ण	1844	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
13-आयुर्वेद			
1862	5192	चिकित्सासार	धीर्यंराम सारस्वत
1863	5341 (25)	द्वादशांग-परीक्षा तथा पद	
1864	5174	नाड़ी-परीक्षा	रामचन्द्र
1865	5241	नाड़ी-परीक्षा (वैद्यमनोत्सवान्तर्गत)	नयनसुख
1866	5402	नाड़ी-परीक्षा तथा काल-चक्र	
1867	3806 (1)	नालपरावर्त्तनादि की औषधि	
1868	4375	पुरुष-चिकित्सा	
1869	3815	प्रमेह, भैषज अभ्रक विधि आदि स्फुट	
1870	4998	बांझ स्त्री का इलाज	
1871	5003	योग-चिन्तामणि	
1872	5353 (1)	,,	नृसिंह
1873	3797	रामबिनोद-भाषा-प्रबन्ध	रामचन्द्र

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
26×12 13; 42	11	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्र 1, 2, 4 व अंतिमांश अप्राप्त।
12×8 9; 12	329-339	पूर्ण	19 वीं श.	
26×11.5 20; 48	1	,,	19 वीं श.	रामविनोद के अंश का राजस्थानी अनुवाद।
25×10 9; 35	3	,,	20 वीं श.	
16.5×13 9; 18	8	,,	20 वीं श.	कालचक्र अपूर्ण
24.5×10.5 13; 44	1-2	,,	19 वीं श.	
23×10.5 17; 31	1-9	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण एवं त्रुटित पत्र
25.5×11.5 17; 32	2	,,	19 वीं श.	
24.5×11.5 15; 34	1	,,	20 वीं श.	
23.5×12 11; 26	40	अपूर्ण	20 वीं श.	स्फुट एवं अव्यवस्थित पत्र; पत्र 2-6; 2-15; 20-22, 27-42 अप्राप्त; इसमें दो प्रतियों के पत्र संयुक्त हैं।
15.5×12 13; 30	1-41	पूर्ण	19 वीं श.	
23×10 17; 34	52	,,	1771	लि.क. कल्याणचन्द्रसूरि शिष्य गुणचन्द्रसूरि; लिस्था. श्रीपत्तन

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
13-आयुर्वेद 1874	4350	रामविनोद-वैद्यक	
1875	3568	वैद्यमनोत्सव	नयनसुख शिष्य केशवदास
1876	3804	,,	,,
1877	4513	वैद्यमनोत्सव-सटिप्पण	,,
1878	4531	वैद्यमनोत्सव	,,
1879	4575	,,	,,
1880	5341 (16)	वैद्यलक्षण	
1881	5283	शालिहोत्र	नकुलाचार्य
1882	5293	,, सचित्र	,,
1883	5294	,,	,,
1884	5417 (21)	,,	,,

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25.5×11.5 13; 42	9–29	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्र 1-8 अप्राप्त ।
25.5×12.5 8; 28	12	„	19 वीं श.	अंतिमांश अपूर्ण; पत्र 4 पर केशवदास को ग्रन्थ कर्त्ता के रूप में उल्लिखित—इति श्री पण्डित वैद्य केसवदास विरचितं वैद्य-मनोत्सवे. . . .
25.5×10.5 21; 66	6	पूर्ण	1737	र.का. 1649; लि.क. सभाचंद; लि.स्था. नवलखी; अन्त में हरीतकी के गुण ।
26×12 7; 40	24	„	1869	सुवाच्य प्रति; टिप्पण उर्दू भाषा में हैं ।
25×12 12; 38	12	„	1874	र.का. 1649; लि.क. माणकचन्द; र.स्था. सिंहनद
24.5×11 9; 24	89	अपूर्ण	1918	पत्र 84-88 तक अप्राप्त ।
12×9 9; 12	278–284	पूर्ण	19 वीं श.	
17.5×25 20; 18	135	„	19 वीं श.	
20×32 30; 16	1–10 व 23–31 (19)	अपूर्ण	1932	पत्र 10वां चित्रित; लि.क. श्रीनाथ सुखवाल; लि.स्था. किशनगढ़; पत्र 11-22 अप्राप्त; त्रुटित पत्र ।
22.5×32.5 19; 20	18	„	20 वीं श.	
21.5×14.5 27; 16	68–79	पूर्ण	1837	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
13-आयुर्वेद 1885	3817	सयरी-नालेर-कल्प	
1886	5407 (3)	स्फुट-आयुर्वेद-प्रयोग	
1887	5378 (33)	स्फुट-औषधि-संग्रह	
1888	3819	,,	
14-ज्योतिष 1889	5213	अब्जदी (शकुनावली)	सतीदास
1890	5370	कर्मविपाक-भाषा	
1891	4740	केशवीय-पद्धति-भाषा	
1892	5361 (4)	गमन-विचार तथा ज्योतिष-सारिणी	
1893	5417 (18)	गुराचार-फल	
1894	5417 (17)	ग्रहण-विचार	
1895	5417 (14)	ग्रहभाव-भाषा	
1896	4308	चालक-करण-विधि	
1897	5297	ज्ञान-स्वरोदय	चरणदास

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25×11 17;43	1	पूर्ण	19 वीं श.	अन्त में सतपुड़ा री औषधि है।
11.5×7.5 7;14	39–52	अपूर्ण	1885	
16.5×8 14;26	73–74	पूर्ण	19 वीं श.	
24×11 14;40	1	"	19 वीं श.	अंत में सन्तानोपाय हैं।
21.5×15.5 21;44	6	"	1848	जीर्ण-शीर्ण; र.का. 1794। लि.स्था. बीकानेर
21.5×14 16;14	2–21	अपूर्ण	20 वीं श.	प्रथम पत्र अप्राप्त।
22.5×11 16;40	15	"	18 वीं श.	
19×9.5 8;22	71–76	पूर्ण	19 वीं श.	अन्त में कुछ कवित्त हैं।
21.5×14.5 27;16	65–66	"	1836	
21.5×14.5 27;16	64	"	1836	
21.5×14.5 27;16	62वां	"	1836	
26×11.5 5;43	1	अपूर्ण	20 वीं श.	
32×19.5 14;30	170–174	पूर्ण	20 वीं श.	पत्र 1-169 अप्राप्त।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
14-ज्योतिष 1898	3773	ज्ञान-स्वरोदय	चरणदास
1899	5417 (29)	ज्योतिष-विचार	
1900	5417 (23)	ज्योतिषसार-दूहाबन्ध	कृपाराम
1901	5405 (1)	ज्योतिष-पत्र	
1902	5404 (7)	ज्योतिष स्फुट-पत्र	
1903	5297 (2)	दिल्ली की जन्म-पत्री	
1904	4856	द्वादशवर्गी-वात यन्त्र	
1905	5315	तिमिर प्रदीप लघु जातक-भाषा	श्रीकृष्ण मिश्र
1906	4356	नक्षत्र-सर्वेक्षणकरण-विधि	
1907	5094	नवकार-चक्रावली (शकुन विचार)	
1908	4164	नवग्रह द्वादश भावना दृष्टादृष्ट-विचार	
1909	4366	पक्षि-शकुन-विचार	
1910	4325	पंचांग-विधि	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
22.5×12.5 14; 28	11	पूर्ण	1910	लि.स्था. रतनगढ़ की खेड़ी
21.5×14.5 27; 16	150–155	,,	19 वीं श.	
21.5×14.5 27; 16	81–112	,,	1837	लि.क. पं. खुशहालचन्द लि.स्था. बावड़ी
18×11 10; 16	1–6	,,	18 वीं श.	जर्जरित व कीटभक्षित लि.स्था. कर्णपुरा
13×21 24; 18	2(द्वितीय)	,,	18 वीं श.	
32×19.5 14; 30	174–180	,,	20 वीं श.	
24×11 14; 40	4	,,	1818	त्रुटित
21×14.5 20; 18	1–42	अपूर्ण	20 वीं श.	
25×11.5 19; 50	1	पूर्ण	19 वीं श.	
24.5×10.5 12; 30	1	,,	19 वीं श.	
25.5×11 14; 47	3	,,	20 वीं श.	
25.5×11 20; 42	1	,,	19 वीं श.	
27×12.5 16; 34	4	,,	20 वीं श.	अन्त में मूल विधान, सूर्यदान तथा सोमदान-विवरण है ।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
14-ज्योतिष 1911	5301 (3)	पंचांग-चितावनी	
1912	4803	पल्ली-पतन-विचार	
1913	4912	पल्ली-विचार-चउपई	
1914	4631	पाराशरीय-जातक-भाषा-व्याख्यान	भा. परमसुख दैवज्ञ
1915	5228	पाराशरी-टीका	"
1916	5204	पाशा-केवली	
1917	5203	पाशा-केवली-भाषा	
1918	5336 (14)	पाशा-केवली	
1919	5407 (7)	पाशा-केवली-भाषा	
1920	4719	"	
1921	4210	फलनाम-चक्र (सचित्र)	
1922	5417 (11)	बारहराशि-संक्रान्ति-विचार-फल	
1923	5356 (12)	वेघड़ियों	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24×14.5 9; 14	2(द्वितीय)	पूर्ण	18 वीं श.	पत्रांकन पृथक् से हैं।
25×10.5 15; 48	1	,,	18 वीं श.	प्रारंभ में कुछ पद्य संस्कृत में हैं।
23.5×11 15; 40	1	अपूर्ण	19 वीं श.	अंतिमांश अप्राप्त।
27×11 10; 34	13	पूर्ण	20 वीं श.	र.का. 1868; लि.स्था. जयपुर; पद्यबद्ध
26.5×13.5 12; 42	9	,,	20 वीं श.	सुवाच्य; र.का. 1868; लि.स्था. जयपुर
28×9.6 9; 26	2–9	अपूर्ण	19 वीं श.	प्रथम पत्र अप्राप्त।
22×10 12; 28	3	पूर्ण	1805	लि.क. दीपचंद मुनि; लि.स्था. जाथूसर
16.5×21.5 18; 20	130–135	अपूर्ण	19 वीं श.	
11.5×7.5 7; 14	1–21	पूर्ण	1885	र.का. 1820
22.5×9 7; 22	11	अपूर्ण	19 वीं श.	प्रथम पत्र पर 'शकुनावली'; पत्र 1-3, 5वां अप्राप्त।
25.5×12 13; 13	2	पूर्ण	1867	लि.क. रामचन्द्र; लि.स्था. पल्लिकापुर
21×14.5 27; 16	59–60	,,	1836	
12×12.5 16; 15	48–50	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; कीटविद्ध

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
14-ज्योतिष			
1924	4160	वृहद्-पचवर्गी-इति-कर्त्तव्यता	
1925	5404 (148)	वृहस्पति-फल	
1926	4806	भड्डुली-पुराण	
1927	4926	,, (सार्थ)	
1928	4172	,,	
1929	5417 (25)	,, (स्फुट-दोहे)	
1930	4251	महादेवी-गत कोष्ठक शुद्धि-विधि	
1931	4904	महादेवी-ग्रह-टिप्पण	
1932	4431	मुहुर्त्त-कोश	पंचायण
1933	4480	रमल-चन्द्रिका	
1934	4616	रमल-भाषा	जयकिशन
1935	4360	लग्नमान-दिनमान पत्रकरण-विधि	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25×11 16; 39	2	पूर्ण	1851	लि.क. भैरवदास
13×21 24; 18	216–219	,,	18 वीं श.	
16.5×13 14; 18	8	,,	1972	
25.5×11.5 19; 44	1(प्रथम)	अपूर्ण	19 वीं श.	त्रुटित
25.7×12 16; 40	4	पूर्ण	19 वीं श.	
21.3×14.5 27; 16	117–118	,,	19 वीं श.	
26×11 10; 53	1	,,	19 वीं श.	
25×10.5 12; 46	1	,,	19 वीं श.	
25.5×11.5 16; 48	9	,,	19 वीं श.	र.का. 1815; र.स्था. अजमेर
22.5×14 12; 28	42	अपूर्ण	1892	प्रथम पत्र अप्राप्त। लि.क. मिश्र मोहनलाल माथुर 10वां पत्र दो बार।
32×15 12; 40	45	,,	20 वीं श.	पत्रांक 8-10, 18, 20-21 व 31-33 अप्राप्त।
25×11.5 13; 42	1	,,	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
14-ज्योतिष 1936	4478	लघु-जातक-भाषा	टीकाराम
1937	5140	विवाह-पटल-भाषा	हीर
1938	3842	,,	सहदेव
1939	5417 (22)	,, (दूहाबन्ध)	रूपचन्द
1940	5417 (28)	,, (भाषा-बन्ध)	अभयसोम
1941	3997	शकुन पुरुष-चित्र	
1942	4354	शकुन-विचार	
1943	5310 (8)	,,	
1944	4289	शकुनावली	
1945	5303(B) (1)	,,	
1946	5380 (8)	,,	
1947	5417 (12)	शनिफल	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25.5×12 16; 34	14	अपूर्ण	1862	र.का. 1800 पत्रांक 1-2 व 13वां अप्राप्त । लि.क. ऋषि लालमणि लि.स्था. पाटिलपुर; आजमखान की आज्ञा से रचित ।
25.5×12 16; 42	2	पूर्ण	19 वीं श.	
25.5×11.5 10; 26	11	"	1907	लि.क. नागराज; लिस्था. खारिया
21.5×14.5 27; 16	79–81	"	1836	
21.5×14.5 27; 16	128–150	"	19 वीं श.	
19×10 10; 16	1	"	19 वीं श.	रेखा का चित्र
23×10.5 15; 50	1	"	18 वीं श.	
21.5×13.5 16; 30	114–120	"	17 वीं श.	
26×13 10; 44	5	अपूर्ण	19 वीं श.	प्रथम पत्र व अंतिमांश अप्राप्त ।
17.5×15 17; 20	10–13	पूर्ण	18 वीं श.	
15×16 14; 14	190–200	"	1824	
21.5×14.5 27; 16	61वां	"	1836	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
14-ज्योतिष 1948	5417 (19)	शनि-फल	
1949	5417 (15)	शस्यादि पति-फल	
1950	5417 (16)	शुक्रफल	
1951	5417 (10)	षष्टि-संवत्सरी-भाषा	
1952	5417 (26)	संक्रान्ति-फल	
1953	3840	संवत्सरी का दूहा	
1954	5417 (13)	सर्व वर्ष राजावलि-फल	
1955	4169	सावा काढण री विधि	रूपचन्द
1956	5303(अ) (1)	सोलह-पंछी-ज्ञान	
1957	4418	होराचक्र-भाषा	ऋषि सुन्दर
15-गणित 1958	5209(अ)	पट्टी-पहाड़े	
1959	5290	,,	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
21.5×14.5 27;16	66वां	पूर्ण	1836	लि.क. खुशहालचन्द लि.स्था. बिलाड़ा
21.5×14.5 27;16	62–63	,,	1836	
21.5×14.5 27;16	64वां	,,	1836	
21.5×14.5 27;16	50–59	,,	1836	लि.क. क्षमाधीर; लि.स्था.बिलाड़ा
21.5×14.5 27;16	118–120	,,	19 वीं श.	
10.5×25 56;30	1	,,	1717	लि.स्था. बीकानेर
21.5×14.5 27;16	61वां	,,	1836	
24.5×12 12;37	2	,,	1870	लि.क. पं. भाग्यसुन्दर लि.स्था. जोधपुर
17.5×15 17;20	1–9	,,	18 वीं श.	प्रारंभ में अक्रमांकित 2 पत्रों में पद्मप्रभु शिष्य गुणसागर कृत 'शांतिनाथ स्तवन' के 9-20 पद्य हैं।
26.5×12.5 19;48	4	,,	1898	लि.क. आत्माराम; लि.स्था. दादरी
16.5×15 16;24	8–14	अपूर्ण	18 वीं श.	
21×14 10;22	29–46	पूर्ण	1840	लि.क. हीरानंद; लि.स्था. जयपुर

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
15-गणित 1960	4827	लीलावती-भाषा	लालचन्द
16-संगीत 1961	3969	रागमाला	गिरिधर मिश्र
1962	5302	राग-सागर	कृष्णदेव व्यास
17-का.शा. 1963	5309	कोकमंजरी	आनन्द
1964	5425	"	"
1965	5183	कोक-शास्त्र-भाषा	
1966	4741	"	
1967	4422	कोक-सार	
1968	5301 (15)	"	कोक
20-मंत्र-तंत्र 1969	5304	इन्द्रजाल-भाषा	
1970	4773	"	शम्भु
1971	5316	करिश्मा	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25.5×11.5 13;40	22	अपूर्ण	19 वीं श.	जीर्णोद्धरित प्रति
25.5×10.5 20;62	1	पूर्ण	18 वीं श.	
17×10.5 8;14	49	अपूर्ण	19 वीं श.	संगीतकल्पद्रुम पर आधारित; पत्रांक 1-3, 5, 8, 41-48 तथा अंतिमांश अप्राप्त।
14×20 14;12	47	"	20 वीं श.	पत्रांक 1 व 45वां अप्राप्त।
20.5×12 15;30	15	"	20 वीं श.	पत्र 1-2 अप्राप्त।
23.5×11 16;50	3	"	19 वीं श.	
25×10.5 25;62	5	पूर्ण	17 वीं श.	
25×35.5 30;30	11	"	1887	कीटविद्ध; लि.क.मयासुख नागोरी लि.स्था. आहवा ग्राम
24×14.5 9;24	176–199	"	18 वीं श.	प्रारंभ में 'श्रीकृष्ण स्तुति' है।
22.5×15.5 7;18	25	"	1900	
29×15 12;40	42	"	1881	लि.क. शंकर; लि.स्था. रूपनगर
16×20.5 11;14	54	"	20 वीं श.	उर्दू का भी प्रयोग है।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
20-का.शा. 1972	4989	कामना-मंत्र तथा दिशा-यंत्र	
1973	5040	घण्टाकर्ण-कल्प-भाषा	
1974	5097	चतु:षष्टि-योगिनी-यन्त्र	
1975	5135	चौरासी-तन्त्र	
1976	5010	झाड़ा-मन्त्र	
1977	5011	पंचाक्षरी-प्रयोग	
1978	5055	पंचांगुली-कल्प-साधन-विधि	
1979	5378(ब) (14)	स्फुट-मंत्र-संग्रह	
1980	3516 (6)	,,	
1981	4972	,,	
1982	5371 (3)	,,	
1983	5404 (147)	,,	
1984	4957	,,	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
11.5×15 22; 20	1	पूर्ण	20 वीं श.	संस्कृत का भी प्रयोग है।
25×12 14; 36	1	,,	20 वीं श.	
26×11 14; 32	1	,,	20 वीं श.	
11×11 20; 26	4	,,	19 वीं श.	
22×12 11; 28	1	,,	20 वीं श.	
23.5×11 10; 28	1	,,	20 वीं श.	मराठी का भी प्रयोग है।
25×10.5 20; 54	1	,,	18 वीं श.	
16.5×8 14; 26	26–28	,,	19 वीं श.	
11×10.5 9; 12	9–10	,,	19 वीं श.	स्वतंत्र पत्रांकन।
26×12.5 13; 36	2	अपूर्ण	20 वीं श.	
17×11 10; 18	10–15	पूर्ण	20 वीं श.	
13×21 24; 18	210–215	,,	18 वीं श.	
24×11 15; 30	1	,,	1821	लि.क. ऋषि थिरपाल लि.स्था. आगरा

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
20-मंत्र-तंत्र 1985	5012	स्फुट-मंत्र-संग्रह	
1986	5009	,,	
1987	4703	स्फुट-मंत्र-संग्रह तथा प्रयोग	
1988	5158	,,	
21स्तु.स्तो. 1989	5404 (134)	कालभैरव-छन्द	कवि मल्ल
1990	5005	देवी-आरती	शिवानन्द
1991	5356 (13)	देवी-स्तोत्र	
1992	5209 (1)	भवानी-छन्द	केशव
1993	5274 (6)	महादेवजी री निसाणी	
1994	5417 (39)	रामरक्षा-स्तोत्र	
1995	3516 (7)	विमलाजी री सिलोको	
1996	4792	शनिश्चर-छन्द	पं. ललितसागर
1997	5405 (15)	शनिश्चर-स्तोत्र	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25.5×12 18;34	2	पूर्ण	19 वीं श.	
20.5×12 11;26	1	„	20 वीं श.	
25.5×11 17;50	1	„	18 वीं श.	
20×12 15;22	3	„	19 वीं श.	
13×21 24;18	190–91	„	18 वीं श.	
25×11 15;32	1	„	19 वीं श.	
12×12.5 16;15	51–62	„	19 वीं श.	पत्रांक 57-58 पर अपूर्ण रास तथा 60-62 पर दोहे है ।
16.5×15 16;24	1–6	„	1751	लि.क. मयाचंद; लि.स्था. मेड़ता
16.5×12 25;20	30–33	„	1849	
21.5×14.5 27;16	241–242	„	19 वीं श.	
11×11.5 9;12	15–18	अपूर्ण	19 वीं श.	स्वतंत्र पत्रांकन
25.5×11 13;42	1	पूर्ण	19 वीं श.	
18×11 10;22	84–86	„	18 वीं श.	क्षतिग्रस्त

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
21स्तु.स्तो. 1998	5396 (4)	श्रीकृष्णसहस्रनाम	गुसाईं कृष्णदास
1999	4043	सरस्वतीजी का छंद	
2000	5392 (9)	सरस्वती री स्तुति	
2001	5358 (1)	सूरजजी रो सिलोको	
2002	5314	,,	
2003	5404 (9)	स्तवन	
22(1) जै.आ.,दर्शन 2004	3999	अजीव रा भेद	
2005	5346 (1)	अध्यात्मगीता-भाषा	देवचंद्र
2006	3651	आगमसारोद्धार-बालावबोध	,,
2007	3861 (1)	,,	,,
2008	5300 (4)	आठकर्मस्थिति	
2009	4620	उत्तराध्ययन-भाषा	ब्रह्म

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
14×10.5 9;15	1–7	पूर्ण	1825	स्वतंत्र पत्रांकन
25×11 13;38	1	,,	19 वीं श.	लि.क. गौडीदास
7.5×5.5 8;8	121–126	,,	20 वीं श.	
17×11 11;16	1–3	,,	18 वीं श.	
12×9 11;13	4	,,	20 वीं श.	
13×21 24;18	4था	,,	18 वीं श.	अन्त में गुणस्थान, पृथ्वी के नाम तथा मिथ्यात्व नाम दिये हैं।
25×12 15;44	3	,,	19 वीं श.	
13.5×23 23;16	1–4	,,	19 वीं श.	
24×12 15;40	51	,,	19 वीं श.	र.का. 1776
25×12 15;34	30	,,	1766	जीर्ण-शीर्ण लि.स्था. फलवर्द्धिका
13×17.5 16;18	31–33	,,	19 वीं श.	
20×11 13;40	20	,,	18 वीं श.	36वां अध्याय

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(1)- जै.आ.,दर्शन 2010	5173	उपदेशरत्नकोश	
2011	4291	कर्मग्रंथ-यंत्र	
2012	5405 (6)	कर्मप्रकृति	
2013	5300 (5)	कर्मप्रकृतिविधान	बनारसी
2014	3681	,,	,,
2015	5341 (14)	,,	,,
2016	5336 (6)	,,	,,
2017	3606 (2)	कर्मप्रकृति-विवरण	
2018	3957	कर्मविपाक-संक्षेपसारणी	मुनि सुमतिवर्द्धन
2019	3946	कल्पपीठिका	लक्ष्मण
2020	3904	ज्ञाताधर्मकथाङ्ग-सूत्र-भाषा	ऋषि मेघराज
2021	5383	द्वादशांगीसूत्र-वर्णन-बालावबोध	दीपविजय
2022	3825	परमानन्द-तत्व-निरूपण	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
26×11 11;38	5	अपूर्ण	1696	प्रथम पत्र अप्राप्त।
25×12 15;35	14	„	18 वीं श.	पत्र 1-4 अप्राप्त।
18×11 10;18	31–34	पूर्ण	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
13×17.5 16;18	33–45	„	19 वीं श.	
23.5×14 19;28	3	„	1894	
12×8 9;12	247–277	„	19 वीं श.	
17×21.5 18;20	35–43	„	1857	लि.क. दयाचन्द
25.5×11 13;38	7–12	पूर्ण	19 वीं श.	
25×11 19;38	10	„	19 वीं श.	
26×12 15;45	15	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्रांक 1 व 12वां अप्राप्त।
25×11 11;35	21	„	1705	प्रथम पत्र अप्राप्त; लि.क. देवकल्लोल गणि
19.8×37.5 386;28	1(खरड़ा)	पूर्ण	1889	
25.5×12 19;44	2	„	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(1)- जै.आ., दर्शन			
2023	4124 (11)	पैंतीस बोलां रो थोकड़ो	
2024	4054	प्रश्नोत्तर-सुखबोधिका	विनयविजय उपाध्याय
2025	4636	भगवतीसूत्र-विवरण	
2026	4222	मनुष्य-तीर्थचरी-आयुवारी-विगत	
2027	3823	समयसार-नाटक-भाषा	बनारसीदास
2028	4588	,,	
2029	4337	,,	
2030	3883	,, -सस्तबक	बनारसीदास
2031	4911	समयसार-भाषाबद्ध-टीकासह	
22(2)- जैनप्रकरण			
2032	5336(C) (8)	अठारहदोष, छियालीसगुण विस्तार तथा जम्बूद्वीप परिमाण	
2033	5071	अठारह-स्थानक	
2034	4225	अन्तरध्यान रा भेद	
2035	4446	अष्टभंगी-अर्थ-विचार	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25×13.5 10;32	9–15	पूर्ण	19 वीं श.	
24×11 16;40	3	,,	19 वीं श.	अन्त में 'ब्राह्मणकर्म-षट्क' संस्कृत में है।
26×11 17;54	11	,,	1816	लि.क. धनविजय गणि लि.स्था. उदयपुर
25.5×12 20;30	1	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
25.5×10.5 15;56	37	,,	1763	र.का. 1693; लि.क. पं.रूपचंद्र; लि.स्था. रतलाम
25.5×10.5 15;38	16	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्र 1 व 12वां अप्राप्त।
25×11 17;48	15–43	अपूर्ण	18 वीं श.	पत्र 1-14 व अंतिमांश अप्राप्त।
24.5×11.5 14;34	176	,,	19 वीं श.	र.का. 1693; र.स्था. आगरा
25.5×11.5 5;30	9	पूर्ण	19 वीं श.	अन्त में 'समयसार-नाटक-नाम-माला' कवित्तबन्ध हैं।
16.5×21.5 18;20	76–78	,,	19 वीं श.	
24.5×10 24;50	2	,,	1942	लि.क. मोतीलाल साधु; लि.स्था. गाजीपुर
26.5×10.5 19;36	1	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
21.5×12 16;34	8	,,	1821	लि.क. डूंगरविजय

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(2)- जैनप्रकरण 2036	5405 (9)	आचार्यना-छत्तीस-गुण	
2037	4945	आहार के बयालीस-दोष	
2038	4232	उदेरण-द्वार	
2039	4254	उपदेशमाला-शकुन	
2040	5089	कायस्थिति तथा गतिद्वार (प्रज्ञापना-सूत्र-गत)	
2041	3682	कायस्थिति-भाषा	
2042	5336(G) (8)	कुलकोड़ी तथा गाथा	
2043	5271 (50)	कृति-सूची	
2044	4886	खरतरगच्छ-पट्टावली	
2045	5187	खरतरगच्छदुर्ग-विज्ञप्ति	
2046	4805	खरतरगच्छ व तपागच्छ विवाद-तीसबोल	
2047	4821	खरतरगच्छीय ओसवालों का गोत्र-विचार	
2048	4359	गच्छोत्पत्ति-विवरण	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
18×11 9;22	39वां	पूर्ण	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण व कीटविद्ध
11×25 37;20	1	,,	20 वीं श.	
27×12.5 15;35	2	,,	19 वीं श.	
24.5×11.5 14;40	5	,,	19 वीं श.	
24×12 26;46	5	,,	1819	लि.स्था. रामपुरा
26×10.5 20;40	4	,,	1874	लि.स्था. चनणा ग्राम
16.5×21.5 18;20	88–93	,,	19 वीं श.	गाथाएं प्राकृत भाषा में है।
30×16.5 13;40	267–270	,,	18 वीं श.	कीटविद्ध
25.5×10.5 15;52	3	,,	19 वीं श.	जिनहीरानन्द सूरि पर्यन्त पूर्ण
21.5×47.5 34;30	1(खरड़ा)	,,	1849	
24×12 12;32	7	अपूर्ण	1966	लि.क. दिलीपसिंह श्रीमाल
26.5×11.5 20;35	1	,,	19 वीं श.	
16×10.5 18;36	1	पूर्ण	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(2) जैनप्रकरण 2049	5336(B) (8)	गतागत-द्वार-विवरण	
2050	4250	गुणलक्षण-दोष तथा ज्ञान व भेद अष्टप्रकारी-पूजासह	
2051	4003	गुणस्थानक (चौदह)	सहजरतन
2052	4110	गुणस्थान (चौदह) तथा विंशति-द्वार	
2053	4905	गुणस्थान-द्वार	
2054	5399 (24)	गुर्वावली	
2055	5375 (23)	गौतम-पृच्छा-भाषा	नयरंग
2056	5404 (144)	चक्रवर्ती व तीर्थंकर आदि के नाम	
2057	4960 (2)	चार-स्वप्न-विचार	
2058	5417 (2)	चौरासी-गच्छ री विगत	
2059	4012	चौरासी-बोल-भाषाबन्ध	कवि हेम
2060	5336 (9)	चौबीस-गुण-स्थानक	
2061	4112	चौबीस-तीर्थंकर-नाम	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
16.5×20.5 18;20	75–77	पूर्ण	19 वीं श.	
26×11.5 19;43	4	"	1867	जीर्ण-शीर्ण
25×10.5 14;48	1	"	1766	कोण त्रुटित
25×10.5 16;34	6	अपूर्ण	19 वीं श.	प्राचीन; अंतिमांश अप्राप्त; त्रुटित पत्र हैं।
26.5×13 12;34	9	पूर्ण	1973	लि.क. जयगोपाल पुरोहित
14×13 20;24	89–91	"	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
17.5×11 16;18	77–80	"	19 वीं श.	
13×21 24;18	208वां	"	18 वीं श.	
25.5×11 15;38	1	"	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
21.5×14.5 27;16	2	"	19 वीं श.	प्रथम व चतुर्थ पत्र
24.5×10.5 12;34	7	"	1784	लि.क. चन्द्रवल्लभ मुनि; लि.स्था. हम्मीरदुर्ग; जीर्ण-शीर्ण
16.5×21.5 18;20	93–114	"	19 वीं श.	
23.5×11.5 6;26	1	"	20 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
(22)2 जैनप्रकरण 2062	3516 (2)	चौवीस-तीर्थंकर-नाम	
2063	5408 (11)	चौबीस-तीर्थंकरों के चिह्न	
2064	5408 (1)	,,	
2065	5419 (5)	चौबीस-तीर्थङ्करों के नाम	
2066	3606 (1)	चौबीस-दण्डक-विचार	
2067	4076	छत्तीस-दोष-सामयिक-विचार	
2068	4145 (11)	छब्बीस-बोल-पूरबले-भवरा	
2069	5405 (10)	छियानवे-जिन-नाम	
2070	5336 (3)	जिन-तीस-चौवीसी-नामावली	
2071	4903 (2)	जिनरंगसूरि-विषयक-ऐतिहासिक वर्णन	
2072	5341 (28)	जीव-दर्द की चर्चा	
2073	4256	जैन-पट्टावली (वि. सं. 1776-1909)	
2074	4889	जैन ना अड़सठ तीर्थ ना नाम	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
11×10.5 9; 12	19–20	पूर्ण	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
16.5×10.5 10; 20	22वां	,,	20 वीं श.	
16.5×10.5 10; 20	1	,,	20 वीं श.	
13.5×9 9; 12	14वां	,,	19 वीं श.	
25.5×11 13; 38	1–7	,,	19 वीं श.	
24.5×11.5 12; 40	1	,,	1901	लि.क. हर्षचन्द्र; लि.स्था. पाली
26.5×11.5 13; 35	1–3	,,	20 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
18×11 9; 22	40-41	अपूर्ण	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण व कीटविद्ध
16.5×21.5 18; 20	22–30	पूर्ण	19 वीं श.	
24.5×10.5 15; 38	1(प्रथम)	,,	19 वीं श.	
12×8 9; 12	406–424	अपूर्ण	19 वीं श.	
22×12.5 13; 20	1	पूर्ण	20 वीं श.	
25.5×12 18; 36	2	,,	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(2) जैनप्रकरण 2075	5408 (2)	तीन-चौबीसीजी का नाम	
2076	5336(A) (8)	तीर्थंकर-विवरण	
2077	4264	,,	
2078	5336 (5)	तीर्थंकरों के भक्तों तथा खर्चे का ब्यौरा	
2079	4367	तीस-बोल-द्वार	
2080	3584	तेवीस-बोल नो स्वरूप	
2081	4045	तेवीस-पदवी-विचार	
2082	5129	तेरह-द्वार-वर्णन	
2083	4959	द्वादश-भावना	सुद्धि शिष्य विद्याभूषण
2084	5354 (2)	द्वादशानुप्रेक्षा	
2085	4309	द्वार तथा दण्डक-विवरण	
2086	5336(D) (8)	नरक-नामावली	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
16.5×10.5 10; 20	1–3	पूर्ण	20 वीं श.	पत्रांकन पृथक् से हैं।
16.5×21.5 18; 20	56–74	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण; अंत में 'गुणस्थान' तथा 'दर्शन-भेद' का विवरण है।
7×5 8; 24	2	,,	19 वीं श.	
16.5×21.5 18; 20	33–34	,,	1857	इसमें 'सत्ताईस कौड़ी देवांगना का ब्यौरा' भी है।
25.5×11 9; 41	30–41	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्र 1-29 अप्राप्त
24×12.5 12; 30	14	पूर्ण	1901	लि.क. खुशालचंद शिष्य गौड़ीदास; लि.स्था. रतलाम, सदानन्द पठनार्थ
24.3×11 17; 40	1	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
26.5×11.5 17; 46	5	अपूर्ण	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
26×11 17; 46	2	पूर्ण	1783	लि.क. भागचंद शिष्य सुखाजी
15×12.5 10; 17	33–36	,,	18 वीं श.	
25.5×10.5	1	अपूर्ण	20 वीं श.	(कोष्ठक) जीर्ण-शीर्ण
16.5×21.5 18; 20	78–79	पूर्ण	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(2)-जैनप्रकरण 2087	5336(E) (8)	नवतत्त्व, जीव, श्रावक आदि भेद-वर्णन	
2088	4881	नवतत्त्व-विचार-गाथाओं की यंत्र रचनाबन्ध-संग्रह-सटिप्पण	दलपतिराय जयपुरिया
2089	3666	नवतत्त्व-विचार (द्वय) भाषा	
2090	3629 (3)	नवसमकित नो विचार	
2091	4962	नेमि-राजमती रा नव भव	केशव
2092	5450 (19)	पचज्ञान वरणी-भेद व चौबीस कषाय-भेद तथा पन्द्रहकर्म-भूमियों के नाम	
2093	4145 (1)	पन्द्रह-बोल	
2094	4217	पचगण-निगोद-छब्बीस	रामविजय
2095	5155	परिठावणियां-दस-बोल आदि	
2096	5405 (20)	पैंतालीस-आगम-नाम	
2097	5175	प्रज्ञापना अधिकार वार्त्तिक-बोल	
2098	5399 (12)	प्राणातिपात उपरिकुलक	
2099	5336(F)	प्रकृति-भेद	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्	विशेष ज्ञातव्य
16.5×21.5 18;20	79–85	पूर्ण	19 वीं श.	
11.5×24.5 33;22	37	,,	19 वीं श.	प्रथम पत्र दो बार
26×13 21;52	2	,,	19 वीं श.	
24×12.5 10;32	1–9	अपूर्ण	1904	लि.क. खुशालचंद्र; लि.स्था. अहमदाबाद; पत्रांक 4था व 8वां अप्राप्त ।
22×10.5 16;30	1	पूर्ण	20 वीं श.	
18×11 12;22	107–108	अपूर्ण	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण तथा कीटभक्षित
26.5×11.5 13;35	1(प्रथम)	पूर्ण	20 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
25×11 17;45	1	,,	19 वीं श.	
25×11 19;40	4	,,	20 वीं श.	स्फुट पत्र
18×11 10;20	109–110	,,	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण व कीटभक्षित
25.5×11 19;44	1	,,	19 वीं श.	लि.स्था. आगरा
14×13 20;24	60–61	,,	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
16.5×21.5 18;20	86–88	,,	19 वीं श.	अंत में 'चक्रवर्ती की भभूत' है ।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
(22) 2 जैनप्रकरण 2100	3770	प्रदेशी राजा का ग्यारह प्रश्न	
2101	4839	प्रश्नोत्तर	
2102	3861 (2)	प्रश्नोत्तर-सार्द्ध शतक-भाषामय	क्षमाकल्याण गणि शिष्य अमृतधर्म
2103	5354 (14)	बड़ा तथा लघु-कलाणा	
2104	5272 (9)	बाईस-परिसह	
2105	4474	बारह-उपमा	
2106	5300 (3)	बारह-भावना	आलू
2107	5272 (7)	"	
2108	5271 (36)	"	
2109	4864	बासठ-बोल	
2110	3865	"	
2111	4402	बासठ-मार्गणा-द्वार	
2112	5408 (3)	बीस-तीर्थंकरों के नाम	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
26×12 15;24	10	पूर्ण	1851	लि.स्था. सीगोलीसर
26×11 18;48	2	"	1881	लि.क. जयचंद; लि.स्था. पाली
25×11.5 15;34	1–27	"	1766	जीर्ण-शीर्ण; पत्रांकन पृथक् से है; प्रारंभ में 'सार्द्ध शतक नो बीजक' नाम दिया है।
25×12.5 10;17	135–140	"	18 वीं श.	
20.5×27.5 31;28	6–8	अपूर्ण	1916	
23.5×11 19;56	3	पूर्ण	19 वीं श.	लि.क. बखतराम; जीर्ण-शीर्ण; 'सामयिक सूत्रगत चर्चा' है।
13×17.5 16;18	27–31	"	19 वीं श.	
20.5×27.5 31;28	5वां	"	1916	
30×16.5 13;40	209–213	"	18 वीं श.	कीटविद्ध
24×10 12;32	9	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्र 8वां अप्राप्त; जीर्ण-शीर्ण
11.5×25.5 31;18	4	पूर्ण	19 वीं श.	
25.5×10 14;40	4–5	अपूर्ण	18 वीं श.	पत्र 1-3 अप्राप्त; पत्र कटे हुए हैं।
16.5×10.5 10;20	3(तृतीय)	पूर्ण	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(2) जैनप्रकरण 2113	5125 (1)	बीस-बोल	
2114	5359 (6)	बोल-संग्रह	
2115	4249	मूल-प्रकृति-भेद	
2116	5356 (14)	लाल री भावना	
2117	5344 (8)	वर्तमान-चौबीसी	
2118	4938	वस्तुपाल तेजपाल धर्म कार्य कीधा तिण री विगत	
2119	4257	विज्ञप्ति (शिवचंद्र के नाम)	जिनहर्षसूरि
2120	4206	श्रमण-महावीर से प्रश्न	
2121	3774	श्रावक ना इक्कीस गुण सार्थ	
2122	5403 (3)	सतऽद् विभेद	
2123	.5378(A) (44)	सनत्कुमार-सट्टा	समयसुन्दर
2124	5006	समवसरण-बारह पर्व तथा चोदह रत्न-विचार	
2125	4445 (2)	सम्यक्त्व-कुलक-भाषा	सेवक

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25.5×12 13; 34	1(प्रथम)	पूर्ण	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
18×12 12; 21	19–27	,,	20 वीं श.	
26×11.5 20; 43	1	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
12×12.5 16; 15	63–64	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण व कीटविद्ध लि.क. लालचन्द
12×14.5 9; 12	33–34	,,	19 वीं श.	
25×10.5 13; 40	1	,,	20 वीं श.	
12×16.5 7; 21	1	,,	1856	मोदरां से पाली तक का विवरण
26×11.5 20; 50	2	अपूर्ण	18 वीं श.	र.का. 1531; जीर्ण-शीर्ण; अंत में 'जोड़काया का प्रकरण' भी है।
26×11.5 9; 40	8–12	,,	19 वीं श.	पत्र 1-7 अप्राप्त
26×14.5 13; 26	110–113	पूर्ण	19 वीं श.	
16.5×8 14; 26	89–90	,,	19 वीं श.	पत्र 89वां निरंकित
9.5×22 31; 16	1	,,	20 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
26.5×11 13; 32	4–5	,,	1635	जीर्ण-शीर्ण

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(2)-जैनप्रकरण 2126	4095	सामयिक-ग्रहण-विचार	
2127	5336 (7)	सिन्दूर-प्रकरण-भाषा (सूक्तिमुक्तावली)	बनारसीदास
2128	5341 (27)	"	"
2129	5343 (27)	सीताजी की आलोचना	केवलकुशल
2130	5374 (1)	सूक्ति-मुक्तावली-भाषा	बनारसीदास
2131	5408 (13)	सोलहकारण-पूजा-भाषा	
2132	5419 (6)	सोलह-सती रा नाम	
2133	3671	सौबोलां रो बासठियो	
2134	5336(A) (13)	संसार-सासरियो	
22(4)-जैन-साहित्य 2135	5349 (27)	शील उपरि रास	
22(5) 2136	4940	कर्म ऊपरि कथा	
22(6) 2137	5346 (8)	रागपद तथा ढाल-संग्रह	

माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25×11.5 15;48	2	पूर्ण	1858	जीर्ण-शीर्ण; लि.क. भैरवदास लि.स्था. पाली
16.5×21.5 18;20	44–45	,,	19 वीं श.	र.का. 1651
12×8 9;12	365–406	;;	1851	
17.5×13.5 11;20	20–28	,,	20 वीं श.	
15.5×13 7;16	2–50	अपूर्ण	19 वीं श.	र.का.1691; प्रारंभिक पद्य अपूर्ण; प्रथम पत्र अप्राप्त ।
16.5×10.5 10;20	1–9	,,	20 वीं श.	पत्रांकन पृथक् से हैं ।
13.5×9 9;12	15वां	पूर्ण	1862	लि.क. चन्द्रभानु
12.5×25.5 35;20	5	,,	20 वीं श.	
16.5×21.5 18;20	127–128	,,	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
16×9.5 11;20	76–88	,,	18 वीं श.	
26.5×11.5 22;46	1	अपूर्ण	20 वीं श.	लि.स्था. समि; अंत में 'ज्ञानपंचमी कथा'
13.5×23 23;16	37–43	पूर्ण	19 वीं श.	गुजराती लिपि

परिशिष्ट–१

कतिपय विशिष्ट 'म' चिह्नित ग्रन्थों के उद्धरण

प्रारम्भ

64/4635 परमार्थदोहाशतक

॥६०॥ श्रीजिनाय नमः ॥

अथ परमारथ रूपचंद कृत दोहा लिख्यते ।

अपनौ पद न विचारहुं, अहो जगत के राय ।
भव बन छाइ कहां रहे, शिवपुर सुद्धि विसराई ॥१॥

भव वन वसत अहो तुम्हे, बीते काल अनादि ।
अब किन घरहि संभारहुं, कत दुष देषत वादि ॥२॥

परम अतांद्री सुष सुनौ, तुमहि गयौ सु भुलाइ ।
किंचित इंद्री सुष लये, विषयनि रहें लुभाई ॥३॥

विषयन सेवत हउ भले, तृीष्ला (तृष्णा) तउ न वुझाइ ।
जिम जल षारी पीवतइं, वाढइ तिरस अधिकाइ ॥४॥

तृष्ला (तृष्णा) उपसम कारणइ, विषयनि सेवत जाइ ।
मृग वपरो प्यासनि मरइ, जिम जल धोषइ धाइ ॥५॥

तुम चेतन दुष के लिए, रहे विषय सुष मानि ।
ज्यौं कपि सीत विथा मरइ, तापैं गुंजा आनि ॥६॥

विषयनि सेवत दुष भलौ, सुषव तुम्हारै जान ।
अस्थि चवत निज रुधिर तें, ज्यौं सच मानत स्वांनि ॥७॥

जिनही विषयनि दुष दीयौ, तिन ही लागत धाय ।
माता मारइ बाल जिम, उठि फुनि पग लपटाय ।।८।।

विषयनि सेवत दुख बढै, देषहु किन जिय जोय ।
षाजि षुजवत ही भली, फुनि दुष दुनौ होइ ।।९।।

विषयनि सेवत लगे भले, अंत करहिं अपकार ।
दुर्जन जन की प्रीति ज्यौं, जब तब जगहिं विकार ।।१०।।

अन्त जिह देषइ सब देषीयै, जान्यै सब जिह जानि ।
जिह पायइ सब पाईयै, लेहु न ताहि पिछान ।।८५।।

चेतन के परचै बिना, जप तप सबै निरथ ।
कण विन तु स ज्यौं फटकतै, आवै कबहुं न हथ ।।८६।।

चेतन स्युं परचौ नहीं, कहा भए व्रत धीरी ।
सालि विहुना षेत की, वृथा विति चारि ।।८७।।

तो लगि सब रस रुचित है, अरु सब विषयक हानि ।
जउ लगि चेतन तंत्त्व स्युं, नहीं कहुं पहिचानि ।।८८।।

विना तंत्त्व परिचय लगत, अपरिभाव अभिराम ।
ताम औरु रस रुचत है, अमृत न चाख्यौ जाम ।।८९।।

सुने परचे अनुभए, बार बार परिभाव ।
कबहुँ भूल न नए, ग्यायक शुद्ध स्वभाव ।।९०।।

कहा-कहा न भई तुम्हें, सुर नर पद की रिधि ।
पर कबहुं भूलन भई, चेतन केवल सिधि ।।९१।।

अनादि दर्शन मोह तैं, रही न सम्यक दृष्टि ।
तातै चेतन तत्त्व स्युं, भई न कबहुं दृष्टि ।।९२।।

जौं लगि मोहन उप समै, सहज ही काल पाइ ।
तौ लगि निर्मल दृष्टि बिन, तत्त्व पिछान्यौ न जाइ ।।९३।।

ग्रंथ पढ़े अरु तप तपै, सहे परी सह साहु ।
केवल तत्त्व पिछान बिनु, कहुं नाहीं निरवाहु ।।९४।।

चेतन तुम जु अनादि तइं, कर्म कर्द महि फेटि ।
समल अमल जल भए, सहज सुभावहि मेटि ।।९५।।

भेद ग्यान अव कुतक फल, सद्गुरू दियौ दिषाय ।
चेतन निरमल तत्त्व हूं, समलव केतक थाय ।।९६।।

गुरू बिन भेद न पाइयै, को पर को निज वस्तु ।
गुरू बिन भवसागर विषय, परत्त गहै को हस्तु ।।९७।।

जौ गुरू गुन भेदै नहीं, तौ जन होइ न सिद्धि ।
लोहा कंचन होइ ज्यौं, कंचन रस के विधि ।।९८।।

गुरु माता अरू पिता गुरू, बंधव गुरू मित्त ।
हित उपदेसें कंवल ज्यौं, बिगसावैं जिन चित्र ।।९९।।

गुरुनि लषाई मइं लखी, वस्तु भली पर दूरि ।
मन सरसीरुह नाल ज्यौं, सुत्र रह्यौ भर पूरि ।।१००।।

रूपचन्द सद्गुरुनि की, जनु बलिहारी जाइ ।
आपुन पैं सिवपुर गए, भव्य नु पंथ दिखाइ ।।१०१।।

पुष्पिका इति श्रीरूपचंद पाण्डे कृत दोहरा शतकं समाप्तं ।

x x x

82/4880 रामायण-कवित्त

प्रारम्भ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ रामायण सेनापति की लिख्यते ।

सुरतरसार की सवारी है बिरंच पचि,
कंचन खचति चिंतामनि के जराइ की ।
रानी कमला की प्री (प्रि)य आगम कहनहारी,
सुरसरि संखी सुख दैनी प्रभु पाइ की ।
वेद मैं वखांनी तीन लोकन की ठकुरांनी,
सब जग जानी सेनापति के सहाइ की ।
देव दुख दंड न भरत सिर मंडनवे,
वंदौ अघ खंडन खडांऊं रघुराइ की ॥१॥

कंज के समान सिधमान से मधुप निध,
परम निधांन सुरसरि मकरंद के ।
सब सुख साज सुर राजनि के सिरताज,
भाजन हैं मंगल मुकति रूप कंद के ।
सरजू विहारी रिख नारी तापहारी ग्यान,
दाता हितकारी सेनापति मतिमंद के ।
विश्व के भरन सनकादिक के सरन,
दोऊ राजत चरन महाराज रांमचंद के ॥२॥

॥ छप्पय ॥

भूपित रघुवस्वं(वंश) सभक्त वत्सल भवखंडन ।
मुनि जन मानस हंस विहित सीता मुख मंडन ।
त्रिभुवन पालन धीर वीर रावन मदगंजन ।
उदित विभीषण भागधेय निज परिजन रंजन ।
सुरपति नरपति भुजंगपति सेनापति वंदित चरन ।
राधिराज जय जय सदा सुरांम विश्व मंगल करन ॥३॥

॥ कवित्त ॥

मंद मुसिकांनि कोटि चंद ते श्रमंद राज,
दीपति दिनेस कोटिहू तैं अधिकांनीयैं ।
कोटि पवमान हू तैं महा वलवांन कोटि,
कानघैंन हूं ते महादांन जग जांनियैं ।
और ठौर झूठी वरनन सेनापति एतौ,
सीतापति याहूँ तैं अधिक गुन खांनियैं ।
ग्रैसी ग्रति उकति जुगगति मो वतावौ,
जासौं राजा रांम तीन लोक नाइक वखानियैं ॥४॥

अन्त
पाए सब काम बढ़े धनी ही की वांह छांह,
भांति ह्वै न जानी सपनै हूँ में अनाथ की ।
कोहू सुरराज जमराज हू ते डरपै न,
ग्रौर सौं प्रनाम करिवे की चरचाश्र की ।
सैनापति जरा मैं जे राखे ते अमर कीनें,
वाकी संग लीनैं दै दै मुकति निज साथ की ।
सांचै हैं सनाथ एक साकेत निबासी जीव,
सांची रजई है एक राजा रघुनाथ की ॥७२॥

रांमु महाराज जाकौ सदां अविचल राज,
वीर बल वंडजा है दलन दुवन कौ ।
कोई सुरासुर ताकी सरिकौं न पूजै कौं न,
तारौ घरै धांम धांम निध केउ वन कौं ।
ताकी तजि ग्रास सैंनापति ग्रौर ग्रास जैसौं,
छांडि सुधासागर कौ ग्रासरौ कुवनि कौ ।
दुखते वचाउ जातै होत चित चाउ मेरैं,
सोई है सहाउराव चौदहै भुवन कौ ॥७३॥

होत निरदोष रवि जोति सी जगमगाति,
तहाँ कविताई कछु हेतनि धरति है ।
कीने है कवित्त कछू रांम के कथा के तामैं,
दीजियैं न दूषन कहत सेंनापति हैं ।

ग्रैसोई सुभाव हरि कथा कौ सहज जातैं,
दूषन विना ही भूषन सो सुधरत है ।
ग्राप ही विचारौ तुम जहाँ खरदूषन हैं,
सो ग्रखर दूषन सहित कहीयत है ॥७४॥

सिवजू की निध हनूंमांनहू की सिध,
विभीषन की समृध बालमीक नैं वषांन्यौ हैं ।
विध कौ ग्रधार च्यारचौ वेदन कौ सार जप,
जग्य कौं सिंगार सनकादि उर ग्रान्यौं हैं ।
सुधा की समान भोग मुकतिनि दांन महा-
मंगल निधांन सैंनापति पहचान्यौं हैं ।
कामनां कौ कांमधेंन रसनां कौं विसराम,
धरम कौ धांम रांम नाम जग जान्यौं हैं ॥७५॥

॥ श्लेष ॥

कुसल वरस करि गाई सुरधुनि कहै,
भाइ मन संतन के त्रिभुवन जांनी हैं ।
देवन उपाई कीनौ है भौ उतरावन कौं,
विसद वरन जाकी सुधा सम वानी हैं ।
भुवपति रूप देहधारी पुन सील हरि,
ग्राई सुरपुर ते धरनि सिय रानी हैं ।
तीरथ सरव सिरोमनि सैंनापति जांनी,
रांम की कहानी गंगा धार सी वखांनी हैं ॥७६॥

पुष्पिका इति श्रीकविरत्नाकरे रामाइन वर्नंनं संपूरणम् ॥

संवत् १८५५ मिती पोह शुक्ल ४ बुधवार ॥ श्री रांमचंद्र ॥

x x x

83/5395 रामायण-भाषा

आरम्भ ....मंनांऊं ।।

सरस्वति वांणी सुद्धि बुध्य सुद्धिकरण गणेशा ।
वुध्यि गिरा सुधि होय निगंम सत गुरु उपदेशा ।।
सहिकारज उज्जल करो हरो तिमर अग्यांन ।
रांमचरित्त कहि जगंन्नाथ पाऊं पद निरवांन ।।२।।

वालमींक अस्थांनं सु इंछा नारद आये ।
कर आदर सतकार मुंनी को आंन बैठाये ।।
प्रश्न कियो बलमीक कंवन अस पुरष उजागर ।
जाकै सुमरण ध्यांन कियें तरिये भवसागर ।।
जाकै जस गाये सुनैं नीच ऊंच पद जाहि ।
वालमीक कहै जगंनाथ ऐसो कोंन पुरष जग माहि ।।३।।

अस पुरषोत्तम रांम नांम जाहि अपिर होई ।
तारक ब्रह्म सुमंत्र वेण सुरगावै सोई ।।
हो मुंनि को है रांम कंवन कुल गोत प्रमांणो ।
को आश्रम को बरण कोण रंग रूप ठिकांणो ।।
बिन देखें बिन ही सुनैं बिन ही किये प्रमांन ।
बिन गुंन जानैं जगंन्नाथ क्यों कवि करै वर्षांन ।।४।।

बरण आश्रम कुल गोत नहीं रंग रूप बसेषा ।
त्रिगुण परैं गुण धांम निगंम कर सकै न लेषा ।।
ब्रह्मा ह्वै जग रचै विष्न वपुधर जग पोषै ।
सिव ह्वै करै संघार लियै नहि कम गुण दोषै ।।
धर्म थापन अधर्म दहंन भोम उत्तारण भार ।
असुर संघारण जगंन्नाथ प्रभू अवधि रहै अवतार ।।५।।

हंस वंस अवतार भूप दसरथ ग्रह आई ।
वृह्म चतुर नर रूप मुंनी तिनके गुन गाई ।।
पूरब राम के चरित मुंनी नारद सब भाषे ।
बालमींक मुनि बचन हिदै धरनी कै राषे ।।
बालमीक बिनती करै नारद सौं करजोर ।
जगंनाथ गुण बरणतां वचंन लगै मति षोर ।।६।।

अन्त
चरंण परसि भजि नांम पाय दरसण गति पाई ।
रिष पतनी पद परसि पूत ह्वै पति पै जाई ।।
भजत भीलंणी नाम अटल अणमै पद पायो ।
दरसण पाय जटाय पंखी परलोक सिधायो ।।
हाथ निपाते गति भये दरस परस रघुबीर ।
पद प्रछालि प्रभु जगंन्नाथ भये सुगति कुल कीर ।।८५।।

कामधेंन कल्पवृक्ष राम को नांम कहावत ।
चिंतामणि हरिनाम सुमर चिंतत फल पावत ।।
राम नांम द्रिढ पोत तरण भव सिंध अपारा ।
अघतर छेदण काज रांम को नांम कुठारा ।।
क्रम कुंज च्यार वेद अवगाह सास्त्र छहौं निहारौं ।
नव व्याकरण निरूप चौदहौं विद्या विचारौं ।।
पढो अठार पुरांण स्मृति सबही अवगाहो ।
अवरैं ग्रंथ अनेक पढो समझो सुंनि गावो ।।
सब ग्रंथनि को सार भुक इक रांम नांम निरनैं कह्यो ।
धंनि जनंम सोई जगंन्नाथ जिन प्रेम सहित हिरदै धर्‌यो ।।९०।।

श्रवंण जिके अहि भंवन रांम गुण कसीं न धार्‌यो ।
नयंन चंद्रिका मोर नहीं हरि रूप निहार्‌यो ।।
दादर बंदंन समांन चरित रघुवीर न गायो ।
मस्तक सू को ठूंठ चरंण हरि गुर नहि नायो ।।
करम सांन की पावरी पद बट तर के मूल ।
जनंम अक्यारथ जगंन्नाथ जो अंग राघौ प्रतिकूल

सुंनत सुजस रघुवीर पाप परचंड पुलावै ।
वृह्म हत्या गउवद्ध बड़े अ्रथ रहण न पावै ।।
तात मात कुल घात बाल घाती तिय घातक ।
दव दाहक मग मारि जहर दायक बड़ पातक ।।
रांमचरित खगराज पाप पनंग भजि जांहि ।
जैसैं पावक मैं जगंन्नाथ पातिग पतंग जरांहि ।। ९२ ।।

कनंक तुला नंन तोल जगि असमेध करावैं ।
कनंक भोंम गउव्हांन पुन्यि कन्या परणावैं ।
वापी कूप तडाग करैं बहु पुंनि अपारा ।
रांम नांम समांन होत नाहिन पुनि सारा ।।
सुणत गुणत रघुवीर जस नर परलोकहि जांहि ।
पुंनि प्रभाव तैं जगंनाथ फिर........भरमैं भवमांहि ।।९३।।

लहै पदारथ च्यार रांम गुण सुणैं सुणांवै ।
धर्म अर्थ सुष भोग पुनह परलोक सिधावी ।।
थांन भ्रिष्ट थिरथाय रंक ग्रह नवनिध आवैं ।
सुत लहैं बांझ अन्त मूढ़ विद्वांन कहावैं ।।
रोगी ह्वैं आरोग तंन कुष्टी ह्वैं अकलंक ।
जयत रांम गुण जगंन्नाथ बाल न होई वंक ।।९४।।

दुहा चौपई छन्द गीत गुण कवित सवईया ।
पद लीला पुंनि गाथ बहुत निव चरित गवइया ।।
बालमीक कृत सिध कवी सरन(ग) चुंण काढत ।
भूषंन आंनन कर्ण उपासिक जन सुष बाढत ।।
कवि पंडित ग्यांनी धंनी तिन पैं मांगौं दांन ।
देऊ दया कर जगंनाथ सियारांम गुणगांन ।।९५।।

निमों सेवंत अवधीस सोभ मिथलेस निवारण ।
करंण सुकंठ कपीस किकंधाइस संघारंण ।।
तोरन सीस लंकेस वीस भुज गिर्द गिरावण ।
गावत गुण गोरीस प्रिया गोरी नुनि पांवन ।।

सोचंन सोच सुरीश सुरगावत चरित मुनीस ।
अवनीस इस मंगि जगंन्नाथ पद पंकज रजमय सीस ॥९६॥

इति श्रीरामचरित्रे भाषा जगंन्नाथेन कृतं उत्तरकांड संपूरणम् ।
सं. १८८२ अर सावण सुदी २ ।

x x x

166/4963 साहिब ग़ज़ल

प्रारम्भ ॥ अथ गजल ॥

अजब है खुदा ज्यो वो हि कारस्यांन
बनाया जिनु ने जमीं आसमान ।
वो ही हें करम बक्स साहिब धनीं,
उसी कु कहें कुल्ल आलमगनी ॥१॥

सबी हें उसी का निगें कारवान
पवन आव आंतस बनाया मुकान ।
खलक बीच मांने वो ही कारस्यान
कीया भीस्त दोजग खता दोस्तदान ॥२॥

उसी की है कुदरत्त रास दसवी
पलक मौज दरियाव जानत सवी ।
ज़वर जेर माया लगाई उसे
भवर जाल करिकें भुलाया उसे ॥३॥

बनाया जु बंदे सवब बंदगी
पड़ा रंग गफ़लत में लोभ तलगी ।
खलक है खुदा की खुदाइ खतीयार
करो बंदगी दिल से नेह दकरार ॥४॥

बड़ा हैं फिकर पेट कारन लगी
नहीं याद मौला नहीं वंदगी ।
खतावार वंदा फिरे दर विदर
गिरफदार होय कें हुवा वेखबर ॥५॥

की दर-दीन रोजा कि दर हें खुदा
सबव पेट के मांगना में सुदां ।
अगर उस खुदा की करो वंदगी
मिलें भीस्त न्यामत मिटे गंधगी ॥६॥

लगाया जु पीछे दोऊं कुं जवर
अजब दोनु वेगम मनाते बसर ।
मुलाया उसी ने किया मुझ कुं जेर
नहीं दिल सें गम ता सखावत् सहेर ॥७॥

करीमन् मुदा रंग तुझ वासरन्
भीस्त फौरन फरीदे वरन ।
निगादर गुजीस्ते जु वंदे सवा
अगारस्त मस्तान माहित नवा ॥८॥

कदादिन गुजीस्ते किया चिस्त चार
निरंगे परा एक परवर्दिगार ।
हमा तें निगा में वरा दमन मा
तुंही दिल के वाने की मोहोव्वत जमां ॥९॥

अगर मर्ज उस गुल्ल रमतें जिगर
दिलें होश मखतूल्ल तासें अजर ।
उमर्दे गरीबी हमेस्यां न माद
हमी हूर परवर्द मंगते मुराद ॥१०॥

दिलेंदार माहिल्ल मिलते बमा
खुदा पेस जो दिल्ल मोदे अर्मा ।
मुनादर मुना बस्म जोते दमे
मुनासब्ब तुझे बारि मोजां बमें ॥११॥

निगें उल्ल दरम्यांन नेहद विदा
अमी होस दिल गदनां में फिदा ।
मना देगें फौरन फरीदे वसर
खता देख दुनियां कें गमता जिगर ।।१२।।

वरासद ज्यों आदम ने पैदा किया
सवीरव्व के नाम सिजदा किया ।
एही वखत्तकमीद तेनें करी
निगें देख वंदे निवाजें करी ।।१३।।

पड़ा हूँ मैं दोजग दिवांनें वसर
करो मुझ पें हे दिल्ल चस्में वजर ।
तुं ही पीर सादर मुसाहिब खरा
जिगर जे सहम पें निगें रख जरा ।।१४।।

एही मौज मेरा तेरें सें लगा
नहीं तुझ बिना उर मेरा सग़ा ।
तेरा देख दीदार दिल कूं रमां
खरी बात तेरी मनां तें जमां ।।१५।।

अजब नाम रोशन तेरा है बड़ा
जिधर देखता हूँ जिधर तूं खड़ा ।
तुं ही एक मेरा है वंदे निवाज
गुनेगार वंदा तेरा हे सराज ।।१६।।

खतावार तेरा मैं परवर्दिगार
तुं ही आसी आरा खता दरगुजार ।
हुवा दिल में आसक तेरे नाम पर
बड़ा मस्त दिलदार दौलत असर ।।१७।।

मनादर गरुनि कु जीस्ते नफा वीरादर
जमांने कु जीस्ते वफा उमेदगार ।
वंदे पें नेहद करान्
निजागर निवाजें तुं वाहद वरान् ।।१८।।

दुनियां दुरंगी दुराल मुदरा
सखावत् नहीं मांने मोहोव्वत सरा ।
कीते दीन दरवेस रमते जमीन्
परे फेर फिर दागु जीस्ते करीम् ॥१६॥

तुंही पीर मुरस्पद उमीरा न तूं
तुंही दोस्त दिलदार रमज्यां न तू ।
तुंही म्राव मेंहेंताब रोस्यन् सितार
सवी ज्यांन मांनी तेरे इंखतीयार ॥२०॥

नहीं कोय दूजा तेरे सें जबर
टुंके खलकवांने की लेता खबर ।
गमा दी उजर खेंर दिल तालमां
मेरी लाज साहिव्व तुमसें रमां ॥२१॥

नहीं जानता वंदगी राह सर
गुथा इश्क मोहोव्वत की वांनें वसर ।
बड़ा भूत मस्तान घेरा मुझें
तेरी राह सें जेर करता मुझें ॥२२॥

वसन्ना मदारें तुंही एक मीर
तेरा नाम सुनकें हुया मैं फकीर ।
फरीयाद मेरी तेरें सें जबर
हरो पीर मन की मुरादें वसर ॥२३॥

अजब खेल तेरा निगें में कीया
दुनियां में रोस्यन् कलावत कीया ।
बनाया जु दोजग खताकें वसर
गुनेंगारी करते जें जाते अगर ॥२४॥

अजब रीत तेरी सवी पें निगाए
साकों न दुनिया में माहित सगा ।
सवी देव-दानें दरीते दीगर
निगेवान कदमो के रहेते अजर ॥२५॥

एती अर्ज की गर्ज कारन करा
मेरा मर्ज पर हर्ज वाहद वरा।
मनागस्त मुस्ताग मस्तेवया
गुना वक्त वानें की करदे मया ॥२६॥

खलक बीच रोस्यन प्रतापें तुंही
वसन्नामदारे जिहां नें तुंही।
तुंही दोस्त दील रस्तगस्ते वतान्
खुदा तू नवी तू निवाजे जिहांन ॥२७॥

दिया हें तें जोरा जवानी कें बीच
पड़ा इस्क गफलत में आसक वरीच।
लगा मोह-जाल जालम असर
लिया घेर दिल कुं कीया हें वजर ॥२८॥

दिने रात रमता सखत कामचार
फिकरवंद वंदा हुआ षेषतवार।
करो हम पें माहित निगा की निजर
रखो नेक कदमों के पायक अजर ॥२६॥

नही कोय मेरा विरादर जिगर
नही यार समदीन ही हैं उजर।
नही तात माता नहीं हें पिसर
तुंही एक मेरा धणी हें अमर ॥३०॥

अन्तिम

नहीं भूलता दिल सें दानत सना
खतादार खत देख मोहोव्वत वना।
लगी मेरी कदमो सें भावक सदा
दुनियां की आफत सें कर दे अदा ॥३१॥

पुष्पिका

सं. १६०७ आसोज सुदी ११ प्रताप विना लिखीतं ओरंगावाद मध्ये नुतम रचितमत्र ॥१॥

x x x

288/5287 पदसंग्रह

प्रारम्भ ।। श्रीनाथजी ।।

महाराजा श्री रूपसिंहजी साहबों के बनाये हुए पद ।

पद राग गौरी—

बन तैं बानिक बनि ब्रज आवत ।
बैंन बजाय रिझाय युवति जन गौरी रागहि गावत ।
वारिज बदनलाल गिरधर को निरखि सखी सचुपावत ।
रूप कटाछ करत प्यारी पर रूपसिंह अलि भावत ।।१।।

पद विनती का—

प्रभु जू इहां रहे कछु नाईं ।
करिये गवन भवन दिशि अपने सुनिये अरज गुसांईं ।
देखी बलख बरफहू देखी अधम असुर अवलोके ।
मध्यम देश भेषहू मध्यम इहां कहां लैं रोके ।
भक्त वछल करुणालय सुख निधि कृपा करो गिरधारी ।
रूपसिंह प्रभु बिरह लजत है ब्रज लै बसौ बिहारी ।।२।।

राग गौरी—

ढ़ाढ़नि आई यशुमति तेरे । श्याम सुन्दर माधुरि तन हेरे ।
घुंघरारे कच मुख पर सोहैं । मधुप वृन्द कंजन पर मोहैं ।
घन में दामिनि सी छबि पाई । पीत बसन भगुली पहराई ।
रूपसिंह पिय छबि को भारो । फूल रह्यौ ब्रज सुख उजियारो ।
नाक नथनियां कुंडल कान । तन मन वारों मृदु मुसकान ।
ढ़ाढ़नि देखि देखि के रीझी । राम कृष्ण माधुरि तन भीजी ।।३।।

अन्त राग सारंग का जिला—

रंग भीनी राधे केसरियो कुँवर महमान हे ।
तोसी नहिं बड़भागन दूजी नन्दकुंवर रिझमांन हे ।
कौन गौर सूं यह बर पायो फल पायो मनमान हे ।
नगधर सो भरतार रसिक बर तू रिझवार सुजान हे ॥१॥

छबीली राधे पूजो नी गणगोर हे ।
गंगाजल झारी लियैं कर अगर चंदन घसघोर हे ।
धूप दीप नैवेद्य चढावां बर मागाँ करजोर हे ।
ब्रजनंद जी ने म्हे बर पावां नंदजी रा कुंवर किशोर हे ॥२॥

रंगीली मोजां आई छै सुहाई गणगौर हे ।
सरस सुहागण पूजत छबिसौं अति चित हित कर जोर हे ।
नेह रंगी वो ही बर मांगत अंचल ओर निहोर हे ।
नगधर नगधर प्रान पियारे सोई पति हैं मोर हे ॥३॥

हे बगीचे नीकी फूलन संग फूली सुकुमार हे ।
फूल दोभ तोय हित सुन्दर उपवन करत बिहार हे ।
चंपो कुरबक सुभग मोतियो फूल गहे कर हार हे ।
पूजन गौर और बहो संग सखी नगधर ओढ़ निहारे हे ॥४॥

सबाजी म्हारँ सेवती रो गजरो लेता आज्यो जी ।
मदन बगीचा सहल पधारो मोहि भूल मत जाज्यो जी ।
राज छैल रिझवार भंवर अति बिहिठाँ बिलम मत जाज्यो जी ।
नगधर बहोपति जगत उजागर नेह लग्यां घर आज्यो नी ॥५॥

x x x

314/4236 आचार-चौपनी

॥६०॥ ॥ दूहा ॥

वर्द्धमान सासण घणी, गुणधर लागूं पाय ।
दया जमाता विनवुं, वादू सीस नमाय ॥१॥

द्वाणा यग मे चालिया, श्रावक चार प्रकार ।
मात पिता सरीषा कह्या, साधनि हेतकार ॥२॥

करड़ी काठी सीष दे, साधनि हेतकार ।
ढ़ीला पडवा दे नहीं, ते सुणज्यो अधिकार ॥३॥

॥ ढाल बिछियांनो ॥

जी सांमी घर छोड़ी ने निकल्या थे तो लीधो संजम भार जी ।
सांमि पांच महाव्रत पालज्यो मती लोय जोजण जी नीकार जी ॥४॥सा०

जी सांमि तप जप संजम पालज्यो निद्रा विगता निवार जी ।
सांमि बावीस परीसांजी पूज्यो चारीत्र खाडा नीधार जी ॥५॥सा०

॥ दूहा ॥

अन्त मुनिवर उठो गोचरी इरज्या सुमत संभाल ।
वस्या नो पाडोवर जी फरज्यो नंगर मुझार ॥४६॥ सा०

॥ ढाल ॥

जी सांमी किण कारणे मे वर जीयां थे साभलज्यो अधिकार जी ।
संका उपजे चित्त मे चारीत्र नी होवजी बीणांस जी ॥४७॥

मानो पित वारज्यो रंग बरंगा सुचितमांणजी ।
जे थारा मंन में संका होवे तो उतराधेन लो संभाल जी ॥४८॥ सा०

जी सामी अधिकांणी बुबडी बेरी ने टुटी जाए जी ।
ते कने उभा रहे ज्यो मति एकली त्रीया जांए जी ।।४९।। सा०

गोचरी उठो नगर में एक माडा सु लिज्यो आहार जी ।
आछा आछा ताकीयां लागसी दोष अपार जी ।।५०।। सा०

राज मारग उभा रहो मति मति जोज्यो लवारनो द्वार जी ।
एकली सत्री जांणने मत्ति करज्यो बात विच्यार जी ।।५१।। सा०

उतावला चालो मति हसता पण मति हाल जी ।
वाता पण करज्यो मति वले पला लीज्यो समाय जी ।।५२।। सा०

आचार बावनी साभली हरदे लीज्यो धार जी ।
जण जीना वचन अराद स्यो पामस्यो भवपार जी ।।५३।। सा०

समत अठारे छतिसे जोड़ी दिखण देस मुंझार जी ।
जोड़ी मोतीचंद जुगत सुं थे सांभलज्यो नरनार जी ।।५४।। सा०

पुष्पिका इति आचार चोपनी संपूर्ण लखतं ऋष्य हरचंद नगर जावद मध्ये समत १८६८ वरषे चत्र वीदं (चैत्र वदि) सील सातम ।

x x x

415/4488 अयवंत–सुकुमाल–चउपई

प्रारम्भ ।।६०।। ।। श्री वीतरागाय नमः ।।

आदि देव आदि नमीं, साधु तणा गुणसार ।
कहिस्यें नमि कमलापती, मो मनि हरष अपार ।।१।।

॥ ढाल १ जंबूदीप मझारि ए देशी ॥

मुनिवर आर्य सुहस्ती किणहीक अवसरैं नयरि उजेणी समोसरयाए ।
चरण करण व्रतधार मुण मणि आगर बहुपरिवारैं परवस्याए ॥२॥

वनवाडी विश्राम लेई तिहां रह्या दोय मुनि नगर पठावीया ए ।
थांनिक मांगण काजि मुनिवर मालता भद्रानइं घरि आवी आए ॥२॥

सेठांणी कहै नांम शिष्य तुह्मे केहना स्यै काजि आव्या इहां ए ।
आर्य स्वहस्तिना सीस आह्म छों श्राविका उद्यानैं गुरु छै तिहां ए ॥३॥

मांगु छों तुह्म पासि रहवा थांनिक प्रासुक होइ तो दीजीइं ए ।
वाहन साल विशाल आपी भावस्यों आवी ईहां रही जीइं ए ॥४॥

सपरिवार सुविचार आचारिज तिहां आवी सुखि रहीइं तिहां ए ।
नलनी गुलम अधेंन पहली निस समइं गुणैं आचारिज एकदा ए ॥५॥

भद्रा सुत गुणवंत सुखीय सरूपम रूपवंत रलियामणो ए ।
अवंती सुकुमाल सप्तम भूमीका पांम्यो सुख विलसैं घणो ए ॥६॥

॥ दूहा ॥

अन्त बहु विलाप करि मात त्रीय घरि आवी मन भंगि ।
तजसी घर सुत नीपरि जिम कंचली भुयंग ॥१॥

॥ ढाल १२ ॥ सुणि बहनी प्रीउड़ो परदेसी ॥ ए देशी ॥

भद्रा घरि आवी इम भाखइं गरभवती घरि राखै रे ।
अन्य वधू पोतै गुरु साखि व्रत अमृत रस चाखै रे ॥१॥

भद्रा घरि आवी इम भाखैं ॥ आंकणी० ॥

पंच महाव्रत सूधा पालै दूखण सगला टालै रे ।
दुक्करन पकरि काया गालै कलिमल पंक पखालै रे ॥१॥

अंतकालि अणसण सहु लेई तजि उदारिक देही रे।
देवलोकना सुख लहेई चारित्रना फल एही रे ॥३॥भद्रा०॥

केडें गरभवती सुत जायो देवल तेण करायो जी।
पिता मरण री ठांमि सुहायो महाकाल कहायो जी ॥४॥भद्रा०॥

पासजिणेसर प्रतिमा थापी कुमति लता जड़ कापी जी।
कीरति जेहनी सगलै व्यापी सूरिज जेम प्रतापी जी ॥५॥भद्रा०॥

संवत सतरैं इकतालीसैं सुकल आसाढ कहीजैं जी।
राजनगर तिथि आठिमहीसैं कीध सज्झाय जगीसैं जी ॥६॥भद्रा०॥

अवंती सुकमाल मल्हावैं मधुर स्वरैं गुण गावैं जी।
ते जिनराज तयैं वडदावैं शांतिहरष सुख पावैं जी ॥७॥भद्रा०॥

भद्रा घर आवी इम भाखइं।

पुष्पिका इति श्री अवंती सुकमाल महामुनि चोपई ॥ संपूर्ण ॥ संवत् १७५१ वर्षे मिती भाद्रवा वदि ७ दिने बुधवासरे ॥ मुनि तेजसागर पठनार्थं ॥ खरवा मध्ये।

x x x

426/4561 आर्द्रकुमार–रास

॥ दूहा ॥

प्रारम्भ लकल सूरासर जेहना, भावइ पूजइ पाय।
रीषभादीक चुवीस हूँ, ते प्रणमूं जीनराय ॥१॥

वली प्रणमूं श्रुत देवतां, पागेश्वरी वीक्षात (विख्यात)।
आद्रकुमर रषइ गावतां, मुझ मुखइ वसयो मात ॥२॥

मांणीकसायर मुनी वरु, मुझ गरु मननइ कोडि ।
सांनधइ करजो सष्पनी, कहुं छुं छइ कर जोडइ ॥३॥

श्री सो हम स्वांमी कहूं, जंबू आगल सार ।
आद्रकुमर ऋष इनु भलु, सूमडां गइ अधीकार ॥४॥

ते हूं आंणी सती हांथ की, वृतइ थकी सू वीसेष ।
उपदेस चंतांमणइ प्रमुख, ग्रंथ चरीत्र सवि देषइ ॥५॥

चारीत्र लेइ नइ चतुर, मनथी शल्प वीकार ।
मूं कीनइ पालु भवीक, संयम नर तीचार ॥६॥

भाव सल्प पहलइ भवइ, आद्रकुमर नइ जीवइ ।
जु रापु तुं तुथउ म्लेछ, समुद्र मध्य दीवइ ॥७॥

जीन प्रतीमा दरसण थका, जाती समरण जांणइ ।
प्रतीबोधु चारीत्र लीउ, अरथ सरु नीरवांणइ ॥८॥

तास चरीत्र सूणयो भवीक, एक चीतइ अभीरांम ।
पहलु पूरव भव थकी, मांडी कहूं सुभ कांमइ ॥९॥

॥ राग सारंग मल्हार ॥

जंबूद्वीपना भरत मां अलका नइ अवतारो रे ।
नयर वसंत पुर नीरमलु भू रमणी उर इहारो रे ॥

अन्त हीत सुख मोक्ष तणी छइ दाता अरीहंत प्रतीमा एम ।
जीन प्रतीमा दरसण थी बूझउ जु उ ऐह आद्रक जेम रे ॥भवी०॥

श्री सूडांगसूत्रनी वृतइ, ए अधीकार वरवांणु ।
वली उपदेस चंतामणइ, मांथी मइ ईहां वीस्तर आंणु रे ॥भवी०॥

गाथा बंध चरीत्र पणइ एह जु इम कहु अधीकार ।
त्रसूं पंथेनी री करु चुकस सरस घणु सुखकार रे ।।भवी०।।

रसना रसि उछ्रं अधीकूं तेह थीजे कहुं होई ।
मीछा दूकड़ संघ नइ साषइ दूं कर जोडी दोई रे ।।भवी०।।

च्यार सइ नइ एकावन एह नु ग्रंथागर गुणई कींधु ।
साधू तणू गुण गातां सूभ परि सकल मनोरथ कीधु रे ।।भवी०।।

अचल गछ गरुया गछ नायक श्री गुणरत्न सूरींद ।
ब्रह्मचारी मांहई चूडांमणइ अभीनव जंबू मूणंद रे ।।भवी०।।

क्षमारत्न सूरी तस पाटइ सोहइ जीम दीणंद ।
नांम तसूं परणांमइ दीठइ नयणे अमीरस बंद रे ।।भवी०।।

श्री गजसागर सूरि तणा सष्य पंडीत अधिक प्रतापी ।
ललीतसागर बुध लावण्य धारी जगि जंबू कीरतइ व्यापी रे ।।भवी०।।

प्रथम सीष्य मुंनी मांणीकसागर तेंह तणा मतइमंद ।
ते गुरनइ सपसांइ गाउ आद्रक रषइ गुणवंत रे ।।भवी०।।

सत्तर सत्तावीसइ–चैतर सूदइ तेरस ससी वारइ ।
पूरवा फाल्गुनी ध्वज योगइ लघू वटप द्रम झारइ रे ।।भवी०।।

ए ऊगणीममीं ढाल धन्यासीइ **ग्यांनसागर** कही नेहइ ।
धवल धीगगुडी नीसांन घइ दीनप्रतइ दुलति गहइ रे ।।३०१।।

पुष्पिका इति श्री आद्रकुमार रास संपूर्ण ।। संवत १७२९ वर्षे श्रावण १३ शनौ । जांगीरपुरेउ श्री जयसुन्दर । तत् शष्य पं. रत्नवजय (विजय) लपीकृता ।। शुभं भवतु । कल्यांणमस्तु ।।श्री । श्री ।। श्री ।।

x x x

446/4463 कलावती–चरित्र

आरम्भ

वीर जिणेसर पय नमी समरी गोयमसामि जी ।
चरित गावऊ कलावती तणउ शीलगुणगरि अभिराम जी ।।१।।

भवीयण पालउ शील निर्म्मलउ जिम लहउं मुगति सुठाण रे ।
कलावती दोइ कर आवीया जोवउ शील प्रमाण रे ।।२।।

अन्त

पनर असीय वरसमि मगसिर सुदि पंचमि ।
थंभ तीरथ भलइ ए गुरु दिन निम्मंलइ ए ।।८८।।

कोरंटगच्छ नन सूरि सुपट्ट श्री कक्कसूरि ।
तास सीस इम भणइए कुलरी आपणइ ए ।।८९।।

भुवनकीर्ति थिरथाइ कलावती सती गुण गाइ ।
दुःख दालिद्र टलइ ए संपद सवि मिलइ ए ।।

जे पभणइ मनरंग विलसइ सुख ते अंग ।
साचलसां निधि करइए कवि मनि गह गहइ ए ।। १००।।

पुष्पिका

इति कलावतीचरित्रं समाप्तम् । शुमं भवतु कल्याणमस्तु ।।

x x x

624/3757 शत्रुञ्जयरास

।।६०।। श्रीजिनाय नमः ।।

आरम्भ

विश्वनाथ चरणे नमुं, व्यक्त रूप अरिहंत ।
युगादी सयोगींद्र प्रभु, विस्व स्थित विरंचन ।।१।।

जिन चक्री लषमी धणी, चामी कर द्युति भंति ।
स्तवतां शिव संपति मिलइ, शांतिकरण श्री शांति ॥२॥

जरासिंध प्रताप हर, अंदोलितं दैत्यारि ।
मध्यउ दर्प्प कंदर्पउ, नमुं नेमि ब्रह्मचार ॥३॥

जास दृष्टि अमृत भरी, अहि अहि ईस्वर कीध ।
मुक्त ताप संताप थी, पार्श्वनाथ सुप्रसीध ॥४॥

संसय सूरपति टालिवा मेरु कंपाव्यउ वीर ।
त्रिधा वीर नमीयइ चरण, गुणसाय रंग भीर ॥५॥

मुक्त श्रिय पुंडरीक सम, श्रेय श्रिय पुंडरीक ।
पुंडरीक सिररत्न सम, नमुं तेह पुंडरीक ॥६॥

अन्त श्री हुता अविरती ते विरती थया विरती ते थया साध ।
समता सागर आगर गुण तणा टाली भव आबाध ॥११॥

श्री एहवीं दीधी जिनवर देशना विमला चलथी रे ताम ।
उतरीया सुर नर तीरथ नमी एहु ता निज निज ठाम ॥१२॥

श्री श्री शत्रुंजय महिमा कथन थी पुन्य थयई मुझ जेह ।
बोधि बीज निर्मलहु अउ माहरउ गमण मिथ्याचनि रेह ॥१३॥

श्रीऊणउ अधिकउ कह्यउ प्रमाद थी कीयउ उ द्यूत प्रकास ।
थीअउ श्रीजिनवरना ध्यान थी मिछा दुक्कड तास ॥१४॥

श्री मिथ्या रजनी हर अरि विजय थी उत्कट थयउ प्रताप ।
निज गो बोधित भव्य कमल वरो सुजस जगत थयो व्यापि ॥१५॥

श्री उन्मीलित अंश्रू ज्वल जेहना दिनकर आदि जिणंद ।
सिद्धाचल पर्वत उपरि रह्यउ द्यउ श्रीसंघ आणंद ॥१६॥

श्री यदुवंश विभूषण दिनमणी शिलादित्य गिरि स्वामि ।
सूरि धनेश्वर पासि करावीयउ ग्रंथ महातम नाम ॥१७॥

श्री सज्जन विद्वद्जन मनरंजणउ कविकुल माहि प्रसीध ।
विनयचंद्र निर्मल गुणमालिका हीयडइ वासउ कीध ।।१८।।

श्रीमुझनइ उद्यम तिणइं करावीयउ रास रचउ श्रीकार ।
श्री शत्रुंजय महातम ग्रंथ नउ लोक भणी उपगार ।।१९।।

श्रीसंवत सतरइ सइ पंचावनइ पांचिम वदि आसाढ़ ।
रास संपूरण बुधवारंइ थयउ मइं कीधउ करि गाढ ।।२०।।

श्री श्रीषरतरगच्छ गयण रयण समउ श्री जिनचंदसूरिंद ।
जास प्रताप जगत माँ विस्तरयउ दरसण होइ आणंद ।।२१।।

श्री वाचक सोमगणि मणि सोभता जाणइ सहु संसार ।
शांतिहरष गणि वाचक तेहना शिष्य बहु परिवार ।।२२।।

श्री तास सीस जिनहरष धरी कीधउ पूरण रास ।
नवमइ खंडइ ढालइ ग्यारमीए थई पूरण तास ।।२३।।

श्री नवखंडे ए रास सुहामणउ दोइ सइ सत्तर ढाल ।
श्री पाटण माहि जिन सुपसायथी रचीउयउ रास रसाल ।।२४।।

पुष्पिका श्री इति जिनहरष विरचिते श्री शत्रुंजय महातीर्थ महात्म्य चतुष्पद्यां श्री पार्श्वनाथादि महापुरुष सच्चरित्र वर्णनो नाम नवमःखंडः समाप्तः प्रथम खंडे ११०६ द्वितीय खंडे ११७४ तृतीये खंडे ११७६ चतुर्थ खंडे ५७६ पंचम खंडे ६९६ षष्ट खंडे ११०४ सप्तम खंडे १३४४ अष्टम खंडे ९३६ नवमखंडे ४५६ सर्वगाथा मीलनें ६४६७ ग्रंथाग्रंथ ८५७८ ।।छ ः।।

संवत १७५८ वर्षे फाल्गुण सुदि ५ शुक्रे श्रीपत्तननगरे पंड्या त्र्यंबिकेश्वरेण लिखितं ।। इति भद्रं ।।

x x x

895/4231/गजसुकुमाल-सज्झाय

प्रारम्भ

श्री गज सुषमाल कीसे जी ।।
गज सुषमाल देवकीनंदन कीयउ तणो भाइ ।
लाड कोउ करन हुलराए आसापुरी माई ।
करी जग कुमाय न कीद
तग दीयो संसार समुद्र उदभली आइ ।।१।।

नेम तणा आगम सांभलीन वांदण चाल भाइ ।
सोमा सुंदरीयं रूप अनोपम देषी दली आइ ।।करी०२।।

कीधी सगाइ मेली अतेवर जिण बाद जाइ ।
वाणी सुणी न भीज गइ जब संजम चित लगइ ।।३।।

तात मात बंधव न पुछी समत्कति दिढताइ ।
भर जोबन सोमा सुंदर छिन म छिटकाइ ।।करी०४।।

अन्त

इह रासए कद लेजासा जरा जीरण थाइ ।
हस्ती बठा आप लेइ एक मेल घर मइ ।।करी०१८।।

पछ जाइ वादीया ने जीणसर नहीं दीषनीज भाइ ।
किहीं मुझ बंधव कह जीणेसर मुक्त गढ माइ ।।करी०१९।।

काल रम काम कीयो सिठ किम करमुज भाइ ।
जिम डोकरन साह जदायो तिम कीधो मुनीराइ ।।करी०२०।।

केवल लही न मुक्ति बिराज्या घर भीतर षाइ ।
रिष चोथमल जी कह तिण मुनिवर ने नित समरो भाइ।।करी०२१।।

संवत १८ बरस अठावन सावण मास माइ ।
बद सातम दिन गढ़ जोधाण हुस करीन गाइ ।।करी०२२।।

x x x

पुष्पिका इति श्रीगजसुषमाल नी सिज्झाइ संपूरण आरज्या सुपांज लषतं। संमत १८६०॥

1095/3541/ दशवैकालिक दशाध्ययन-गीत

प्रारम्भ ॥६०॥ श्रीजिनाय नमः ॥

सो सामी अरिहंत आयउ ज...गुरु बीच पहनी जाति ॥
मंगलीक महिमानि लोजी धरम समउ नही कोइ।
धरमइ सुर सेवा करइ जी धरमइ सिव सुख होइ ॥१॥

सो भागी भवियण सांभलिज्यो सहु कोइ ॥ आकरणी ॥
जीव दया नित पालवी जी संजम सतरइ काइ कार।
बारे लेदे तप तपइ जी धरम तणो ए सार ॥२॥

सोरठा

भमरउ जिम रस फूलनउ जी थोडउ सउ ले जाइ।
संतोषइ निज आतमा जी पीडा न करइ काइ ॥३॥

अन्त मुनिवर भमरा सारिषा जी कहिया सूत्र मझारि।
ताढउ नीर सपषनी जी अलप लीयइ आहार ॥४॥

ऊंच नीच कुल गोचरी जी करता सुभ परिणाम।
किण ही नइ दुष विण दीयइ जी सारइ आतम काम ॥५॥

चरण करण गुण आगिला जी साधु दया प्रतिपाल।
चरण कमल हरषइ सदा जी वंदी जइ त्रिणकाल ॥६॥

दशवैकालिकसूत्रनउ जी पहिलो ए अध्ययन।
द्रुम पुष्फी नामइ भलो जी सांभलतां सुख चयन ॥७॥

वयरागी थयउ पहली ढाल ।।

दशवैकालिकसूत्रना रे दश अध्ययन विचार ।

वेटइ मनक भणी कीया रे शि...भव गण धारो रे ।।१।।

भवियण सांभलउ आंकणी ।।

पहली गाथा सात सइ रे मुनि वरनउ आचार ।

पालइ वलि जे सांभलइ रे ते पागइ भवपारो रे ।। भवि०।।

एहना अरथ घणा अछइ रे पारन लालइ कोइ ।

साधु तिके सुषीया हुस्पइरे चलिस्यइ प्रवचन जोई रे ।।३।।

भविय० ।।

खरतरगछ परंपरा रे गछनायक जिनराज ।

तेहना शिष्य सुयश घणउ रे मानविजय सिरताजो रे ।।४।। भविय०।।

तासु सीस वाचक कहइ रे कमलहरष सुपकार ।

दश अध्ययन तणा कीया रे गीत दशे सुविचारो रे ।।५।। भविय०।।

संवत सतरइ सइ भलइ रे वरसइ इण त्रेवीस ।

श्री जिनचंद सुरिंदनइ रे राजइ अधि धु जगीसोरे ।।६।। भवि०।।

सोझित नगर सुहामणइ रे धरननाथ सुपसाय ।

गीत कीया जांण्यातिसारे सुणतां मंगल थायो रे ।।७।। भविय०।।

भणइ गुणइ जे सांभलइ रे लहइ विद्या सुविलास ।

वाधइ महिमा दिन दिनइरे पूगइ वंछित आसो रे ।।८।। भवियण सांभलउ०।।

पुष्पिका इति श्री दशवैकालिक दश अध्ययन गीतानि समाप्तानि ।।
कृतानि वाचक कमलहर्षेण । साध्वी महिमा सिद्धि प्रार्थनया ।
परोपगार पवन कृते च ।। वाच्यमानाश्चिरंनन्दन्तु चंद्रार्क्कम् ।।
लिखितानि पण्डित विद्याविलासेन ।। संवत १७७३ वर्षे श्री
सोभित मध्ये ।। भट्टारक श्री जिनचंद्रसूरि विजयराज्ये ।।
शुभंभवतु ।

आयु (१) वित्तं (२) सौख्यं (३) च विद्या (४) विभव (५) एव च ।
पंचानां मारकत्वेन पंचमारक उच्यते ।।

x x x

परिशिष्ट–२

कतिपय 'प' चिह्नित ग्रंथों का विवरण

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता	पत्रांक
		91/5381	
1	सूक्ष्म ब्रजलीला वर्णन	—	खरडा
2	रास के पद	—	—
3	आशीर्वाद वर्णन	—	—
4	कृष्ण शृंगार वर्णन	—	—
5	गोवर्द्धन–राधा कुण्ड वर्णन	—	—
6	संकेत वर्णन	—	—
7	वृन्दावन ग्राम लीला	—	—
		129/5301 (10)	
1	पद–संग्रह	सूरदास	63
2	,,	शिरोमणि	63
3	कवित्त	पोकर कवि	64–65
4	दोहा–संग्रह	गिरधारी	65–66
5	कवित्त–संग्रह	अखमाल	67–70
6	धमाल	रंग	70–71
7	शृंगारिक दोहे	—	72
8	हिंडोले के कवित्त	—	73–75
9	दोहा–संग्रह	कविसर	76
10	कवित्त	किसोर	76–80
11	भैरव का कवित्त	अखमाल	80–83
12	दोहा कवित्त–संग्रह	—	83
13	कवित्त	दयाराम	84–85

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता	पत्रांक
14	कवित्त	गंग	86–93
15	,,	दीप	93–94
16	संग्रामसिंह जी का दूहा	—	95
17	कवित्त–संग्रह	खानखाना, सूरदास	96–98
18	हरिबोध चिंतामणि	—	98
19	मंगलाष्टक (संस्कृत)	—	99
20	मोरध्वज	लालदास	99–100
21	खिडिया गरीवदास की निसांणी	—	101–102
22	कवित्त–संग्रह	गिरधारी, मतंग, गद	102–109
23	हिंडोले (मल्हार–राग)	नवरंग, कृष्णदास	109–113
24	शतरंज का दाव	खेम	113-114
25	कवित्त–संग्रह	गिरधर, तुरसी	115–116
26	,,	रसखान	117–121
27	श्रृंगारिक कवित्त		121–125
28	नीपट रा कवित्त	—	125–127
29	बसंत के कवित्त	—	127–128
30	रेखता		129
31	कवित्त	आलम	129–130

130/5340

1	नागदमण के कवित्त	—	1–4
2	स्फुट कवित्त	—	5–8
3	जैनपद-संग्रह		1–2 पत्रांकन स्वतंत्र
4	षड्द्रव्यवर्णन		2–3
5	नवतत्त्ववर्णन		3–3
6	ज्ञान के दोहे	—	3–4
7	धमाल (रचना वि.सं. 1757)	ऋषि दीप	5
8	स्तवन (रचना व.सं.1722)	शिष्य जिनचदसूरि	6

क्रमांक ग्रन्थ नाम	कर्त्ता	पत्रांक
9 ख्याल		6
10 दोहा-संग्रह		7–9
11 गुरु-वर्णन		9
12 धमाल	जनलाल	10
13 स्फुट दोहा		11
14 स्फुट ज्योतिष पत्र		11–13
15 पद-संग्रह		14–15
16 नायिका भेद वर्णन		16–37
17 बीजक-विधि		38–40

175/5341 (24)

1 गुरु-स्तुति	भूधर	316–319
2 विनती		319–322
3 भंवरा को गीत		322–323
4 राग पद-संग्रह		323–324
5 पद-रेखता		324–325
6 स्तुति		326–328

900/5378 (1)

1 शीतलनाथ का गीत	सौभाग्य	1–1
2 श्रेयांस का गीत		1–1
3 वासुपूज्य ,,		1–2
4 विमलजी का गीत		2–2
5 अनन्त गीत		2–2
6 धर्मजी का गीत		2–3
7 शांतिनाथ-गीत		3–3
8 कुंथुनाथ-गीत		3–3

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता	पत्रांक

901/5378 (45) B

1	नेम षड्ऋतु गीत	ऋषभसागर शिष्य ऋद्धिसागर	59–60
2	स्तवन		60–62
3	पार्श्वगीत	लक्ष्मीवल्लभ	62–62
4	शीतल जिनेश्वर गीत	ऋषभसागर शिष्य ऋद्धिसागर	63–63
5	ऋषभ–गीत	विवेकविजय	63–64

908/5399 (2)

1	गीत	खेमराज	8–8
2	चन्दन बाला गीत		8–9
3	गुरु–गीत	मेरुगणि	9–9
4	मेघकुमार चौढालियो गीत		9–9
5	कलिकाल चेष्टा गीत		10–12
6	पुण्यफल-गीत	कर्मसागर का शिष्य	12–12
7	कायोत्सर्गना दोष–स्तवन	पासचन्द	13–13
8	गज सुकुमाल गीत	सेवक नीबू	14–14
9	बाहुबलि-गीत	सेवक ,,	14–15
10	वैराग्य-गीत	लावण्यसमय	15–15
11	,,	पुण्यलब्धि	15–16
12	कयवन्ना धवल	दयाल कवि	16–17
13	वैराग्य-गीत		17–18
14	,,		18–18
15	शत्रुंजय-गीत	शान्तिसूरि	18–19
16	मृगरथ राजा गीत		19–20
17	आषाढभूति ऋषीश्वर गीत	धर्मरुचि	20–22
18	पार्श्वनाथ–विनती		22–23

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता	पत्रांक
	1640/5319 (4)		
1	कमंदा की सज्झाय	ऋषभसागर	11–11
2	क्षामणा की सज्झाय	,,	11–12
3	वैर स्वामी–सज्झाय	ऋद्धिसागर	12–12
4	साधारण जिन–स्तवन	,,	13–13
5	नेमि-राजुल-गीत	ऋषभसागर	14–15
6	सज्झाय (र.का. 1675)	शान्तिकुशल	15–16
7	आश्रव पर–सज्झाय		16–17
8	स्फुट दोहे		18–18
9	नेमि-गीत	विनयविजय	19–20
10	सज्झाय	विजयदेव	20–20
11	,,	राजसमुद्र	20–20
	1641/5319 (7)		
1	श्रेयांस-गीत	ऋषभसागर	23–23
2	संभवनाथ–गीत	,,	23–24
3	जीव ऊपरि–सज्झाय	राजसमुद्र	25–25
4	शिष्या–सज्झाय	लावण्यसमय	25–25
5	जीव-काया–सज्झाय		25–26
6	इला–पुत्र–सज्झाय	लब्धिविजय	26–26
7	जीभ ऊपरि–सज्झाय	कल्याण शिष्य चरित्रसागर	26–27

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता	पत्रांक
8	उपदेश उपशम–सज्झाय	धन्यविजय शिष्य आनंदविजय	27–28
9	स्थूलिभद्र–सज्झाय	लब्धिविजय	28–29
10	हियाली–सज्झाय	ऋषभसागर	29–29
11	शील–सज्झाय	सिद्धविजय	29–30
12	सज्झाय	लालविजय शिष्य शुभविजय	30–31
13	सज्झाय	कल्याण शिष्य चरित्रसागर	31–32
14	मधुविंदु–सज्झाय	चरणप्रमोद	32–32
15	देह ऊपरि उपदेश की सज्झाय	सहजसुन्दर	33–33
16	सज्झाय		33–34
17	विजयप्रभुसूरि–सज्झाय	कल्याणसुन्दर शिष्य चारित्रसागर	34–34
18	सीता री सज्झाय		34–35
19	जम्बूस्वामी-सज्झाय		35–35
20	पद्मावती–आलोयणा	समयसुन्दर	35–36
21	सज्झाय		37–38
22	पार्श्वजिनेश्वर-गीत	ऋषभसागर	38–38
23	कुंथुनाथ गीत	,,	39–39
24	समता-ममता-सज्झाय		39–41
25	अरणक मुनि-सज्झाय	रूपविजय	43–43
26	पार्श्वनाथ–स्तवन	ऋषभसागर	43–43
27	चिन्तामणि पार्श्वनाथ-स्तवन	,,	43–43
28	हियाली–सज्झाय	,,	44–44
29	नाममाला		44–44
30	स्तुति		44–45
31	शत्रुंजय–स्तुति		45–45
32	मोह–सज्झाय	जिनराज	45–46

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता	पत्रांक
	1777/5337		
1	कनककीर्त्ति के पद		1–5
2	विनती	दीप	6–9
3	कुमति-सुमति को झगड़ो	विनोदीलाल	9–12
4	पंच बधावा		13–13
5	स्फुट जैन पद		14–15
6	गुरां की जखड़ी		16–18
7	भगवती आदि के पद		18–24
8	मुनीश्वर–स्तुति		24–28

कर्त्तानामानुक्रमणिका

[परिशिष्ट-3]

(च)

(छ)

(ज)
